Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज
Published from Ranchi
Ranchi ● Saturday, 17 February 2024 ● Year : 02 ● Issue : 31 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

समय आए बिना वज्रपात होने पर भी मृत्यु नहीं होती और समय आ जाने पर पुष्प भी प्राणी के प्राण ले लेता है।

कल्हण

अफवाह फैलाने वाले शख्स पर भड़कीं...

SHARE

सेंसेक्स	:	72,426.64
निफ्टी	:	22,040.70

SARAFA

सोना	:	5,870
चांदी	:	77.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

मणिपुर में डीसी व एसपी कार्यालय में लगाई आग तीन की मौत

IMPHAL : मणिपुर के चुराचांदपुर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सामने हिंसक भीड़ के साथ हुई झड़प में तीन प्रदर्शनकारियों की जान चली गई और 35 से अधिक अन्य लोग घायल हो गए। सशस्त्र उग्रवादियों के साथ मिलकर निर्दोष नागरिकों पर गोलीबारी करने में कथित रूप से शामिल एक पुलिस हेड कांस्टेबल के निलंबन के बाद शुरू हुआ यह विरोध प्रदर्शन हिंसा में बदल गया। इस दौरान हिंसा पर आमादा भीड़ ने चुराचांदपुर में उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक कार्यालयों को आग के हवाले कर दिया। साथ ही दोनों दफ्तरों पर लगे राष्ट्रीय ध्वज फाड़ दिए। उल्लेखनीय है कि चुराचांदपुर में लगभग 400 लोगों ने गुरुवार रात पुलिस अधीक्षक कार्यालय को निशाना बनाया।

दिल्ली में एक फैक्ट्री में लगी आग, 11 की मौत

NEW DELHI : राजधानी दिल्ली से भीषण आग लगने की खबर आई। हालांकि आग पर काबू पा लिया गया है लेकिन आग से बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचा है।अग्निशमन विभाग ने बताया कि दो पेंट और केमिकल गोदामों में आग लगने से 11 लोगों की मौत हो गई जबकि 4 घायल हो गए। मृतकों को बाबू जगजीवन राम अस्पताल ले जाया गया है। घायलों को राजा हरिश्चंद्र अस्पताल ले जाया गया है। मृत लोगों की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। आग लगने की खबर जैसे ही दमकल विभाग को मिली, 22 गाड़ियां आग पर काबू पाने के लिए पहुंचीं। हादसे में 11 लोगों की मौत हुई है जिनकी पहचान नहीं हो पा रही है। बताया जा रहा है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। आग लगने के बाद इलाके में हंगामा मच गया है। दिल्ली पुलिस की ओर से जो जानकारी दी गई है उसके अनुसार, आग लगने से पहले एक विस्फोट हुआ था, जो संभवत: फैक्ट्री में रखे कैमिकल की वजह से हुआ।

कांग्रेस के फ्रीज खातों से रोक हटी

NEW DELHI : इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल ने शुक्रवार को दोपहर 12.30 बजे कांग्रेस के फ्रीज खातों पर लगी रोक हटा दी है। एक घंटे पहले कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि पार्टी के बैंक खातों को फ्रीज कर दिया गया। कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा था कि इनकम टैक्स ने यूथ कांग्रेस और कांग्रेस पार्टी से 210 करोड़ रुपए की रिकवरी मांगी है।माकन ने कहा- हमें गुरुवार को जानकारी मिली कि बैंकों ने पार्टी के द्वारा जारी किए गए चेक रोक दिए हैं। वे हमारे चेक क्लियर नहीं कर रहे। कांग्रेस पार्टी के खाते भी फ्रीज कर दिए गए हैं।

चंपाई सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार

जेएमएम के पांच व कांग्रेस के तीन विधायक मंत्री बने, राज्यपाल ने दिलाई पद व गोपनीयता की शपथ, सीता सारेने नहीं बन सकीं मंत्री

कैबिनेट में शामिल हुए हेमंत के भाई बसंत समेत दो नए चेहरे, छह पुराने को मिली जगह

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में चंपाई सोरेन कैबिनेट विस्तार में दो नए चेहरों को जगह दी गयी है। शेष पुराने चेहरों पर ही पार्टी ने भरोसा जताया। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने नये चेहरों में बसंत सोरेन व दीपक बिरुआ को शपथ दिलायी। पुराने चेहरों में डॉ रामेश्वर उरांव, बन्ना गुप्ता, बादल पत्रलेख, बेबी देवी, मिथिलेश कुमार ठाकुर एवं हफीजुल हसन को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। बता दें कि दो जनवरी को सीएम चंपाई सोरेन के साथ मंत्री के रूप में आलमगीर आलम एवं सत्यानंद भोक्ता ने शपथ ली थी।

झारखंड में शुक्रवार को चंपई कैबिनेट का विस्तार और मंत्रियों के विभागों का बंटवारा हुआ। गृह विभाग समेत 3 विभाग मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने अपने पास रखें। इसके अलावा जो विभाग मंत्रियों को नहीं दिए हैं, वे भी उनके पास हैं। बसंत सोरेन को पथ-भवन निर्माण दिया गया है। इसके पहले राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने राजभवन में 8 विधायकों को मंत्री पद की शपथ दिलाई। इनमें जेएमएम के 5 और कांग्रेस के 3 विधायक शामिल हैं। हेमंत सोरेन के छोटे भाई बसंत सोरेन को भी मंत्री बनाया गया है। हेमंत की भाभी सीता सोरेन के नाम की भी चर्चा थी, लेकिन वे मंत्री नहीं बन पाईं। आठ में से 6 मंत्री पहले भी हेमंत सोरेन की सरकार में मंत्री रह चुके हैं। सिर्फ बसंत सोरेन और दीपक बिरुआ को पहली बार मंत्री बनाया गया है। अंतिम समय में कांग्रेस विधायक बैद्यनाथ राम का नाम कट गया। अब चंपई सरकार में मुख्यमंत्री सहित 11 मंत्री हो गए हैं। हेमंत सोरेन की सरकार में भी मुख्यमंत्री समेत 11 मंत्री थे।

शुक्रवार को शपथ लेने के बाद राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन के साथ सीएम चंपाई सोरेन, मंत्री आलमगीर आलम, मंत्री सत्यानंद भोक्ता व अन्य नए मंत्री।

नये चेहरों में दीपक बिरुआ व बसंत सोरेन ने ली शपथ

चंपाई सोरेन कैबिनेट में दो नए चेहरों को जगह दी गयी है। इनमें बसंत सोरेन व दीपक बिरुआ शामिल हैं। बसंत सोरेन दिशोम गुरु शिबू सोरेन के पुत्र व पूर्व सीएम हेमंत सोरेन के छोटे भाई हैं।

चंपाई सरकार में भी मंत्री बने मिथिलेश

तत्कालीन हेमंत सोरेन सरकार की कैबिनेट में पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री रहे गढ़वा के विधायक मिथिलेश कुमार ठाकुर को चंपाई सोरेन कैबिनेट में भी जगह दी गयी है। इन्हें दोबारा मंत्री बनाया गया है। मिथिलेश कुमार ठाकुर झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता हैं। राजभवन में इन्होंने मंत्री पद की शपथ ली। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने इन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

दोबारा मिनिस्टर बनीं विधायक बेबी देवी

बेबी देवी डुमरी की विधायक और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के कद्दावर नेता रहे जगरनाथ महतो की पत्नी हैं। चंपाई सोरेन सरकार में उन्होंने दोबारा मंत्री पद की शपथ ली। इससे पहले वे तत्कालीन हेमंत सोरेन सरकार में मद्य निषेध मंत्री थीं। झारखंड के दिवंगत मंत्री जगरनाथ महतो ने निधन के बाद उन्हें पहली बार मंत्री बनाया गया था।

डॉ रामेश्वर, बन्ना व बादल ने भी ली मंत्री पद की शपथ

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव को चंपाई सोरेन कैबिनेट में भी जगह दी गयी है। इन्हें दोबारा मंत्री बनाया गया। ये हेमंत सोरेन कैबिनेट में भी मंत्री थे। पूर्व आईपीएस रामेश्व उरांव को नयी कैबिनेट में भी जगह दी गयी है।

झारखंड की तत्कालीन हेमंत सोरेन सरकार में स्वास्थ्य मंत्री रहे बन्ना गुप्ता और कृषि मंत्री रहे बादल पत्रलेख ने चंपाई सोरेन सरकार में भी मंत्री के रूप में शपथ ली। इन्हें दोबारा मंत्री बनाया गया है। ये दोनों कांग्रेस विधायक हैं।

हफीजुल हसन ने उर्दू में ली मंत्री पद की शपथ

झारखंड मुक्ति मोर्चा के कोटे से हफीजुल हसन को भी मंत्री बनाया गया। इन्होंने दोबारा मंत्री पद की शपथ ली। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने इन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। हफीजुल हसन तत्कालीन हेमंत सोरेन सरकार की कैबिनेट में खेल मंत्री थे। उन्होंने उर्दू में शपथ ली।

सबसे पहले डॉ रामेश्वर उरांव ने शपथ ली

चंपाई सोरेन के आठ मंत्रियों को राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने राजभवन में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। सबसे पहले डॉ रामेश्वर उरांव ने शपथ ली। ये हेमंत सोरेन की तत्कालीन सरकार में भी कैबिनेट मंत्री रहे थे। इनके अलावा बन्ना गुप्ता, बादल पत्रलेख, बेबी देवी, मिथिलेश कुमार ठाकुर एवं हफीजुल हसन भी तत्कालीन हेमंत सरकार में मंत्री रहे थे। इन्हें भी चंपाई सरकार में मंत्री पद की शपथ दिलायी गयी है। ये सभी छह पुराने चेहरों को रिपीट किया गया है।

अवैध खनन मामले में सीबीआई को झटका

झारखंड हाईकोर्ट ने फैसला रखा सुरक्षित

PHOTON NEWS RANCHI : साहिबगंज जिले के नींबू पहाड़ अवैध खनन मामले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को बड़ा झटका लगा है। राज्य सरकार के वकील कपिल सिब्बल ने ऑनलाइन बहस की और अपनी दलील में सीबीआई की जांच को अवैध करार दिया। दोनों पक्षों का फैसला सुनने के बाद झारखंड हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया। शुक्रवार को जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की अदालत में मामले की सुनवाई हुई, जिसमें सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने झारखंड सरकार का पक्ष रखा। उन्होंने झारखंड हाईकोर्ट को बताया कि सीबीआई ने बिना सरकार की अनुमति के जांच शुरू की। उन्होंने यह भी बताया कि किसी कोर्ट ने भी सीबीआई को जांच करने का आदेश नहीं दिया था। इसलिए इस पर रोक लगाई जाए।

- कपिल सिब्बल ने रखा झारखंड सरकार का पक्ष
- सीबीआई जांच पर झारखंड हाईकोर्ट लगा चुकी है रोक
- सीबीआई की याचिका को खारिज कर चुका है कोर्ट

प्रेम जाल में फंसाकर छात्रा का अपहरण

RANCHI : नामकुम थाना क्षेत्र के चायबगान इलाके में रहने वाली एक नाबालिग का अपहरण करने का मामला थाना में पहुंचा। छात्रा की मां ने नामकुम थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। आवेदन के अनुसार नाबालिग को बुंडू थाना के गोसाईडीह निवासी जगरनाथ महली उर्फ सुनिल (44), पिता स्व महिम बास महली ने अपहरण किया है। आरोपित ने नाबालिग को 7 फरवरी को फोन कर अपने पास बुलाया था। मालूम हो कि जगरनाथ महली ने बरगांवा स्थित स्कूल आने-जाने के क्रम में छेड़छाड़ करने के उपरांत उसे अपने प्रेम जाल फंसा लिया। और बाद से ही वह छात्रा से घर मोबाइल पर चोरी से बता करना शुरू कर संपर्क कर लिया। एक सप्ताह पूर्व में परिजनों को छात्रा को मोबाइल बात करता देख उससे पुछताछ के क्रम में उसने जगरनाथ महली के से बात करने की स्वीकार करते हुए कहा कि मुलाकात करने की बात भी बताई,जिसके बाद परिजनों ने जगरनाथ महली समझाते हुए चेतवानी दी, और दोबारा गलती नहीं करने का लिखित आश्वासन दिया।

नगड़ी में मूर्ति विसर्जन जुलूस पर पथराव

उग्र लोगों ने पुलिस की गाड़ी में की तोड़फोड़

दो पक्ष के लोग आमने-सामने, हंगामा, फिलहाल स्थिति नियंत्रण में

CRIME REPORTER RANCHI : नगड़ी में मूर्ति विसर्जन करने जा रहे जुलूस पर एक घार्मिक स्थल के पास पथराव की घटना हुई। अचानक हुए पथराव से अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार की रात सरस्वती पूजा विसर्जन जुलूस के दौरान पथराव से यह घटना शुरू हुई। इसके बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई और दो पक्षों के लोग आमने-सामने हो गए। दोनों पक्षों के बीच झड़प भी हुई। उग्र लोगों ने पुलिस की गाड़ी पर भी तोड़फोड़ की। काफी देर तक हंगामा हुआ। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस के वरीय अधिकारी समेत सैकड़ों की संख्या में जवान मौके पर पहुंचे। काफी मस्सकत के बाद स्थिति पर काबू पा लिया। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है। दोनों पक्षों के लोगों को पुलिस ने समझाकर मामला शांत कराया। घटना के बाद आस-पास के दुकानदारों ने अपनी दुकानों को बंद कर दिया। मौके पर डीसी, एसएसपी, सिटी एसपी ग्रामीण एसपी, कई डीएसपी के साथ कई थानेदार सहित भारी संख्या में पुलिस बल पहुंची।

घटना के बाद नगड़ी इलाके में तैनात पुलिसकर्मी।

गाजे-बाजे के साथ मां शारदे को दी गई विदाई

RANCHI : राजधानी में शुक्रवार को धूमधाम से मां सरस्वती की प्रतिमा का विसर्जन किया गया। शहर के विभिन्न गली-मोहल्लों से तालाब, झील, नदियों तक विसर्जन शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में युवा-युवतियों झूमते नाचते गाते नजर आए। इस दौरान पूजा पंडाल से लेकर जलाशय तक शोभायात्रा में शामिल लोगों ने एक दूसरे के साथ जमकर अबीर- गुलाल खेलते लगाकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दी। शोभायात्रा में रास्ते भर सरस्वती माता की जय..हंस वाहिनी की जय..सालभर में आती है, विद्या देकर जाती है.. के नारे से सड़क से लेकर गलियां गूंजते रही।

कांग्रेस का ट्रैक रिकॉर्ड घोटाला, आतंकवाद बढ़ाना व सैनिकों को कमजोर करने का रहा

अपना एक स्टार्टअप भी नहीं संभाल पा रही कांग्रेस : पीएम

AGENCY HARIYANA : हरियाणा में पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस के नेता अपना एक स्टार्टअप नहीं संभाल पा रहे हैं। ये लोग देश संभालने का सपना देख रहे हैं। कांग्रेस का ट्रैक रिकॉर्ड इतिहास के सबसे बड़े घोटालों का, आतंकवाद को बढ़ाने और सैनिक को कमजोर करने का है। उन्होंने कहा कि देश की इच्छा थी कि अयोध्या में प्रभु राम का भव्य मंदिर का निर्माण हो, आज पूरा देश भव्य राम मंदिर में विराजे रामलला के दर्शन कर रहा है और तो और कांग्रेस के लोग जो लोग हमारे भगवान राम को काल्पनिक बताते थे जो कभी नहीं चाहते थे कि अयोध्या में राम का मंदिर बने वह भी अब जय सियाराम बोलने लगे हैं। पीएम ने कहा कि कांग्रेस ने अब तक जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने पर रोड़े अटकाए थे। मैंने आपको गारंटी दी थी कि जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाकर रहूंगा। अब लोग कह रहे हैं कि अबकी बार एनडीए सरकार 400 पार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को दोपहर 1 बजे रेवाड़ी पहुंचे थे। यहां उन्होंने देश के 22वें ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस का शिलान्यास किया। इसके साथ 9750 करोड़ रुपए की 5 परियोजनाओं का भी शिलान्यास और उद्घाटन किया। बीजेपी ने इसे दक्षिणी हरियाणा की 14 विधानसभा सीटों रेवाड़ी, बावल, कोसली, महेंद्रगढ़, नारनौल, नांगल चौधरी, गुरुग्राम, सोहना, बादशाहपुर, पटौदी, नूंह, फिरोजपुर-झिरका और पुन्हाना की रैली बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

हरियाणा की बहनों को लखपति दीदी बनाएंगे

मोदी ने कहा- पिछले 10 सालों में देशभर में 10 करोड़ बहनों को हमने स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा है। इसमें हरियाणा की भी लाखों बहने हैं। इसमें लाखों करोड़ रुपए की मदद दी गई है। मेरी कोशिश यही है कि ज्यादा से ज्यादा दीदी को लखपति दीदी बना सकूं। अभी तक एक करोड़ बहनें लखपति दीदी बन चुकी हैं। जो बजट हम लेकर आए हैं, उसमें तीन करोड़ बहनों को लखपति बनाने का लक्ष्य रखा हुआ है। आज पूरा विश्व भारत में निवेश के लिए इच्छुक है।

कांग्रेस का कुशासन और बीजेपी का सुशासन

पीएम मोदी ने कहा- एक तरफ कांग्रेस का कुशासन है और दूसरी तरफ बीजेपी का सुशासन। यहां दस सालों से डबल इंजन सरकार है, इसलिए जो भी योजनाएं मोदी ने बनाई हैं उनका सौ प्रतिशत लाभ लोगों को मिल रहा है। जिस दक्षिण हरियाणा को विकास में पीछे रखा गया आज वह तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश में रोड हो, रेल हो, मेट्रो हो उनसे जुड़ी जो बड़ी परियोजनाएं हों वह इसी हिस्से से गुजर रही हैं। देश का सबसे लंबा एक्सप्रेसवे हरियाणा के गुरुग्राम, पलवल और नूंह से होकर गुजर रहा है।

लकड़ी चुनने गई महिला की आइइडी बलास्ट में मौत

CHAIBASA : झारखंड में पुलिस और सुरक्षा बल के जवान नक्सलियों के सफाए के लिए लगातार अभियान चला रहे हैं, तो नक्सली भी उन्हें निशाना बनाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। इसमें कई बार बेनुगाह ग्रामीणों की मौत हो जाती है। एक बार फिर कोल्हान रिजर्व फॉरेस्ट में एक बुजुर्ग महिला की आइइडी ब्लास्ट में मौत हो गई है। वहीं, तुम्बाहाका-पातातोरोब जंगल में नक्सलियों एवं सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ जारी है। पुलिस ने बताया कि कोल्हान रिजर्व फॉरेस्ट क्षेत्र के गोइलकेरा थाना अंतर्गत मारादिरी जंगल में लकड़ी चुनने गयी एक वृद्धा की आइइडी ब्लास्ट में मौत हो गई। नक्सलियों ने पुलिस एवं सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने के लिए आइइडी बिछा रखे थे। द्वारा बिछाये गये आइइडी बलास्ट होने के कारण हो गयी।

किसान आंदोलन : चौथे दिन भी जोरदार हंगामा

एक किसान और एसआई की मौत, आज ट्रैक्टर मार्च

PHOTON NEWS AMBALA : पंजाब के किसानों के दिल्ली कूच का शुक्रवार को चौथा दिन था। किसान अभी शंभू बॉर्डर पर डटे हुए हैं। हरियाणा पुलिस और पैरामिलिट्री फोर्स ने बैरिकेडिंग और आंसू गैस के गोले दागकर उन्हें आगे बढ़ने से रोका गया। शुक्रवार दोपहर करीब 3 बजे किसानों ने बैरिकेडिंग की तरफ बढ़ने की कोशिश की। यह देख हरियाणा पुलिस ने उन पर आंसू गैस के गोले दागे। गोले फटने से कई किसानों को चोटें आई हैं। किसानों के भारत बंद को पंजाब और हरियाणा में पूरा समर्थन मिला। दोनों राज्यों में रोडवेज कर्मचारी भी आंदोलन के समर्थन में आ गए। जिस वजह से सरकारी बसें नहीं चलीं। पंजाब में प्राइवेट बसें भी बंद रहीं। राजस्थान में हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में बंद का असर रहा। हिमाचल में भी बंद का असर दिखा। हरियाणा में भारतीय किसान यूनियन (चढ़ूनी) के नेता गुरनाम चढ़ूनी की कॉल पर किसानों से 12 से 3 बजे तक सब टोल नाके फ्री कराए।

BRIEF NEWS

पलामू में शटर काटकर किराना दुकान में चोरी

PALAMU : जिले के पांडू ब्लॉक कार्यालय के नजदीक गुरुवार की देर रात अवधेश गुप्ता की किराना दुकान का शटर काटकर चोरों ने लाखों की सामग्री की चोरी कर ली। दुकान मालिक ने शुक्रवार को कहा कि दाल, काली मिर्च, रिफाइन के अलावा अन्य लगभग चार लाख रुपये की सामग्री चोरी हुई है। दुकान में थोक एवं खुदरा सामग्री की बिक्री की जाती थी। इसकी लिखित शिकायत पांडू थाना में की गई है। सूचना पाकर पांडू पुलिस मौके पर पहुंची और अनुसंधान में जुट गई है। इधर, पांडू के व्यवसायों ने घटना पर नाराजगी व्यक्त की है। साथ ही कहा कि नए थाना भवन में जब से पांडू थाना शिफ्ट हुआ है तब से पांडु बाजार असुरक्षित हो गया है। पांडू बाजार से थाना काफी दूर होने के कारण चोरों का मनोबल बढ़ गया है। लोगों ने पांडू बाजार को सुरक्षा मुहैया कराने की भी मांग की है।

खूंटी में सीआरपीएफ ने ग्रामीणों के बीच सामग्रियों का किया वितरण

KHUNTI : जिले के अड़की प्रखंड के ग्राम लुपुंगहातू में शुक्रवार कोजी कंपनी 94 बटालियन सीआरपीएफ ने जनकल्याणकारी कार्यक्रम के तहत जरूरतमंदों के बीच कंबल, रेडियो, सब्जियों के बीज और अन्य सामग्रियों का वितरण किया गया। लाभुकों को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की तरफ से हर साल सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत इस तरह के कार्यक्रम चलाकर जरूरत के सामान वितरित किए जाते हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आम जनता को सुरक्षा बल के साथ अच्छे संबंध विकसित करना और परस्पर सहयोग के लिए भरोसे का वातावरण तैयार करना है। कार्यक्रम में राधेश्याम सिंह कमांडेंट 94 बटालियन, मृत्युंजय कुमार द्वितीय कमान अधिकारी, संतोष कुमार उप कमांडेंट, दीपक कुमार सहायक कमांडेंट, गोपाल सिंह सहायक कमांडेंट, प्रखंड विकास पदाधिकारी, ग्राम प्रधान और अन्य अधिकारियों की उपस्थिति रही।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत

LOHARDAGA : रांची-लोहरदगा सड़क में मनहो एवं हीरही के बीच हुई सड़क दुर्घटना में कड़ाक गांव निवासी संदेश कुजूर (30) की मौत हो गई। बताया जाता है कि शुक्रवार को कड़ाक निवासी संदेश कुजूर पिता चोकरस कुजूर अपनी बाइक से लोहरदगा से अपना गांव का कड़ाक जा रहा था। इसी क्रम में विपरीत दिशा से आ रही रेनॉल्ट डस्टर ने सामने से धक्का मार दिया, जिससे युवक की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। युवक रांची में रहकर प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहा था। वह एक दिन पहले ही गांव आया था। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों ने युवक को सदर अस्पताल ले गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर उक्त वाहन को जब्त कर आगे की कार्रवाई में जुट गई।

जरूरतमंदों के बीच कंबलों का किया वितरण

HAZARIBAGH : झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह श्रमिक संघ के जिलाध्यक्ष राजा मोहम्मद, पंचायत अध्यक्ष मो. नसीम अख्तर व पंचायत सचिव विनोद कुमार पासवान ने लुपुंग पंचायत में 50 जरूरतमंद लोगों के बीच शुक्रवार को कंबल वितरित किया। बढ़ते ठंड के मद्देनजर झामुमो की ओर लगातार कंबल वितरण से जरूरतमंदों के चेहरे पर खुशी दिखाई दी। मौके पर राजा मोहम्मद ने कहा कि प्रत्येक पंचायत में कंबल वितरण करने का लक्ष्य है, जिसे हर हाल में पूरा करना हमारी प्राथमिकता होगी।

हजारीबाग में केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

HAZARIBAGH : वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता के नेतृत्व में जिला परिषद चौक पर टायर जलाकर केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। सांसद ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार किसान विरोधी सरकार है। उन्होंने कहा कि आज जिला परिषद चौक पर सीपीआई, सीपीएम, कांग्रेस, झामुमो, राजद के नेतृत्व में टायर जलाकर पहला प्रदर्शन हुआ है। मेहता ने कहा कि देश के किसान 11 सूत्री मांगों को लेकर सड़क पर उतरे हैं, जिसकी गूंज सदन तक सुनाई देगी।

हाईवा व ट्रक की सीधी भिड़ंत में चार की मौत

लोधमा की ओर जा रहा था टर्बो, कोहरे के कारण हुई दुर्घटना

PHOTON NEWS KHUNTI : कर्रा थाना क्षेत्र अंतर्गत घुनसुली पंचायत के हेसला मोड चांपी गिरजाघर के पास शुक्रवार को हाईवा और टर्बो ट्रक के बीच हुई सीधी भिड़ंत में चार लोगों की मौत हो गई। मृतकों में टर्बो पर सवार चालक और मजदूर हैं।

मृतकों की पहचान सिलादोन निवासी टर्बो चालक दिनेश पाहन, सिरका पहान, पंकज मुंडा और चेरवादाग निवासी शनिचरवा बाखला के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार बालू लदा टर्बो लोधमा की ओर जा रहा था। इस बीच घने कोहरे के कारण लोधमा हुटार सडक पर चांपी हेसला मोड़ के पास चिप्स लदा हाईवा और टर्बो में सीधी टक्कर हो गयी, जिसमें टर्बो सवार चार व्यक्तियों की मौत हो गयी। पुलिस घटना की जांच-पड़ताल कर रही है।

दुर्घटनग्रस्त वाहन। ● फोटोन न्यूज

घर में घुसकर दिनदहाड़े अपराधियों ने 37 वर्षीय महिला को मारी गोली, गंभीर

PHOTON NEWS PALAMU : जिला मुख्यालय मेदिनीनगर के शहर थाना क्षेत्र अंतर्गत नावाहाता इलाके में दिनदहाड़े घर में घुसकर एक 37 वर्षीय महिला को गोली मार दी गई। गोली महिला के गर्दन में लगी। गंभीर स्थिति में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। गोली मारने वालों की पहचान हो गयी है।

जानकारी के अनुसार गोली नावाहाता निवासी विश्वेश्वर गिरि की पुत्री मीनाक्षी देवी को मारी गई है। मीनाक्षी मायके में ही रहती है। गढ़वा जिले के भंडरिया में उसकी शादी हुई है। उसका पति राजू गोस्वामी भी उसके साथ यहीं रहकर व्यवसाय करता है। उसके दो छोटे बच्चे हैं।

अस्पताल में इलाजरत महिला। ● फोटोन न्यूज

गोली मारने वाले की पहचान संतोष गोस्वामी के रूप में हुई है। संतोष चार साल पहले विश्वेश्वर गिरि के घर में किराए पर रहता था। संतोष और उसका साला गोलू सुबह 10 बजे विश्वेश्वर गिरि के घर पहुंचे और मीनाक्षी को टारगेट कर गोली चला दी। गोली मीनाक्षी के गर्दन में लगी है।

घटना की जानकारी मिलते ही एसडीपीओ मणिभूषण प्रसाद, थाना प्रभारी इंस्पेक्टर देवव्रत पोद्दार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। गोली चलाने वाले संतोष और उसका साला गोलू फरार हैं। पुलिस घटना के कारणों का पता लगा रही है। समाचार भेजे जाने तक हत्या का कारण स्पष्ट नहीं हुआ था।

एसडीपीओ मणिभूषण प्रसाद ने बताया कि संतोष गोस्वामी का आपराधिक इतिहास रहा है। हत्याकांड में जेल जा चुका है। गोली संतोष के साले गोलू ने चलायी। मीनाक्षी और उसके पिता ने घटना के कारण नहीं बताए हैं। पिता का कहना है कि कुछ महीने पहले जब पता चला कि संतोष का आपराधिक इतिहास है तो उसे घर से निकाल दिया था। अनुसंधान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि संतोष और उसके साले को पकड़ने के लिए अलग अलग टीम लगाई गई है।

धनबाद में दुर्गा मंदिर के पास मिला युवक का शव, क्षेत्र में सनसनी, जांच में जुटी पुलिस

PHOTON NEWS DHANBAD : धनबाद के भूली ओपी अंतर्गत "डी" ब्लॉक दुर्गा मंदिर के बगल में पार्क की दीवार और मध्य विद्यालय के बाउंड्री के बीच एक युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। शुक्रवार अहले सुबह लोगों ने एक युवक का शव देखा। शव मुंह के बल पड़ा था। इसके कारण पहचान नहीं हो पा रही थी।

स्थानीय लोगों ने तत्काल इसकी सूचना भूली पुलिस को दिया, जिसके बाद शव को बाहर निकाला गया। शव को बाहर निकालने के बाद स्थानीय लोगों ने शव की पहचान नंदन पासवान (26) के रूप में की गई है। नंदन पासवान के शव मिलने की खबर सुनकर परिजन रोते हुए घटना स्थल पर पहुंचे। परिजन नंदन पासवान को अस्पताल ले जाना चाहते थे। पुलिस के समझाने के बाद भी परिजन काफी देर तक अड़े रहे, जिससे मौके पर लोगों की काफी भीड़ जमा हो गई।

दलबल के साथ मौके पर पहुंचे भूली ओपी प्रभारी महेश चंद्र ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और शव का पंचनामा बनवाया। भूली ओपी प्रभारी महेश चंद्र ने दुर्गा मंदिर के बाहर लगे सीसीटीवी फुटेज को भी खंगाला।

सीसीटीवी फुटेज में नंदन पासवान अकेले बैठा दिखा और फिर नंदन पासवान औंधे मुंह गिर पड़ा, जिसके बाद नंदन पासवान नहीं उठा। मृतक नंदन पासवान के बड़े भाई चंदन पासवान ने मृतक के दोस्तो पर ही शराब पिलाकर मारने का आरोप लगाया है। चंदन पासवान ने आरोप लगाते हुए कहा कि कुछ दिन पहले उनलोगो का झगड़ा हुआ था। उसी गुस्से में मेरे भाई को अत्यधिक शराब पिलाकर हत्या कर दी गई।

घटनास्थल पर जुटी भीड़। ● फोटोन न्यूज

भूली ओपी प्रभारी महेश चंद्र ने बताया कि भूली डी ब्लॉक दुर्गा मंदिर के बगल में पार्क के बाउंड्री के पास शव मिलने की सूचना मिली थी। शव को बाहर निकाल कर पंचनामा किया गया है। सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई है। पोस्टमार्टम के लिए शव को भेजा जा रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारण का

मस्जिद जाफरिया में मजलिस दुआइया का हुआ आयोजन

दीनदारी के बिना दीन अधूरा : तहजिबुल

PHOTON NEWS RANCHI : इंसान की जिंदगी में कई मोड़ आते हैं, कई दोस्त और सहयोगी भी मिलते हैं। परन्तु जो कोई आप से प्रेम करता है, वह लोभ के कारण करता है। लेकिन माता-पिता जो हैं वह किसी भी लालच के आधार पर अपने बच्चों से प्यार नहीं करते हैं। बल्कि, वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं अपनी औलाद समझ कर। वह बच्चा अपने माता-पिता के प्रति क्रूर ही क्यों ना हो? लेकिन माता-पिता कभी भी अपने बच्चों को कोसते नहीं हैं। उपरोक्त बातें ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड झारखंड के चेयरमैन सह झारखंड राज्य हज कमिटी के पूर्व सदस्य सह अल-ईमान चैरिटेबल ट्रस्ट नजफी हाउस मुंबई के सदस्य एवं मस्जिद जाफरिया रांची के इमाम व खतीब हजरत मौलाना हाजी सैयद तहजिबुल हसन रिजवी ने कही। वह शुक्रवार को मस्जिद जाफरिया में अपनी मां हसनैनी बीबी की बरसी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जब युवा अपने अंदर धर्म की शीतलता महसूस करें तो अपने माता-पिता के लिए प्रार्थना करें। कि उन्होंने तुम्हें बड़ा किया और तुम्हें धार्मिक बनाया। दीनदारी के बगैर दीन अधूरा है। मौलाना ने कहा कि अल्लाह सिर्फ सजदा करने वालों को ही अपना दोस्त नहीं बनाता, बल्कि मां-बाप से मोहब्बत करने वालों को भी पसंद करता है। माता-पिता की प्रसन्नता ही प्रभु की प्रसन्नता है। आइए हम सब मिलकर प्रतिज्ञा करें कि हम किसी भी परिस्थिति में अपने माता-पिता के अधिकारों का

कार्यक्रम में शामिल लोग। ● फोटोन न्यूज

नम आंखों से दी मां शारदे को विदाई

PHOTON NEWS KHUNTI : विद्या की देवी मां शारदे की पूजा अर्चना के बाद शुक्रवार को को उन्हें नम आंखों से विदाई दी गई। विभिन्न जगहों पर स्थापित माता सरस्वती की प्रतिमा को श्रद्धालुओं विसर्जन शोभायात्रा के साथ तालाबों और नदियों तक ले गये और माता की आराधना के बाद सभी प्रतिमाइओं कों विसर्जित कर दिया गया। श्योर सक्सेस कोचिंग सेंटर के परिसर में आयोजित सरस्वती पूजा के दौरान संस्थान के बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की प्रदर्शनी लगाई गई।

कोचिंग सेंटर के कई छात्र-छात्राओं ने डायन प्रथा, सड़क सुरक्षा, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, धूम्रपान के दुष्प्रभाव, कन्या भ्रुण हत्या सहित कई सामाजिक कुरीतियों से संबंधित बनाई गई पेंटिंग की प्रदर्शनी सरस्वती पूजा के दौरान लगाई गई। सभी पेंटिंग की लोगों ने सराहना की। इस अवसर पर श्योर सक्सेस कोचिंग सेंटर के निदेशक सकलदीप भगत समेत कई गणमान्य लोगों और छात्र छात्राएं उपस्थित थे। सरस्वती पूजा के अवसर पर संस्थान में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कोचिंग सेंटर के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

मूर्ति विसर्जन करते भक्त। ● फोटोन न्यूज

आजसू ने पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच के लिए राज्यपाल के नाम डीसी को सौंपा ज्ञापन

PHOTON NEWS PALAMU : अखिल झारखंड छात्र संघ ने जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच की मांग को लेकर पलामू समेत पूरे राज्य में उपायुक्त के माध्यम से राज्यपाल को स्मार-पत्र सौंपा। पत्र में कहा गया कि झारखंड सरकार जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा पेपर लीक की जांच सीबीआई से कराए। जांच के लिए राज्य सरकार ने एक एसआईटी गठित है लेकिन आजसू की समझ है कि यह जांच इस मामले के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

उपायुक्त को ज्ञापन देते आजसू के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

कहा गया है कि पेपर लीक मामले में राज्य के उच्च अधिकारियों की भी संलिप्तता है। इसलिए एसआईटी द्वारा की जा रही जांच प्रभावित होने की संभावना है। पलामू के उपायुक्त शशि रंजन से अखिल झारखंड छात्र संघ (आजसू) के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात कर उन्हें पत्र सौंपा। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विश्वविद्यालय प्रभारी अभिषेक राज ने किया।

आजसू ने कहा कि जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा पेपर लीक की सीबीआई जांच के लिए हम लगातार आंदोलन कर रहे हैं। सीबीआई जांच के बाद ही अभ्यर्थियों को न्याय मिलेगा। इसी कड़ी में 17 फरवरी को आजसू हजारों अभ्यर्थियों के साथ उनके हक के लिए राजभवन के समक्ष एकदिवसीय प्रदर्शन करेगा।

इस मौके पर जिला अध्यक्ष राहुल मिश्रा, हिमांशु रंजन, प्रियांशु वर्मा, बिपिन शुक्ला आदि मौजूद थे।

उमरा से रांची लौटे हुजूर पीरे तरीकत सैय्यद शाह अल्कमा शिबली कादरी

PHOTON NEWS RANCHI : खानकाह मजहरिया मुनअमिया फिरदौस नगर डोरंडा रांची के सज्जादा नशी व ईमाम जामा मस्जिद जैप 1 गुरुवार को उमरा कर वापस रांची लौटे। जिनका खानकाह मे उनके अकीदतमंद और मुरीदानो ने फूल माला पहना कर हुजूर का एवम पूरे जनवरी को जद्दा रवाना हुए थे। इनके साथ हुजूर की अहलिया शमसी छोटे बेटे मौलाना सैय्यद अबू राफे तीबरानी, हसन बाबू, रजिया बेगम, सहाबुद्दीन कादरी, दिलबर हुसैन, सहादत हुसैन, मोहम्मद कमालुद्दीन, मोहम्मद अकमल हुसैन सहित अन्य लोग जत्था मे शामिल थे।

जत्थे का स्वागत किया गया।बता दें पिछले महीने हुजूर उमरा के लिए 28

देशव्यापी हड़ताल का कोडरमा में दिखा असर

PHOTON NEWS KODERMA : देश के मजदूरों, किसानों और आम जनता के जीवन जीविका पर केंद्र सरकार की नीतियों के विनाशकारी हमले, किसानों पर हो रहे दमन और तानाशाही शासन के खिलाफ संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) और सेन्ट्रल ट्रेड यूनियन और स्वतंत्र फेडरेशनों के

राष्ट्रव्यापी हड़ताल का कोडरमा जिला में असर देखा गया।

झारखंड राज्य आंगनबाड़ी सेविका सहायिका यूनियन के बैनर तले जिला में सभी 751 आंगनबाड़ी केंद्रों में ताला लटका रहा।

झारखंड राज्य रसोईया संयोजिका यूनियन भी हड़ताल में हुआ शामिल, जिसके कारण दर्जनों स्कूल में मिड डे मील पर प्रभाव पड़ा. झारखंड राज्य निर्माण कामगार यूनियन के बैनर तले सैकड़ों निर्माण मजदूरों ने काम रखा बंद वहीं माईका वर्कर्स यूनियन के हड़ताल में शामिल होने से कई क्षेत्रों में ढिबरा मजदूर भी काम रखा बंद, झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन के बैनर तले टैम्पो चालक संघ भी हड़ताल में शामिल हुआ।

खूंटी में बंद का रहा मिला जुला असर

बंद कराने सड़क पर उतरे कांग्रेसी, दी गिरफ्तारी

PHOTON NEWS KHUNTI : किसान संगठनों द्वारा आहूत भारत बंद के समर्थन में जिला कांग्रेस कमेटी खूंटी द्वारा की गई खूंटी बंदी का शुक्रवार को मिलाजुला असर रहा। बंद के समर्थन में पूर्व विधायक कालीचरण मुंडा और कांग्रेस जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा की अगुवाई में दर्जन भर कांग्रेस कार्यकर्ता सुबह लगभग 8.30 बजे पार्टी का झंडा आदि लेकर सड़क पर उतरे और व्यवसायियों से अपनी अपनी दुकान बंद रखने की अपील की।

बाद में बंद समर्थक भगत सिंह चौक के समीप वाहनों को आड़ी तिरछी खड़ी कर मुख्य सड़क को जाम कर दिया और सड़क पर सभी कांग्रेसी धरने में बैठ गए। सड़क जाम होने पर सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गई। सड़क जाम की सूचना मिलते ही एसडीओ अनिकेत सचान, एसडीपीओ वरूण रजक, अंचलाधिकारी जया शंखी मुर्मू, थाना प्रभारी मोहन कुमार अन्य पुलिस अधिकारी एवं जवानों के साथ मौके पर पहुंचे और सड़क पर आड़ी तिरछी खड़ा किये गये वाहनों को हटवाकर सड़क जाम समाप्त कराया।

दूसरी ओर सड़क पर बंद समर्थकों के उतरने से मेन रोड में दुकान खोलने आए दुकानदारों में ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस स्थिति में दुकानदार अपनी दुकानों को न खोलकर मामले को समझने लगे। बाद में सुबह लगभग पौने 10 बजे सड़क पर बैठे कांग्रेसी उठे और जुलूस के रूप में खूंटी थाना जाकर वहां सामूहिक रूप से अपनी गिरफ्तारी दी।

सड़क से कांग्रेसियों के उठने के बाद धीरे-धीरे सभी दुकानें खुल गई और पूरा माहौल सामान्य हो गया। बंद के समर्थन में सड़क पर उतरे कांग्रेसियों में पूर्व विधायक एवं कांग्रेस जिलाध्यक्ष के अलावा जिला महासचिव रविकांत मिश्रा, यूथ कांग्रेस के कार्यकारी जिलाध्यक्ष अरुण सांगा, सुशील सांगा, सयूम अंसारी, विल्सन टोपनो, देवजीत देवघरिया, वेद प्रकाश मिश्रा, गुलाम गौस, जुनैद अहमद, पॉल भेंगरा, एडवर्ड हंस, सुनीता गोप, फिरोज आलम, शशिकांत होरो, विक्की स्वांसी आदि शामिल थे। जिला मुख्यालय के अलावा तोरपा, मुरहू, अड़की, रनिया और कर्रा में बंद पूरी तरह विफल रहा। आम दिनों की तरह वाहनों का परिचालन हुआ और दुकानें भी खुली रहीं।

बंद कराते कांग्रेसी। ● फोटोन न्यूज

धनबाद में 3552 पदों पर बहाली को लेकर लगा रोजगार मेला

DHANBAD : श्रम नियोजन प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग झारखंड सरकार के अंतर्गत राज्य के बेरोजगार युवक-युवतियों के लिए रोजगार का एक नया अवसर प्रदान करने के उदेश्य से धनबाद जिला के श्रम नियोजन कार्यालय प्रांगण में दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला-2024 का आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय रोजगार मेला में 08 हजार महीना से लेकर 50 हजार रुपये तक की नौकरी पाने का अवसर दिया गया है। 3552 पदों के लिए आयोजित इस रोजगार मेले में लगभग दो दर्जन युवकों का चयन होंडा कंपनी में हुआ। जिन्हे सनब्राईट मेन पावर सोल्यूशन की तरफ से ऑफर लेटर प्रदान किया गया। चयनित अभ्यर्थी बंगलुरु और पुणे डिवीजन में योगदान देंगे। श्रम अधीक्षक आनंद कुमार ने बताया कि रोजगार मेला में लगभग 26 कंपनियां आयीं हैं। जिनमे करीब दो दर्जन कंपनी स्थानीय हैं। जिसमें 17 डिग्री, धनबाद पब्लिक स्कूल, रिलाईबल इंडस्ट्रीज आदि शामिल हैं।

प्रश्न पत्र लीक मामले में राजभवन के समक्ष आज होगा प्रदर्शन, आजसू भी होगा शामिल

बैठक में उपस्थित आजसू के कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सीजीएल परीक्षा में हुई प्रश्न पत्र लीक और धांधली के सीबीआई से जांच कराने कि मांग को लेकर आजसू पार्टी (छात्र इकाई) द्वारा 17 फरवरी को राजभवन के समक्ष आयोजित प्रदर्शन में ग्रामीण क्षेत्र से आजसू पार्टी के कार्यकर्ता भी शामिल होंगे। प्रदर्शन की तैयारी को लेकर आज पिठौरिया चौक स्थित ईदगाह में मीटिंग हुई जिसमें काके, रातू, बुढ़मू क्षेत्र से आये आजसू पार्टी के कार्यकर्ता शामिल हुए।

उपस्थित कार्यकर्ताओं ने कहा कि सीजीएल परीक्षा में बड़ी मात्रा में धांधली हुई है। सरकार द्वारा प्रश्न पत्र लीक मामले को लेकर गठित एसआईटी से आजसू पार्टी संतुष्ट नहीं है। छात्रों के हक और अधिकार के खातिर आजसू जेएसएससी के खिलाफ आंदोलनरत है और पूरे प्रकरण की जांच सीबीआई से कराने कि मांग करती है।

बैठक में मुख्यरूप से मो. जियाउद्दीन अंसारी, नौशाद आलम, मो., जावेद,आफताब आलम, सरफराज समी, अबुरेहान अंसारी, नसीम अख्तर,अख्तर अंसारी, असलम अंसारी, इमरान अंसारी, अहमद रजा, मंटू पाहन, इमरान जिलानी आदि शामिल थे।

चंपाई मंत्रिमंडल विस्तार से पहले कांग्रेस में दिखा पॉलिटिकल ड्रामा

12 विधायक नाराज, तीन घंटे सर्किट हाउस में ड्रामा, प्रदेश प्रभारी ने मनाया

PHOTON NEWS RANCHI : चंपाई सोरेन सरकार के कैबिनेट विस्तार से पहले कांग्रेस आलाकमान के हस्तक्षेप से नाराज 12 विधायकों को फौरी तौर पर मना तो लिया गया है, लेकिन सर्किट हाउस के कमरा नंबर 107 में जो पॉलिटिकल ड्रामा करीब तीन घंटे तक चला वह कम से कम कांग्रेस के लिए शुभसंकेत नहीं है। मान मनौव्वल के बाद राजभवन शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने को तैयार हुए कांग्रेस विधायकों ने बार बार एक ही बात दोहराई कि वह प्रदेश प्रभारी के आग्रह पर राजभवन जाने को तैयार हुए। सर्किट हाउस के कमरा नंबर 107 से निकले प्रदेश प्रभारी और कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव गुलाम अहमद मीर ने कहा कि विधायकों ने जो कंसर्न और ग्रीवांस के बारे में बताया वह किसी का व्यक्तिगत मामला नहीं था। ये सभी जनप्रतिनिधि हैं और इन्हें जनता के बीच जाना होता है, ऐसे में इनकी बातें आलाकमान तक पहुंचाई गयी हैं।

आलाकमान ने दिल्ली बुलाया है : इरफान अंसारी

नाराज विधायक डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि हम लोगों को दिल्ली बुलाया गया है। वहां आलाकमान से बातचीत के बाद ठोस बातें मीडिया को बताएंगे। इशारों इशारों में इरफान अंसारी ने कहा कि जो विधायक मंत्री बन रहे हैं वह भविष्य में बड़ा दिल दिखाएंगे इसकी उम्मीद है। उन्होंने कहा कि झामुमो भी बड़ा भाई है उसे 12 वां मंत्रीपद कांग्रेस को देना चाहिए था। सर्किट हाउस के कमरा नंबर 107 से राजभवन के लिए निकले अनूप सिंह ने कहा कि हम लोगों को आलाकमान की ओर से आश्वासन मिला है और प्रभारी गुलाम अहमद मीर की आग्रह पर राजभवन जा रहे हैं।

क्या है पूरा मामला

दरअसल, जैसे ही कांग्रेस के 12 विधायकों को यह पता चला कि कांग्रेस कोटे से मंत्रियों का चेहरा नहीं बदला जा रहा है। एक-एक कर सभी नाराज विधायक सर्किट हाउस के कमरा नंबर 107 में पहुंच गए और विरोध की आवाज बुलंद कर दी। 17 में से 12 विधायकों के एकजुटता और राजभवन नहीं जाने के एलान के बाद प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर और विधायक दल के नेता आलमगीर आलम सर्किट हाउस पहुंचे और विधायकों को मनाने का प्रयास शुरू हुआ।

विधायकों का फोन तक नहीं उठाते मंत्री

नाराज विधायकों ने पार्टी के विधायक बादल पत्रलेख, बन्ना गुप्ता और रामेश्वर उरांव के मंत्री रहते अपने कार्यकताओं की घोर उपेक्षा का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इनके फिर से मंत्री बनने से पार्टी और कमजोर होगी। सूत्र बताते हैं कि एक पूर्व मंत्री के पूर्व में वायरल हुए वीडियो से लेकर भाजपा से मिलीभगत तक की बात प्रभारी को बतायी गयी। महिला विधायकों ने एक स्वर से कहा कि पार्टी में 4 महिला विधायक हैं लेकिन इनकी उपेक्षा हो रही है। नाराज विधायकों ने कहा कि मंत्री रहते जब ये लोग विधायकों के फोन तक नहीं उठाते हैं, तो आम जनता का क्या हाल होगा। जिन लोगों ने बगावत की आवाज एकजुट होकर बुलंद की उसमें विधायक अनूप सिंह, डॉ इरफान अंसारी, अंबा प्रसाद, रामचंद्र चेरो, भूषण बाड़ा, दीपिका पांडे सिंह, नमन विक्सल कोंगारी, राजेश कच्छप, शिल्पी नेहा तिर्की, सोनाराम सिंकू, उमाशंकर अकेला का नाम शामिल है।

बैद्यनाथ को मंत्री पद नहीं मिलना धोखा : नेता प्रतिपक्ष

RANCHI : चंपाई सोरेन की हेमंत पार्ट -2 वाली सरकार का कैबिनेट का दूसरा विस्तार शुक्रवार को हो गया। इस विस्तार में 8 मंत्रियों ने शपथ ली। राजभवन में आयोजित समारोह में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी। जिसमें डॉ रामेश्वर उरांव, दीपक बिरुआ, बन्ना गुप्ता, बादल पत्रलेख, मिथिलेश ठाकुर, बसंत सोरेन, हफीजुल हसन और बेबी देवी शामिल रहीं। राज्य की विडंबना है कि शपथ ग्रहण के ठीक पहले बैद्यनाथ राम जी का नाम आखिरी समय में काटा गया। जबकि बैद्यनाथ राम का नाम राजभवन को भेजी गयी सूची में शामिल था। झारखंड के 50 लाख की आबादी वाले अनुसूचित जाति समाज को ठगबंधन सरकार के द्वारा एक और ठगी-धोखा का सामना करना पड़ा है। उक्त बातें नेता प्रतिपक्ष, झारखण्ड विधानसभा अमर कुमार बाउरी ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कही। उन्होंने कहा कि झामुमो, कांग्रेस, राजद का दलित विरोधी चेहरा फिर से एक बार सबके सामने आ गया है। झारखंड के दलित वर्ग सिर्फ उनकी पार्टी का झंडा और डंडा ढोने लायक है ना कि सत्ता में हिस्सेदारी व भागीदारी के लायक है।

सीता को हक से वंचित किया गया : नायक

RANCHI : आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह झारखंडी सूचना अधिकार मंच के केंद्रीय अध्यक्ष पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने कहा कि सीता सोरेन को मंत्री नहीं बनाना स्व दुर्गा सोरेन के द्वारा झारखंड अलग राज्य की लड़ाई में अहम भूमिका को अनदेखा करने जैसा समान है। उन्होंने कहा कि विधायक सीता सोरेन का हक बनता था मगर उनको इस हक से वंचित किया गया जो स्वर्गीय दुर्गा सोरेन के विरासत को लेकर चलने वाली एक महिला का अपमान है। नायक ने आगे कहा कि जो झारखंड अलग राज्य के निर्माण के लिए शिबू सोरेन के साथ कदम से कदम मिलाकर लड़ाई लड़ने वाले वीर क्रांतिकारी स्व. दुर्गा सोरेन के मृत्यु के बाद उनके सपनों को पूरा करने के लिए विधायक सीता सोरेन हर समय तत्पर रहती थी मगर आज उनके किए गए कार्यों को अनदेखा कर इन्हें मंत्री नहीं बनाया जाना शुभ संकेत नहीं है। जो आने वाले दिनों में झारखंड मुक्ति मोर्चा को इसका परिणाम भोगना होगा। नायक ने कहा कि अभी भी समय है वक्त रहते 12 वें मंत्री के रूप में सीता सोरेन को अविलंब मंत्री बनाकर उनके पति स्वर्गीय दुर्गा सोरेन के द्वारा अलग राज्य के निर्माण की लड़ाई में योगदान को सम्मान देने का काम करें ताकि स्वर्गीय दुर्गा सोरेन के देखे गए सपनों को विधायक सीता सोरेन पूरा कर सके।

BRIEF NEWS

झारखंड प्रशासनिक सेवा के कई अधिकारियों का तबादला

RANCHI : राज्य सरकार ने झारखंड प्रशासनिक सेवा के कई अधिकारियों का तबादला किया गया है। इस संबंध में कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग ने गुरुवार देर रात अधिसूचना जारी कर दी है। जारी अधिसूचना के अनुसार कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के संयुक्त सचिव नवीन कुमार को स्थानांतरित करते हुए देवघर का डीडीसी बनाया गया है। जबकि चतरा के अपर समाहर्ता पवन कुमार मंडल को स्थानांतरित करते हुए चतरा का डीडीसी, गुमला के भूमि सुधार के उपसमाहर्ता सागरी बारल को एसडीओ देवघर, हजारीबाग के चौपारण के अंचल अधिकारी आशीष कुमार मंडल को रामगढ़ के पतरातू का अंचल अधिकारी, साहिबगंज के बरहरवा के अंचल अधिकारी एजाज हुसैन अंसारी को जामताड़ा का कार्यपालक दंडाधिकारी, सरायकेला नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी राजेंद्र प्रसाद गुप्ता को जमशेदपुर का जिला कल्याण पदाधिकारी, श्रम नियोजन विभाग के संयुक्त सचिव संदीप बक्शी को स्वर्ण रेखा परियोजना जमशेदपुर का संयुक्त सचिव के पद पर पदस्थापित किया गया है।

डीडीसी ने अधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश

RANCHI : रांची डीडीसी दिनेश कुमार यादव ने आज शुक्रवार को विकास भवन में सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता (रशएएढ) की बैठक आयोजित की। बैठक में डीडीसी ने रशएएढ से जुड़े सभी पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि लोक सभा चुनाव से पूर्व चुनावी गतिविधियों पर कार्य करते हुए मतदाता शिक्षा, मतदाता जागरूकता फैलाने और मतदाता साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलायें, ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा जागरूक होकर मतदान में अपनी सहभागिता निभायें इससे मतदान के प्रतिशत में काफी बढ़ोतरी होगी। डीडीसी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि देश के प्रजातंत्र को मजबूत बनाने के लिए भारतीय निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशानुसार मतदाता जागरूकता अभियान चलायें। कहा कि चुनावी पाठशाला चलाते हुए विद्यालय, महाविद्यालय शैक्षणिक संस्थान, ग्राम पंचायत, गांव वालों, यंग वोटर को जागरूक करें।

चार वर्षों तक भ्रष्टाचार व लूट का खेला : प्रतुल

RANCHI : भाजपा ने झारखंड सरकार को भ्रष्टाचार और लूट का खेल खेलने वाली सरकार बताया है। प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने कहा कि झारखंड में ह्यफाइल और फोल्डरह्ण वाली सरकार ने 4 वर्षों तक भ्रष्टाचार और लूट का खेल खेला है। झारखंड में तो आकर फाइल और फोल्डर का मतलब ही बदल जाता है। बताया जा रहा है कि आर्किटेक्ट विनोद और पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के बीच जो व्हाट्सएप चैट था, उसमें लाख रुपये की डील के लिए कोड नेम फाइल और करोड़ के लिए कोड नेम फोल्डर का प्रयोग किया जाता था। प्रतुल ने कहा कि इसी फाइल और फोल्डर वाली सरकार ने झारखंड के पिछले चार वर्षो में 70,000 करोड़ का घपला घोटाला किया है। प्रतुल ने कहा कि उम्मीद है कि आने वाले दिन में कई सफेदपोश भी इस लूट के खेल में बेनकाब होंगे।

राज्यपाल से गुहार, रिजल्ट जारी कराने का आग्रह

RANCHI : ठीक ही कहा गया है कि झारखंड में भगवान मिलना आसान है, लेकिन सरकारी नौकरी मिलना बेहद ही मुश्किल है। कुछ ऐसा ही वाक्या जेएसएससी द्वारा आयोजित झारखंड डिप्लोमा स्तरीय संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल छात्रों की आपबीती सुनने के बाद पता चला है। राजभवन के समक्ष आंदोलन कर रहे इन जूनियर इंजीनियर ने राजभवन में ज्ञापन सौंपकर परीक्षा परिणाम घोषित करने के लिए आयोग को निर्देश जारी करने की गुहार लगाई है।

atom美 ATOMY INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

कांग्रेस ने बंद के समर्थन में सड़क पर उतरकर किया प्रदर्शन

PHOTON NEWS RANCHI : रांची जिला कांग्रेस कमिटी ने शुक्रवार को देश के किसान संगठनों की ओर से आहूत भारत बंद को लेकर सड़कों पर उतरकर समर्थन किया। जिला अध्यक्ष डॉ.राकेश किरण महतो के नेतृत्व में राजधानी रांची में अल्बर्ट एक्का चौक पर आक्रोशपूर्ण प्रदर्शन किया गया। जिलाअध्यक्ष ने कहा कि देश के अन्नदाताओं के ऊपर हो रहे अन्याय और अत्याचार के खिलाफ कार्यकताओं ने सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन किया और केंद्र सरकार की नीतियों का पूरी ताकत के साथ विरोध किया। इस दौरान अर्चना मिश्रा, मेरी तिर्की,जमील मल्लिक, रीता चौधरी, मीनू सिंह, सुधा देवी, चंदन बैठा, लालचंद सोनी, गौरी शंकर महतो, लक्ष्मी देवी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि किसान संगठनों ने यह बंद कृषि उत्पादों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी ,बेरोजगारी और केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ आयोजित की थी।

जेबीवीएनएल की अपील जल्द कराएं केवाईसी

RANCHI : झारखंड बिजली वितरण निगम मार्च से बिलिंग की नयी व्यवस्था लागू करने जा रहा है। नयी व्यवस्था के तहत उपभोक्ताओं को व्हाटसएप और एसएमएस के जरिये बिजली बिल उपलब्ध कराया जायेगा। इसके लिये जेबीवीएनएल ने अपने उपभोक्ताओं से अपील की है कि उपभोक्ता फरवरी महीने के अंत तक अपना केवाईसी करा लें। इसके लिये उपभोक्ताओं को अपने नजदीकी बिजली कार्यालय में अपने मोबाइल नंबर को बिजली कंज्यूमर नंबर से जोड़ना होगा। राज्य के सभी बिजली कार्यालयों में ये व्यवस्था शुरू कर दी गयी है। इसके लिये प्रचार प्रसार भी किया जा रहा है जिसके तहत सोशल मीडिया के जरिये उपभोक्ताओं को केवाईसी कराने की जानकारी दी जा रही है। मोबाईल नंबर और कंज्यूमर नंबर जुड़ा होने पर ही उपभोक्ताओं को मैसेज के जरिये बिल दिया जायेगा।

भारत बंद : मजदूर यूनियनों ने निकाली जनाक्रोश रैली, कई राजनीतिक दलों ने भी दिया पूर्ण समर्थन

कोयला क्षेत्र में हड़ताल का व्यापक असर रहने का किया गया दावा

PHOTON NEWS RANCHI : केंद्र सरकार की मजदूर विरोधी, किसान विरोधी और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ शुक्रवार को भारत बंद एवं औद्योगिक हड़ताल किया गया। दरभंगा हाउस स्थित सीसीएल मुख्यालय एवं सीएमपीडीआई में कोयला क्षेत्र की हड़ताल का पूर्ण असर रहा। एचईसी बचाओ मजदूर संघर्ष समिति ने मुख्यालय से धुर्वा गोलचक्कर तक रैली निकाल कर लंबे समय से चल रहे आंदोलन को और तेज करने का संकल्प लिया। सेल्स प्रमोशन कर्मी भी कंपनी-वार हड़ताल एवं विरोध प्रदर्शन में शामिल रहे। आईआइसीएम में गेट में बैठ कर संयुक्त कार्यवाही के महत्व पर प्रकाश डाला गया। जोमैटो, स्विगी के डिलिवरी कामगार, निर्माण मजदूर, किसान बड़ी संख्या में सड़क पर उतर कर रोष जताया। रांची जिला मुख्यालय में संयुक्त मजदूर किसान मोर्चा द्वारा जनाक्रोश रैली निकाली गई। यह रैली सैनिक बाजार से शहीद चौक होकर अलबर्ट एक्का चौक पर जनसभा में तब्दील हो गई। इस संयुक्त कार्रवाई में किसान सभा, किसान महासभा, एटक, इंटक, एक्टू, सीटू, बेफी, अराजपत्रित कर्मचारी संघ, इत्यादि की भागीदारी रही। कांग्रेस, राजद, माकपा, भाकपा, माले ने मजदूरों किसानों के संघर्ष को अपना समर्थन दिया। सभा को राजेंद्र राम, अनिर्बान बोस, बीरेंद्र कुमार, एजाज अहमद, प्रलय भट्टाचार्य, एमएल सिंह, अजय सिंह, महेंद्र पाठक, नंदिता भट्टाचार्य, प्रतीक मिश्रा, भवन सिंह, प्रकाश विप्लव ने भी संबोधित किया।

रैली निकालकर विरोधी-प्रदर्शन करते प्रदर्शनकारी।

शहरी आजीविका से संबंधित राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन, आत्मनिर्भरता विषय पर चर्चा

महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अर्बन लाइवलीहुड इको सिस्टम पर काम जरूरी : राहुल

PHOTON NEWS RANCHI : केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, यूएनडीपी इंडिया एवं नगरीय प्रशासन निदेशालय, नगर विकास एवं आवास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित शहरी आजीविका से संबंधित राष्ट्रीय कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। कार्यशाला में महिला सशक्तीकरण एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता विषय पर गहन चर्चा हुई। नयी रणनीति और भविष्य में राज्यों के उत्कृष्ट कार्यों को पूरे देश में कैसे लागू किया जाये, इसकी कार्ययोजना बनायी गयी।

संबोधित करते राहुल कुजूर।

केंद्र व राज्य सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता दोहराई

नगर विकास सचिव अरवा राजकमल व निदेशक नगरीय प्रशासन आदित्य कुमार आनंद ने महिला स्वयं सहायता समूहों तथा स्ट्रीट वेंडर्स के सर्वांगीण विकास के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का प्रभावी ढंग से लाभ देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी।आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव राहुल कपूर एवं शालिनी पाण्डेय, निदेशक, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, आदित्य कुमार आनन्द, निदेशक, नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखण्ड सरकार, देश के विभिन्न राज्यों से आये प्रतिनिधियों, नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखण्ड सरकार तथा भारत सरकार एवं यूएनडीपी के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में कार्यक्रम शुरू किया गया।

मौके पर आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के केंद्रीय संयुक्त सचिव राहुल कपूर ने कहा कि शहरी क्षेत्र की गरीब महिलाओं के साथ उनकी सशक्त संरचनात्मक संस्था के द्वारा उनकी आजीविका विकास, उनके सशक्तीकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार के लिए समुदाय के साथ मिलकर विकास पर कार्य किये जाने की आवश्यकता है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अर्बन लाइवलीहुड इको सिस्टम पर काम करना होगा। झारखंड राज्य द्वारा इस दिशा में बेहतर कार्य किये जा रहे हैं। सके अतिरिक्त विभिन्न वक्ताओं ने अपनी बात रखी।

हाईकोर्ट ने वीरेंद्र राम के सीए मुकेश मित्तल की अग्रिम जमानत याचिका को किया खारिज

PHOTON NEWS RANCHI : मनी लॉन्ड्रिंग में ग्रामीण कार्य विभाग के निलंबित मुख्य अभियंता वीरेंद्र राम केस से जुड़े सीए मुकेश मित्तल की अग्रिम जमानत याचिका पर झारखंड हाई कोर्ट ने शुक्रवार को फैसला सुनाया। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की कोर्ट ने मुकेश मित्तल की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी। पूर्व में सुनवाई पूरा होने के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। ईडी की ओर से हाईकोर्ट के अधिवक्ता एके दास और सौरभ कुमार ने पैरवी की।

दरअसल, मुकेश मित्तल पर वीरेंद्र राम की काली कमाई के लगभग 14 करोड रुपए को सफेद करने का आरोप है इसकी आवाज में उसे मोटी रकम कमीशन के रूप में मिलती थी इसके लिए उसने अपने कर्मचारियों के बैंक खातों का इस्तेमाल किया था। बता दे की पूर्व में मुकेश मित्तल की व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट संबंधी याचिका को कोर्ट खारिज कर चुका है। वहीं उनकी अग्रिम जमानत याचिका को भी ईडी कोर्ट ने 16 दिसंबर 2023 को खारिज कर दिया था, इसके बाद उनकी ओर से हाईकोर्ट में अग्रिम जमानत याचिका दाखिल की गई थी।

यह भी जानकारी दे दें कि मार्च 2023 में ईडी के संयुक्त निदेशक के आवेदन पर दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा में मामला दर्ज किया गया था।जिसमें वीरेंद्र राम के अलावा उनके चार्टर्ड अकाउंटेंट मुकेश मित्तल व अन्य को आरोपी बनाया गया था। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा में दर्ज की प्राथमिकी में आरोपियों पर फर्जी केवाइसी पर बैंक खाता खोलकर वीरेंद्र राम की काले धन की लॉन्ड्रिंग का आरोप है।

झामुमो कार्यकर्ताओं के उपवास का दूसरा दिन, रांची जिला समिति भी हुई शामिल

हेमंत सोरेन को साजिश कर भेजा गया जेल : विनोद किस्कू

PHOTON NEWS RANCHI : रांची के मोरहाबादी स्थित बापू की प्रतिमा के समक्ष दूसरे दिन भी झामुमो रामगढ़ जिलाध्यक्ष विनोद किस्कू के नेतृत्व में उपवास कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम मे रांची जिला अध्यक्ष मुस्ताक आलम के नेतृत्व मे रांची जिला समिति भी शामिल हुई। इस अवसर पर रामगढ़ जिला अध्यक्ष विनोद किस्कू ने कहा झारखंड के युवा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जनता ने 5 साल के लिए बहुमत दिया था, और वह साढ़े 3 करोड़ जनता के घर-घर तक योजनाओं को पहुंचाने का काम कर रहे थे। इसी को देखते हुए भाजपा और केंद्र सरकार द्वारा साजिश के तहत उनको जेल भेजा गया है।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से केंद्रीय सचिव नंदकिशोर मेहता, केंद्रीय सदस्य समनूर मंसूरी, भुन्नू महतो, जिला सचिव डॉ हेमलाल मेहता, रामगढ़ जिला सचिव विनोद कुमार महतो, जिला उपाध्यक्ष चित्रगुप्त महतो, रांची जिला उपाध्यक्ष अश्विनी शर्मा, रामानंद बेदिया, बीरू साहू, रामगढ़ जिला उपाध्यक्ष मो आजाद अंसारी, महेश ठाकुर, महेंद्र मुंडा, रामशरण तिर्की, अंतू तिर्की, तालकेश्वर महतो, बीरू साहू, अरुण वर्मा, लालजी रमण, आफताब आलम, महावीर विश्वकर्मा, जिला प्रवक्ता अरविन्द सिंह देवल, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष नयन तारा उरांव, कोषाध्यक्ष उषा उरांव, महानगर अध्यक्ष संध्या गुड़िया, जिला संगठन सचिव सुजित उपाध्याय, महिला मोर्चा महानगर उपाध्यक्ष लीना वर्मा, संजय राय, अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष फरीद खान, उपाध्यक्ष परवेज आलम, सचिव सुजित कुजुर, कोषाध्यक्ष विलियम रिचर्ड लकड़ा, अनमोल रतन सांचा, एजाज शाह, क्रीड़ा मोर्चा जिलाध्यक्ष प्रदीप मिर्धा, राजेश सिंह, परविंदर नामधारी, कांके प्रखंड अध्यक्ष जावेद अख्तर अंसारी, सचिव नवीन तिर्की, खेलारी प्रखंड अध्यक्ष अनिल पासवान, चान्हो प्रखंड अध्यक्ष मकेश्वर राम महली, सचिव प्रदीप उरांव, युवा मोर्चा जिला सचिव सोनू मुंडा, संगठन सचिव विश्वजीत गोप, गोपाल पांडे, मंटू पांडे, अख़्तर मंसूरी, अरविंद ठाकुर, साहिल यादव, लक्ष्मण राम, इबादत अंसारी, अरुण तिर्की, कृष्णा तिर्की, राकेश वर्मा, अमन खान, गोलू गोल्डी, गौरव, ओम शर्मा, मुस्लिम अंसारी, मो गुड्डू, राजेश प्रसाद,

2024 में भाजपा का खाता भी नहीं खुलने देंगे

मौके पर रांची जिला अध्यक्ष मुस्ताक आलम ने कहा जिस प्रकार भाजपा और केंद्र ने साजिश करके हमारे युवा मुख्यमंत्री को जेल भेजने का काम किया है।इससे हमारी पार्टी के साथ-साथ झारखंड की जनता भी दुखी है और उनमें आक्रोश है। हम इसी के तहत संयमित माध्यम से इस उपवास कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं। आने वाले 2024 के चुनाव में मैं आपको बता दूं कि झारखंड से भाजपा का खाता भी नहीं खुलेगा।

जदयू राज्य कार्यकारिणी की हुई बैठक

तीन लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का प्रस्ताव

PHOTON NEWS RANCHI : जदयू राज्य कार्यकारिणी की बैठक पुराना विधानसभा परिसर स्थित विधायक क्लब में शुक्रवार को हुई। बैठक में जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का झारखंड में अभिनंदन समारोह, सदस्यता अभियान में तेजी, लोकसभा चुनाव, पार्टी संगठन और विधानसभा चुनावों सहित पांच एजेंडों पर पर चर्चा हुई। सभी ने एक स्वर में प्रस्ताव पारित किया। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद खीरू महतो ने किया। संचालन प्रदेश महासचिव श्रवण कुमार ने किया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि झारखंड में एनडीए गठबंधन के तहत तीन लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का प्रस्ताव पार्टी की राज्य इकाई ने कार्यसमिति की बैठक में लाया है। इससे वह जल्द राष्ट्रीय अध्यक्ष को अवगत करायेंगे। यह लोकसभा सीट हजारीबाग, चतरा एवं धनबाद लोकसभा की होगी।

BRIEF NEWS

जीएसटी चोरी के आरोप में उज्जलपुर में एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान पर छापा

SUNDARGARH : सुंदरगढ़ जिले के उज्जलपुर में बड़े पैमाने पर शुक्रवार को जीएसटी की छापेमारी चल रही है। झारसुगुड़ा जीएसटी इंफोर्समेंट टीम ने सीता ट्रेडर्स नामक व्यापारिक प्रतिष्ठान पर छापेमारी की। टैक्स चोरी को लेकर उक्त व्यावसायिक प्रतिष्ठान के तीन गोदामों, दो दुकानों और आवासों पर छापेमारी की जा रही है। छापेमारी में वाणिज्य विभाग की छह टीमें शामिल हैं। झारसुगुड़ा वाणिज्यिक प्रवर्तन विभाग के सदस्य सतीश जाल के नेतृत्व में छापेमारी जारी है। सीता ट्रेडर्स एंड कॉमर्स लोहे की छड़ें, सीमेंट, सिंथेटिक पेंट, टाइल्स और संगमरमर जैसी गृह निर्माण सामग्री का कारोबार करता है। इस कारोबार में जीएसटी चोरी के अभियोग लगने के बाद यह छापेमारी की गई। छापेमारी में 15 अधिकारी शामिल हैं।

विशेष विकास परिषद ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का किया आयोजन पारंपरिक वाद्ययंत्र किया वितरित

SUNDARGARH : विशेष विकास परिषद, सुंदरगढ़ द्वारा कुमारमुंडा ब्लॉक भाटी मैदान में आदिवासी सांस्कृतिक आभूषण, संगीत वाद्ययंत्र और खेल के सामान का वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम में कुआरमुंडा, नुआगांव ब्लॉक और बीरमित्रपुर नगर पालिका के आदिवासी समूहों को सांस्कृतिक आभूषण, संगीत वाद्ययंत्र और खेल उपकरण वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में कुल 50 टीमों को खेल सामग्री दी गयी, सांस्कृतिक क्षेत्र में 45 दल को दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे श्रम मंत्री सारदा प्रसाद नायक और हॉकी इंडिया सभापति दिलीप तिर्की,विनय टोप्पो, फुलमनी केरकेटा, पूर्व विधायक निहार सुरीन, बीरमित्रपुर नगरपालिका उपाध्यक्ष निवेदिता बागे, जिला परिषद सदस्य राजेंद्र कुजूर, एसडीसी सदस्य हिमांशु पांडा, इम्मा एक्का, पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष, राजेश हासदा, कुना देव, मांकलू एक्का पूर्व अध्यक्ष, युवा नेता तारिक, कार्यकारी अध्यक्ष संबलपुर जोन संध्या लाकरा सभी सरपंच और समिति सदस्य उपस्थित रहे।

ब्रेक फेल होने पर स्कूटी को टक्कर मार दुकान में घुसा पिकअप वैन

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के परसुडीह खासमहल में एक पिकअप स्कूटी सवार को टक्कर मारने के बाद सड़क किनारे नवीन कुमार जैन की दुकान में जा घुसी। इस घटना में स्कूटी सवार दो युवतियों को चोट आई है। घटना के बाद घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है वहीं दुकान के बाहर खड़ी चार गाड़ियों को नुकसान पहुंचा है। दुकान का शेड और दरवाजा भी टूट गया है। घटना के बाद गुस्साए लोगों ने चालक को पिकअप से बाहर निकाला। चालक का कहना था कि उसके पिकअप की ब्रेक फेल हो गई थी जिस कारण कार अनियंत्रित होकर दुकान में घुस गई।

गैंग रेप के आरोप में चार आरोपी धराए दो नाबालिक गए रिमांड होम

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला के बिसरा थाना क्षेत्र में शर्मसार करने वाली दुष्कर्म की घटना सामने आयी है। बिसरा थाना पुलिस ने 23 वर्षीय महिला से गैंग रेप के आरोप में चार आरोपियों को पकड़ा। इनमें दो नाबालिक शामिल हैं जिन्हें बाल सुधार गृह भेजा गया है।

घटना बीते नो तारीख की है। राजगांगपुर थाना क्षेत्र की एक युवती को इंस्टाग्राम के जरिए बिसरा थाना क्षेत्र के एक युवक से प्यार हो गया। 9 तारीख को युवक ने युवती को बिसरा में बुलाया। जब युवती बस से पहुंची तो युवक उसे बाइक पर बैठाकर एक सुनसान ठिकाने पर ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया। बाद में युवक ने अपने तीन और दोस्तों को बुला लिया। 3 युवकों ने युवती के साथ मारपीट और जबरदस्ती यौनाचार किया। बाद में उसने युवती को बाइक में लाकर दूसरी जगह छोड़ दी। युवती ने इसकी जानकारी अपने मामा को दी । युवती द्वारा इस मामले की लिखित में रिपोर्ट बिसरा थाने दिया गया। पुलिस ने घटना की जांच की और दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि दो अन्य को बाल सुधार जेल भेजा गया।

गिरफ्तार आरोपी को ले जाती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

कांग्रेस ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का किया स्वागत, पीएम का फूंका पुतला

PHOTON NEWS SARAIKELA : सुप्रीम कोर्ट द्वारा मोदी सरकार द्वारा पूर्व में चुनावी चंदा उगाही हेतु बनाए गए इलेक्टोरल बॉन्ड कानून को अवैध घोषित करते हुए कानून को रद्द करने की घोषणा का जिला कांग्रेस कमेटी सरायकेला खरसावां स्वागत करती हैं। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अंबुज कुमार ने कहा कि काले कानून के माध्यम से भाजपा एवम् मोदी सरकार द्वारा अब तक वसूले गए 10000 करोड़ से अधिक चुनावी चंदा को सार्वजनिक करे। आज इस मुद्दे को लेकर जिला अध्यक्ष अंबुज कुमार के नेतृत्व में आकाशवाणी चौक पर प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी का पुतला दहन किया। इस मौके पर मोदी सरकार के भ्रष्टाचार में लिप्त होने के आरोप लगाते हुए मोदी सरकार विरोधी नारे भी लगाए गए।

वहीं दूसरी ओर काले कृषि कानून के खिलाफ व न्यूनतम समर्थन मूल्य आदि मांगो को लेकर किसान संगठनों द्वारा आहूत भारत बंद को समर्थन दिया गया। कांग्रेसी अंबुज कुमार के नेतृत्व में आज सड़क पर उतर कर पानदुकान चौक से आकाशवाणी चौक पर सड़क जाम करते हुए बंद को प्रोत्साहित भी किया।

प्रधानमंत्री का पुतला दहन करते कांग्रेसी। ● फोटोन न्यूज

किसानों के भारत बंद के समर्थन में कांग्रेस उतरी सड़क पर, किया पैदल मार्च

PHOTON NEWS CHAIBASA : देश के किसान संगठनों ने शुक्रवार को भारत बंद की घोषणा की है। किसानों का यह राष्ट्रव्यापी बंद कृषि उत्पादो पर न्यूनतम सर्मथन मूल्य की गारंटी, बेरोजगारी एवं केन्द्र सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ है। जिला कांग्रेस कमिटी, पश्चिम सिंहभूम के तत्वाधान में कांग्रेसियों ने देश के अन्नदाताओं द्वारा भारत बंद के आहवान को सर्मथन किया तथा देश भर में आजीविका से जुड़े मुख्य मुद्दों के प्रति जागरूकता लाने हेतु एकजुटता प्रदर्शित किया। कांग्रेसियों ने देश के अन्नदाताओं द्वारा भारत बंद के आहवान को सर्मथन करते हुए शुक्रवार सुबह को कांग्रेस भवन, चाईबासा से शहर में सांकेतिक विरोध करते हुए पैदल मार्च किया।

पैदल मार्च के दौरान कांग्रेसियों ने किसानों के सम्मान में कांग्रेस है। मैदान में हर जोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है। जय जवान जय किसान, नरेन्द्र मोदी मुदार्बाद, अर्जुन मुंडा मुदार्बाद आदि नारेबाजी कर जोरदार प्रदर्शन किया। कांग्रेसियों ने कहा कि जब पिछली बार किसान तीन काले कानूनों को लेकर धरना दे रहे थे। तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनसे माफी मांगते हुए कहा था कि मैं तीनों कानून वापस लेता हूँ। न्यूनतम समर्थन मूल्य की समस्या का समाधान निकालने के लिए जल्द ही एक कमिटी बनेगी। आज इन बातों को दो साल से ऊपर हो गए, कोई कमिटी नहीं बनाई गई।

आज जब किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य को लेकर फिर से धरना दे रहे है, तो उनपर रबर की गोलियां चलाई जा रही है। आंसू गैस के गोले छोड़े जा रहे है, रास्ते में कीलें बिछाई जा रही है। किसानों पर जो अत्याचार और अन्याय भाजपा एवं मोदी सरकार ने किया है, वो आजादी के बाद किसी भी सरकार ने नहीं किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानों से झूठ बोलने, किसानों को आतंकवादी और विदेशी एजेंट कहे जाने के लिए भी मांफी मांगें।

भारत बंद के समर्थन में पैदल मार्च करते कांग्रेसी। ● फोटोन न्यूज

ट्रेड यूनियनों ने नरेंद्र मोदी सरकार के मजदूर विरोधी नीतियों का किया विरोध

PHOTON NEWS SUNDARGARH : सुंदरगढ़ इंडस्ट्रियल मजदूर यूनियन (सीआईएमयू) ने संयुक्त केंद्रीय ट्रेड यूनियनों, किसान संघों और की ओर से मोदी सरकार की मजदूर विरोधी, किसान विरोधी और जन विरोधी नीतियों के खिलाफ देशव्यापी हड़ताल पर विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान औद्योगिक क्षेत्र कलूँगा में एक मोटरसाइकिल रैली का आयोजन किया। रैली सभी कारखानों के सामने से होकर वेदव्यास मार्केट क्षेत्र में घूमी।

वहीं यूनियन में आईडीसी के सामने सड़क को अवरुद्ध किया गया और कर्मचारी मिल स्ट्रीट पर विरोध प्रदर्शन किया। दूसरी तरफ, कुआरमुंडा पुरुना पाणी सड़क को भी अवरुद्ध किया गया। पानपोसा से वेदब्यास क्षेत्र तक सभी दुकानें बंद रहें। संघ ने धरना देकर बंद कराया। बंद को सफल करने के लिए मोटरसाइकिल रैली का शुभारंभ सिमू महासचिव जहांगीर अल्ली ने एसोसिएशन का झंडा फहराकर किया।

रैली में मजदूर नेता अजीत एक्का, सम्बित स्वाई, रंजन बेहरा, क्षीरोद बेहरा, अजीत दास, सुजीत सामल, अनिल साहा, सरोज बारला., भवानी साहू, डी दिबाकर राव, अजीत चांडिल, उमेश सिंह, सुधांशु जेना ने मोर्चा का नेतृत्त किए एशियाटिक गैस की ओर से वेदव्यास, कलिंगा, कुआरमुंडा इलाके की सभी फैक्ट्रियां बंद कर दी गयीं और वेदव्यास इलाके के सभी व्यावसायिक संस्थान बंद कर दिये गये। कलिंगा क्षेत्र में ईसटर्न इकूबमेंट , ईस्टर्न अलॉयज, बार्बरिक स्टील, जयआयरन स्टील एंड कॉर्पोरेशन, राउरकेला स्टील कॉर्पोरेशन और अन्य स्टील मिलों के श्रमिकों ने अपनी-अपनी फैक्ट्रियां बंद कर दीं और आसपास की सभी स्टील मिलों पर धरना दिया। फिर, एक विशाल श्रमिक कार्यकर्ता बाहर आया और आईडीसी कामुंगा में आईएफजीएल रेफ्रेक्ट्रीज लिमिटेड की मुख्य सड़क को पूरी तरह से अवरुद्ध कर दिया।

सीटू के राज्य उपाध्यक्ष जहांगीर अल्ली ने मजदूरों से आह्वान किया कि मोदी सरकार के चार मजदूर विरोधी श्रम संहिताओं को तुरंत वापस लें, मजदूरों का न्यूनतम वेतन रुपये करें।आज की देशव्यापी हड़ताल मोदी सरकार के मजदूर विरोधी के खिलाफ बुलाई गई है। किसान विरोधी और जनविरोधी नीतियों में गैस की कीमतें कम करना, किसानों को न्यूनतम समर्थन दर डेढ़ गुना देना। राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों के निजीकरण को रोकना, बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करना शामिल है।

विरोध प्रदर्शन करते यूनियन के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

मजदूरों का शोषण बर्दाश्त नहीं, होगा चक्का जाम : इंटक

PHOTON NEWS CHAIBASA : बोकारो स्टील वर्कर्स यूनियन इंटक का मिलन समारोह सह वनभोज का आयोजन शुक्रवार को बोकना स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर के समीप कारो नदी के तट पर किया गया। इस मिलन समारोह में गुवा, किरीबुरू, मेघाहातुबुरु, चिड़िया बोकारो स्टील वर्कर्स यूनियन इंटक के पदाधिकारीयों ने भाग लिया। साथ ही विभिन्न संयुक्त यूनियन को भी मिलन समारोह सह वनभोज मैं आमंत्रित किया गया।कार्यक्रम से पूर्व गुवा सेल के मजदूरों को संबोधित करते हुए इंटक के जोनल सेक्रेटरी दुचा टोप्पो ने कहा कि गुवा सेल में जॉइनिंग दूसरों राज्यों से आए 18 लोगों को दी गई है। यह केंद्र सरकार की पॉलिसी या राज्य सरकार की पॉलिसी को कतई हम यूनियन बर्दाश्त नहीं करेंगे। सेल प्रबंधन सबसे पहले यहां के स्थानीय को प्राथमिकता दें।

आज इस सारंडा क्षेत्र में बेरोजगारी अपने चरम सीमा पर है। यहां के ठेका मजदूरों के साथ सेल प्रबंधन शोषण कर रही है। यह हम सभी संयुक्त यूनियन इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे चाहे इसके लिए गुवा सेल खदान का चक्का ही जाम क्यों न करना पड़े। दूसरे राज्यों से आए 18 लोगों को गुवा सेल में जॉइनिंग नहीं दी जाएगी।साथ ही गुवा सेल खदान को केंद्र सरकार निजीकरण करने जा रही है।यहां हरगिज नहीं होने दी जाएगी। इसके लिए हम सब संयुक्त यूनियन एक है। और यह लड़ाई हम सब संयुक्त यूनियन मिलकर सेल प्रबंधन के खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे।

बैठक में उपस्थित यूनियन के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

भारत बंद से राउरकेला में जनजीवन प्रभावित, बस सेवाएं, पेट्रोल पंप रहे बंद

PHOTON NEWS ROURKELA : फसल न्यूनतम गारंटी कानून और 21 अन्य धाराओं की मांग को लेकर शुक्रवार को भारत बंद बुलाया गया था। संयुक्त मोर्चा के बंद आह्वान का असर राउरकेला पर भी पड़ा। सुबह संयुक्त ट्रेड यूनियन की ओर से बिश्रा चौक पर विरोध प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन में यूनाइटेड वर्कर्स यूनियन के नेता बिष्णु मोहंती, वीमान माईती,राज किशोर प्रधान, सतप्रिय मोहंती समेत कई कार्यकर्ता शामिल हुए। बाद में संयुक्त ट्रेड यूनियन की ओर से जुलूस शहर में परिक्रमा किए।

बंद के आह्वान के कारण दुकानें बंद रहे और निजी बस सेवाएं भी बंद रहे। पेट्रोल पंप भी बंद रहे। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए शहर के विभिन्न हिस्सों में प्रशासन द्वारा व्यापक इंतजाम किया गया। शहर के चप्पे चप्पे में पुलिस तैनात थी।

प्रदर्शन करते ट्रेड यूनियन के सदस्य।

टाटानगर लोको शेड में शंटिंग के दौरान चपेट में आया कर्मी, मौत

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के टाटानगर लोको शेड में शंटिंग के दौरान लोको की चपेट में आकर रेलवे कर्मी शिव शंकर बेरा (45) गंभीर रुप से घायल हो गया। घायल अवस्था में कर्मी निक्सन ने अन्य साथियों के साथ मिलकर शिव शंकर को इलाज के लिए तत्काल रेलवे अस्पताल पहुंचाया जहां से उसकी स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने टाटा मोटर्स अस्पताल रेफर कर दिया। हालांकि टाटा मोटर्स अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने जांच के बाद शिव शंकर को मृत घोषित कर दिया। शिव शंकर पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम का रहने वाला था उसने दो माह पूर्व में नौकरी ज्वाइन की थी। वह जमशेदपुर में एक साथी के साथ किराए के मकान में रहता था। घटना की सूचना परिजनों को दे दी गई है। सूचना पर परिजन जमशेदपुर के लिए निकल चुके है।

शंटिंग के दौरान हुआ हादसा:

जानकारी के अनुसार शुक्रवार सुबह लगभग 7।30 बजे शिव शंकर एक लोको की शंटिंग करवा रहा था। इसी दौरान उसने लोको पायलट को पीछे आने का इशारा किया। लोको पायलट ने इंजन को पीछे किया। जब लोको पायलट ने पीछे देखा तो शिव शंकर दिखाई नहीं दिया। लोको पायलट इंजन से उतर गया। उसने पाया कि शिव शंकर जमीन पर घायल अवस्था में गिरा हुआ है। इंजन से टकराने के कारण उसे चोट लगी है। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया पर अस्पताल ले जाने के क्रम में उसकी मौत हो गई।

सांकेतिक तस्वीर।

आस ने विभिन्न मांगों को लेकर किया धरना प्रदर्शन, डीसी के नाम बीडीओ को सौंपा मांग पत्र

PHOTON NEWS CHAIBASA : आदिवासी समन्वय समिति (आस) एवं विभिन्न ग्राम सभाओं के संयुक्त तत्वावधान तथा आस संयोजक सुशील बारला एवं पूर्व विधायक मंगल सिंह बोबोंगा के नेतृत्व में आनन्दपुर प्रखंड कार्यालय में विभिन्न मांगों को लेकर धरना-प्रदर्शन किया गया। इस दौरान बीडीओ को उपायुक्त, पश्चिम सिंहभूम के नाम एक मांग पत्र सौंपा गया। मांगों में आनन्दपुर प्रखण्ड के रूंघीकोचा, हारता एवं रोबकेरा पंचायत के सेविका एवं सहियाओं का प्रशासनिक कार्य गोईलकेरा प्रखण्ड से संचालित है जिसे तत्काल वहाँ से हस्तांनातरित कर आनन्दपुर से ही संचालित किया जाये।

साप्ताहिक बाजार आनन्दपुर को डीएमएफटी मद से सुन्दरीकरण किया जाये। आनन्दपुर प्रखण्ड के सभी उच्च विद्यालयों एवं +2 उच्च विद्यालयों के स्वीकृत पदों में विषयवार शिक्षकों की बहाली की जाय। झारबेड़ा पंचायत के ग्राम सिदुवा पीडब्लूडी सड़क से चिरोमाठा सीमा तक सड़क का निर्माण किया जाये। महिषगाड़ा से अम्बाकोना तक सड़क का निर्माण किया जाय। बिंजु पंचायत ग्राम-रूंधी नया टोला से स्वः बेनेयामिन लुगुन के घर से उड़िसा सीमा तक सड़क का निर्माण। संधी तीन सीमाना से उड़िसा सीमा तक सड़क का निर्माण। आनन्दपुर प्रखण्ड के लिए डीएमएफटी मद से चलंन्त चिकित्सा वाहन एवं चिकित्साकों की व्यवस्था।

काण्डी देवेन्द्र चौक से प्रथामिक विद्यालय काण्डी होते हुए जोम्बेलो तक सड़क का निर्माण। राजस्व ग्राम टोगरीटोला आरईओ पथ किसान टोली से बिंजु मटिया-ईकिर होते हुए ग्राम अनुमदा आरईओ पथ तक सड़क का निर्माण। चोडारप्पा पीपल पेड़ से बुनुमदा बिंजु होते हुए संधी प्रथामिक विद्यालय तक जर्जर सड़क का मरम्मति।

बीडीओ को मांग-पत्र देते आदिवासी समन्वय समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

आंध्र भक्त श्रीराम मंदिर कमेटी का चुनाव कल, एम भाष्कर राव टीम ने गिनाई प्राथमिकता, बोले-

राम मंदिर स्कूल भवन का जीर्णोद्धार प्राथमिकता

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के बिष्टुपुर स्थित आंध्र भक्त श्रीराम मंदिर कमेटी का चुनाव 18 फरवरी को होना है। इसके पूर्व शुक्रवार को एम भाष्कर राव टीम ने एक प्रेस वार्ता कर अपनी प्राथमिकता गिनाई। एम भाष्कर राव ने कहा कि उनकी टीम के चुनाव जीतने के बाद पहली प्राथमिकता परिसर में बने स्कूल भवन का जीणोर्धार करना होगा, जो पिछले 25 सालों से लंबित है। स्कूल भवन की हालत काफी जर्जर है जिसपर किसी का ध्यान नहीं गया। इसके अलावा मंदिर परिसर के पीछे की जमीन पर अवैध कब्जे को मुक्त कराना भी प्राथमिकता में शामिल है।

उन्होंने बताया कि मंदिर की लंबित परियोजना जैसे कि गोपुरम निर्माण, तिरुमाला तिरूपति दर्शन काउंटर को फिर से शुरू करना, अतिरिक्त कमरे के निर्माण द्वारा जमशेदपुर आने वाले आउट स्टेशन सदस्यों के लिए आवास प्रदान करना, मौजूदा कल्याण मंडप मे अधिक कमरों का निर्माण कराया जाएगा ताकि वह अधिक सुविधाजनक हो। मंदिर से जुड़े बुजुर्ग सदस्यों का भी आदर-सम्मान किया जाएगा।

सदस्यों की संख्या 2300, बनेगा महिला विंग

एम भास्कर राव ने बताया कि फिलहाल मंदिर में सदस्यों की संख्या लगभग 2300 है जिसमें 700 सदस्य शहर के बाहर है। इसके अलावा मंदिर कमेटी में एक महिला विंग का भी निर्माण किया जाएगा जिसमें सिर्फ महिलाएं ही शामिल रहेगी। उन्होंने बताया कि हम लोग राम मंदिर और तेलुगु समुदाय के प्रति पारदर्शी सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से राम मंदिर चुनाव मे भाग ले रहे हैं। राम मंदिर तेलुगु समुदाय के लिए एक गौरवपूर्ण और पवित्र स्थान है जिसका इतिहास 100 वर्षो से अधिक पुराना है और हमारा उद्देश्य ऊजार्वान युवाओं को मंदिर गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना है ताकि मंदिर के इतिहास, हमारी संस्कृति और परंपराओं को पूरी तरह से समझ सके और उनका पालन करे। उन्होनें सभी सदस्यों ने निवेदन किया कि उनकी टीम को एक मौका दिया जाए।

बैठक में शामिल कमिटी के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

टिनप्लेट खालसा स्कूल में चला फाइलेरिया मुक्ति अभियान, दवा खाने से दो छात्राएं बीमार

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के टिनप्लेट खालसा स्कूल में फाइलेरिया मुक्ति अभियान चलाया गया। इस दौरान स्कूल के कुल 200 बच्चों को फाइलेरिया और कृमि की दवा खिलाई गई। फाइलेरिया की दवा खाकर दो छात्राओं की तबीयत अचानक बिगड़ गई। तबीयत बिगड़ने के बाद आनन-फानन में दोनों छात्राओं को इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां दोनों को इलाज चल रहा है। दोनों की हालत में सुधार हो रहा है। बीमार हुईं छात्राओं में स्कूल की पांचवीं कक्षा की छात्रा पार्वती और लक्ष्मी शामिल हैं। दोनों जुड़वां बहनें हैं और सिदगोड़ा के लाल भट्टी की रहने वाली हैं।

विभिन्न मांगों को लेकर आशा कर्मियों ने किया प्रदर्शन, पीएम के नाम सौंपा ज्ञापन

PHOTON NEWS ROURKELA : आशा कर्मियों स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर अस्पतालों तक, आशाकर्मी मरीजों की सेवा में लगे रहते है, पर उन्हे पर्याप्त वेतन नहीं मिल रहा है। इसे लेकर आशा कर्मचारियों ने शुक्रवार को प्रदर्शनकारियों ने राउरकेला अतिरिक्त जिलापाल कार्यालय के समक्ष धरना दिया। भले ही वे स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में कई कार्य करने के बाद भी उन्हें प्रति माह 4700 रुपये की प्रोत्साहन राशि मिल रही है। कोविड के दौरान, आशाकर्मियो ने मरीजों की देखभाल के लिए अपनी जान जोखिम में डाली। बार-बार वादे के बाद भी उन्हें अभी तक स्थायी नियुक्ति मे नहीं मिल पाई है।उनकी सेवाओं को न्यूनतम 26,000 रुपये मासिक वेतन के साथ सरकारी नौकरी का दर्जा देने की मांग की गई है। इसके साथ ही कुछ अन्य मांगों को लेकर अपजिलापल के माध्यम से प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजा गया है।

प्रदर्शन में शामिल आशा कर्मी।

हिट एंड रन के खिलाफ दो दिन का चक्का जाम

पटना में सड़क पर उतरें ड्राइवर, जीपीओ गोलंबर से डाकबंगला चौराहे तक निकाला मार्च

एजेंसी

पटना । हिट एंड रन कानून के खिलाफ शुक्रवार और शनिवार पूरे बिहार में ड्राइवरों की स्ट्राइक है। पटना में चक्का जाम का मिला जुला असर देखने को मिल रहा है। प्रदर्शनकारियों ने ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर फेडरेशन के बैनर तले पटना के जीपीओ गोलंबर से डाकबंगला चौक तक मार्च निकाला। इस दौरान अपनी 14 सूत्री मांगों को लेकर डाकबंगला चौराहे पर किसान संगठनों और ट्रेड यूनियन ने प्रदर्शन किया।ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन की ओर से 16 और 17 फरवरी को चक्का जाम का ऐलान किया गया था। इसमें ट्रक ड्राइवर समेत रोड ट्रांसपोर्ट के सभी चालक शामिल हो रहे हैं। ट्रक चालकों को ऑटो चालकों का भी साथ मिला है। कटिहार में भी हड़ताल का व्यापक असर देखने को मिल रहा है।दरअसल, केंद्र सरकार के नए हिट एंड रन कानून में चालक को 10 लाख का जुमार्ना और 7 साल की कैद के प्रावधान का ट्रक चालक विरोध कर रहे हैं। ट्रक चालकों का कहना है कि ये प्रावधान गलत है। ट्रक ड्राइवरों का कहना है कि इतनी राशि हमारे पास होती तो हम ड्राइवर ही क्यों बनते।राजधानी में सामान्य दिनों से आज कम गाड़ियां सड़क पर नजर आ रही हैं। बैरिया बस स्टैंड से बहुत कम बसें हैं, जो खुल रही है। यात्रियों की संख्या भी ना के बराबर है। मैट्रिक परीक्षा को देखते हुए कुछ वाहनों को एग्जाम सेंटर तक जाने की छूट दी गई है।एसोसिएशन का दावा है कि 15 से 20 प्रतिशत ही गाड़ियां चल रही हैं। वो भी निजी हैं। इनमें ज्यादातर मैट्रिक परीक्षार्थियों को लाने और ले जाने वाली हैं।कटिहार में भी हिट एंड रन वाले मुद्दे को लेकर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन ने चक्का जाम हड़ताल किया है। इसका असर शहर में देखने को मिल रहा। लोगों को आवाजाही में परेशानी हो रही है। सड़क पर अगर कोई ई-रिक्शा चल रहा तो उसे रोकने का प्रयास कर रहे हैं।फेडरेशन के बिहार महासचिव राजकुमार झा ने बताया कि दो दिन बिहार में पूरी तरह से हड़ताल है। उन्होंने दावा किया कि शुक्रवार को सिपारा इंडियन ऑयल डिपो से कोई भी टैंकलोरी नहीं खुलेगी। बैरिया बस स्टैंड पूरी तरह से बंद रहेगा। ट्रांसपोर्ट नगर से कोई भी ट्रक चालक ट्रक नहीं निकालेंगे।राजकुमार झा, सदस्य बिजली प्रसाद ने बताया कि शहर के अंदर 15 से 20 प्रतिशत ही गाड़ियां चल रही हैं। केवल मैट्रिक की परीक्षा के चलते यह छूट दी गई है। दो दिन तक पूर्ण रूप से चक्का जाम रहेगा।हड़ताल में शामिल ऑटो, ई-रिक्शा, कैब, ट्रक, बस, लॉरी चालक संघ के द्वारा ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर फेडरेशन के बैनर तले पटना के जीपीओ गोलंबर से पैदल मार्च किया जाएगा।

संक्षिप्त डायरी

करंट लगने से व्यक्ति की मौत

गया । गया जिले के गुरुआ थाना क्षेत्र अंतर्गत भारौंधा गांव में एक युवक की करंट से मौत हो गई। मृतक का शरीर काला पड़ गया था। मृत युवक की पहचान भारोंधा गांव निवासी मृत्युंजय शर्मा के 27 वर्षीय इकलौते बेटे अनुराग कुमार के रूप में हुई है। उसकी शादी दो वर्ष पहले ही हुई थी। अभी उसकी एक वर्ष की छोटी बच्ची है।अनुराग कुमार अपने घर के सामने बिजली के खंभे के पास कुछ काम कर रहा था। इसी क्रम में अर्थिंग वाले तार से उसे करंट लग गया। बताया जा रहा है कि अनुराग गुरुवा बाजार में इलेक्ट्रिक दुकान चलता था। उसकी 2 वर्ष पहले ही शादी हुई थी। वह अपने भाई-बहन में इकलौता था। इस घटना से परिवार में मातम का माहौल है।

नकली टायर ट्यूब बेचने के आरोप में एक गिरफ्तार

गोपालगंज । गोपालगंज के नगर थाना क्षेत्र के थावे रोड स्थित एक दुकान में सीएट कंपनी के नकली टायर ट्यूब बेचने के आरोप में एक को गुरुवार को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। साथ ही 24 नकली टायर ट्यूब बरामद किए हैं। गिरफ्तार अभियुक्त की पहचान शाह आलम के रूप में की गई।बताया जाता है कि नगर थाना क्षेत्र के थावे रोड स्थित एक दुकान में सीएट कंपनी के नकली टायर ट्यूब बेचे जाने की सूचना के बाद पदाधिकारी पश्चिम बंगाल के साउथ परगना के कुपली थाना के जामतला गांव निवासी मधुसूदन दोलई गोपालगंज पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कई दुकानों पर पहुंच कंपनी के टायर ट्यूब की मांग कर जांच की।इसी बीच थावे रोड में स्थित न्यू टायर सेंटर नामक दुकान में कंपनी का नकली टायर ट्यूब को देखकर उन्होंने नगर थाने की पुलिस को सूचना देकर दुकानदार को गिरफ्तार करा दिया। वहीं, गिरफ्तार किए गए दुकानदार शाह आलम से पूछताछ के बाद पुलिस ने दुकान के अंदर से 24 नकली टायर ट्यूब को बरामद कर लिया। नगर थानाध्यक्ष ओम प्रकाश चौहान ने बताया कि कंपनी के पदाधिकारी दुकानों की जांच कर रहे हैं।

107 कार्टन विदेशी शराब के साथ बैलगाड़ी जब्त

गोपालगंज। गोपालगंज के जादोपुर थाना क्षेत्र के पतहरा गंडक नदी के पास से मंगलवार को उत्पाद विभाग टीम ने शराब तस्करी मामले में कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में शराब के साथ एक बैल बैलगाड़ी को बरामद किया था। लेकिन अब ये बैल उत्पाद विभाग के लिए गले की फांस 6 बन गई है।ऐसे में उत्पाद विभाग वैसे लोगों की तालाश में जुट गई है जो तब तक बैल की देखभाल कर सकें जब तक उसका नीलामी ना हो जाए। फिलहाल दोनों बैल को उत्पाद विभाग अपने मालखाना में रख कर उसकी देखभाल कर रहा है।बताया जा रहा है कि मंगलवार को उत्पाद विभाग को सूचना मिली थी की जादोपुर थाना क्षेत्र के पतहरा नदी के पास भारी मात्रा में शराब की जा रही है। प्राप्त सूचना के आधार पर उत्पाद विभाग की टीम मौके पर पहुंची।तभी तस्कर नदी में छलांग लगाकर फरार हो गए। पुलिस ने मौके से 963 लीटर शराब बरामद किया गया है। वहीं एक बैलगाड़ी को भी बरामद किया गया। बता दें की उत्पाद विभाग ने दोनों बैल को स्पेशल कोर्ट में मामले को लेकर पहुंची।मद्य निषेध एवं उत्पाद विभाग की स्पेशल कोर्ट ने उत्पाद विभाग के अधिकारियों को दोनों बैल को किसान को सौंपने को कहा है। फिलहाल दोनों बैल की देखभाल के लिए उत्पाद विभाग किसान को खोज रही है।उत्पाद विभाग के विशेष लोक अभियोजक रविभूषण श्रीवास्तव ने बताया कि बिहार मद्य निषेध कानून धारा-56 में ही जिक्र है, कि ऐसे पशु वाहन या पशु, जिनका उपयोग शराब की ढुलाई में किया जा रहा है, उसे जब्त करना है।उत्पाद विभाग के थाना प्रभारी पियूष कुमार ने बताया की मंगलवार(13) को बैलगाड़ी पर लदे शराब को जब्त किया गया था। फिलहाल दोनों को उत्पाद विभाग के अंडर रखा गया है। कल किसी स्थानीय व्यक्ति को जिम्मेदारी देकर सुपुर्द किया जाएगा।

दो पक्षों के बीच मारपीट में 10 लोग जख्मी

बेगूसराय। बेगूसराय में आपसी विवाद को लेकर दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। इस मारपीट में दोनों ही पक्ष की ओर से 10 लोग गंभीर रूप से घायल हो गया है। इनका इलाज सदर अस्पताल बेगूसराय में चल रहा है। घटना सिंघौल थाना क्षेत्र के रतौली गांव की है। उक्त मामले में जहां एक पक्ष के द्वारा अवैध संबंध की वजह से मारपीट का आरोप लगाया जा रहा है।वहीं, दूसरे पक्ष के लोगों का कहना है कि एक पक्ष के मिथुन कुमार एवं उनके परिवार के लोग शराब का कारोबार करते हैं। आए दिन शराब पीकर हो हंगामा करते हैं ।और इसी बात का विरोध करने पर बीती रात उन लोगों ने मारपीट की घटना को अंजाम दिया है।फिलहाल सभी घायलों का इलाज सदर अस्पताल बेगूसराय में चल रहा है । दोनों ही पक्षों की ओर से सिंघौल थाने में लिखित रूप से आवेदन दी गई है। पुलिस पूरे मामले की छानबीन में जुट गई है।घायलों की पहचान एक पक्ष के रामविलास सिंह, पिंकू देवी ,अवनीश सिंह एवं अन्य लोगों के रूप में किए गए हैं।

गोलीबारी में घायल सरपंच की पत्नी की मौत

सीतामढ़ी । सीतामढी के बेलसंड में गोली बारी में घायल सरपंच की पत्नी ने इलाज के दौरान पटना ढटउल्ह में मौत हो गई है। जिसके बाद पूरे गांव में तनाव का माहौल हैं। जहां घटना के बाद से ही स्थानीय थाना की पुलिस कैंप कर रही हैं। पुलिस पटना से फर्द बयान आने का इंतजार कर रही है।ग्रामीणों के अनुसार बुधवार के देर रात एक बाइक पर दो सवार अपराधी सरपंच नशरूद्दीन राइन के घर का दरवाजा खटखटाया। फिर जैसे ही सरपंच की पत्नी खैरू खातून दरवाजा खोल कर बाहर निकली। इसी बीच अज्ञात लोगों को देख कर घर के अंदर भागने लगी।इसी बीच अपराधियों ने उन्हें गोली मार दी। गोली पीठ में लगी थी। जिसके बाद उनका इलाज पटना पीएमसीएच में चल रहा था। वहीं घटना के बाद बदमाशों ने दरवाजे पर खड़ी दो स्कार्पियो और दो बाइक को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना की जानकारी पर एसडीपीओ के नेतृत्व में पुलिस पहुंचने घर को क्षति होने से बचा लिया गया। फिलहाल घटना के बाद से सभी आरोपी फरार है।सरपंच के पुत्र मो. आसिफ ने बताया कि आरोपी गांव में हथियार लेकर घुमता है। जिसे मैने कई बार समझाया। उसके बाद पुलिस से शिकायत किया। जिस पर पुलिस ने आरोपी को बुलाकर डाट-फटकार किया। जिससे नाराज होकर युवक ने उक्त घटना को अंजाम दिया गया है। फिलहाल शव को पुलिस लाने के लिए पीएमसीएच पहुंची है।

सड़क पर बंद शीशा गाड़ी सेफ नहीं

एजेंसी

पटना। पटना में सड़क पर खड़ी कार का शीशा तोड़ कर चोरी ने कार में रखे पैसा चोरी कर लिए। यह गहरा पटना के बीचों बीच कोतवाली थाना से कुछ कदम दूरी पर हुई। चोरों ने कार में रखे 50 हजार रुपए से भरा बैग ले कर फरार हो गए। पीड़ित कार मालिक जब कार के पास पहुंचे तो देखा कार का शीशा टूटा हुआ है और उसमे रखा पैसों से भरा बैग गायब है। जिसके बाद अज्ञात के खिलाफ कोतवाली थाना में मामला दर्ज कराया गया है।पटना में कोतवाली थाना से कुछ दूरी पर चोरों ने कपड़ा कारोबारी मो.मुजफ्फर आजाद की वर्ना कार का शीशा तोड़कर उसमे रखा बैग उड़ा दिया। उस बैग में 50 हजार कैश रखा हुआ था। घटना कोतवाली थाना के नजदीक तारामंडल के पास देर शाम हुई। आजाद तारामंडल के सामने रविदास आश्रम के पास कार लगाकर पास के कपड़े की दुकान में गए। करीब 50 मिनट के बाद जब वे वहां गए तो देखा कि कार की पीछे का शीशा टूटा हुआ है। पिछली सीट पर रखा बैग गायब है।मो.मुजफ्फर आजाद ने इस घटना के तुरंत बाद कोतवाली थाना पहुंचे। थाना में जानकारी देते हुए अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कराया। आजाद मूलतः समनपुरा में रहते हैं। तारामंडल के पास ही उनकी जींस की दुकान है। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की छानबीन कर रही है।

प्रतिमा विसर्जन के दौरान दो पक्षों में झड़प

एजेंसी

सीतामढ़ी। सीतामढी के परिहार थाना क्षेत्र के मसहा टोला वार्ड नंबर 3 में गुरुवार की रात को सरस्वती प्रतिमा विसर्जन के दौरान दो गुटों में झड़प हो गया। इस दौरान दोनों ओर से रोड़ेबाजी भी हुई। इस घटना में कुछ लोगों के घायल होने की सूचना है। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। सूचना पर थानाध्यक्ष राजकुमार गौतम ने मामले को संभाल लिया। स्थिति फिलहाल नियंत्रण में बताया जा रहा है। मौके पर सुरसंड इंस्पेक्टर के साथ पुलिस बल तैनात है।वही, थानाध्यक्ष ने रोड़ेबाजी की घटना से इनकार किया। उन्होंने कहा कि किसी के घायल होने की भी अब तक सूचना नहीं है। थानाध्यक्ष ने कहा की स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। जानकारी के मुताबिक रामनैका की ओर से प्रतिमा विसर्जन के लिए जुलूस आ रही थी।मसहा तीन टोलवा में पहुंचने पर अचानक से पत्थर बाजी शुरू हो गई। जिसके बाद माहौल बिगड़ गया। हालांकि सूचना पर तुरंत पुलिस मौके पर पहुंची और मामले को शांत कराया। जिसके बाद विसर्जन जुलूस को आगे बढ़ाया गया।बतादे की जिले में सरस्वती पूजा का आयोजन सौहार्दपूर्ण एवं शांतिपूर्ण वातावरण में किया गया है। गुरुवार को अधिकांश मूर्तियों का विसर्जन की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है। शेष बची हुई मूर्तियों का विसर्जन शुक्रवार को सौहार्दपूर्ण एवं शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न होगी।वही, कन्हौली थानांतर्गत ग्राम मुंहचट्टी में दो पक्षों में गहमा गहमी की बात सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी। जिसपर एसडीपीओ सदर रामकृष्णा ने बताया की सोशल मीडिया के माध्यम से एक भ्रामक एवं तथ्यहीन खबर फैलाई जा रही है कि कन्हौली थानांतर्गत ग्राम मुंहचट्टी में स्थिति तनावपूर्ण है। ऐसी कोई मामला नहीं है।

हेलमेट नहीं पहना तो बेगूसराय पुलिस ने फोड़ डाली आंख

एजेंसी

बेगूसराय । बेगूसराय में हेलमेट नहीं पहनने पर पुलिस जवान ने एक मजदूर की आंख फोड़ दी। मजदूर की आंख पूरी तरह से डैमेज हो चुकी है। उसे दिखाई नहीं दे रहा है। इलाज के लिए उसे दरभंगा रेफर किया गया है।पीड़ित का नाम प्रदीप कुमार (25) है, जो समस्तीपुर के हिरमिया गांव का रहने वाला है। वह बेगूसराय के गढ़पुरा थाना क्षेत्र के हरकपुरा में अपनी बहन के घर रहता है। वहां वह मजदूरी करता है।प्रदीप अपने भांजे दीपक कुमार के साथ गुरुवार को बाइक से घर लौट रहा था। दोनों बिना हेलमेट के हरकपूरा जा रहे थे। पुलिस ने दोनों को रोका। वो रुक ही रहे थे कि एक जवान ने प्रदीप की आंख में डंडा मार दिया। उसकी आंख से खून बहने लगा। घटना छौराही थाना क्षेत्र के रामपुर की है।पीड़ित ने बताया कि मैं अपने भांजे के साथ गाड़ी से जा रहा था। हमने हेलमेट नहीं पहना था। पुलिस चेकिंग कर रही थी। पुलिस वालों ने हमें रोकने के लिए बोला हम रुक ही रहे थे कि पुलिस वाले ने डंडा मार दिया। मेरी आंख से खून निकलने लगा। मुझे आंख से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।दीपक कुमार ने बताया कि मैं मामा को छोड़ने के लिए बाइक से जा रहे थे। पुलिस वाले ने स्लो करने को बोला। हम रोक ही रहे थे। पुलिस वाले ने डंडा मार दिया। आंख पर चोट लगी। खून निकलने लगा। मैंने पुलिस वालों से पूछा क्यों मारा। इसके बाद हम थाने गए कोई कार्रवाई नहीं हुई। पुलिस वालों ने उस सिपाही को भगा दिया।
फिलहाल पीड़ित का इलाज छौराही पीएचसी में करवाया गया। जहां से प्रदीप कुमार की हालत को देखते हुए चिकित्सकों ने सदर अस्पताल बेगूसराय के लिए रेफर कर दिया है।इस मामले में मंझौल डीएसपी श्याम किशोर रंजन ने बताया है कि जब छौड़ाही थाने की पुलिस ने बाइक चेकिंग अभियान चलाया था। इस दौरान बाइक पर सवार दो युवक जा रहे थे। दोनों युवक को बाइक रोकने के लिए पुलिस ने कहा, लेकिन दोनों बाइक लेकर भागने लगे।

केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी, धरना-प्रदर्शन

नालंदा। नालंदा में किसान, मजदूर और संविदा कर्मियों की समस्याओं को लेकर राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दौरान विभिन्न संगठनों ने बिहारशरीफ के श्रम कल्याण केंद्र के मैदान में शुक्रवार को धरना-प्रदर्शन करते हुए केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।संघ के सदस्यों ने कहा कि जब से केंद्र में बीजेपी की सरकार आई है तब से सरकारी कर्मियों का पेंशन खत्म कर दिया गया। किसानों की फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं दिया जा रहा है। ना ही किसानों और मजदूरों के कर्ज को माफ किया जा रहा है। आशा, आंगनबाड़ी, रसोइया, ग्राम सहायक सभी सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों में बहाली खत्म कर संविदा पर लोगों को बहाल किया जा रहा है। ऐसी कई मांगे हैं जो उन सभी लोगों की जरूरत है।जब तक कर्मियों को पुरानी पेंशन योजना और ठेका प्रथा पर बहाली को खत्म नहीं किया जाता है तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा।इसी तरह बिहार शरीफ सदर अस्पताल परिसर में नियमित बहाली, पुरानी पेंशन योजना समिति मांगों को लेकर बिहार चिकित्सा और जन स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के सदस्यों ने सिविल सर्जन के समक्ष प्रदर्शन कर अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा।

ट्रेड यूनियन संगठनों ने निकाला विरोध मार्च

पटना । केंद्रीय ट्रेड यूनियन संगठनों और संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर देशव्यापी हड़ताल और ग्रामीण बंद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसे लेकर यूनियन के कार्यकताओं ने फुलवारी शरीफ और संपतचक प्रखंड मुख्यालय का घेराव किया। इससे पहले विरोध मार्च निकाला गया था। जो फुलवारी शरीफ और संपतचक के कई गांव होते हुए प्रखंड मुख्यालय तक पहुंचा।इस मौके पर सभा को संबोधित करते हुए स्थानीय विधायक गोपाल रविदास ने कहा कि केंद्र सरकार मजदूर और किसान विरोधी है। सरकार की गलत नीतियों के कारण आज पूरा देश महंगाई का दंश झेल रहा है। जहां एक तरफ गैस, डीजल के दाम आसमान छू रहे हैं, वहीं मजदूरों को उनके काम का सही मजदूरी नहीं मिल पा रहा है।मनरेगा के तहत काम करने वाले मजदूरों की दैनिक मजदूरी 600 रुपए होनी चाहिए। इसके साथ ही खाद्य सुरक्षा की गारंटी, जन वितरण प्रणाली को सर्वव्यापी बनाने, बिहार में कृषि मंडी को चालू करने, सभी किसानों को और मजदूरों को प्रति माह 5000 रुपए पेंशन देने, ठेका बंद करने, बंद पड़े चीनी मिल को चालू करने की मांग की है।

चुनाव नजदीक आते ही एक्टीव हुए सांसद

एजेंसी

समस्तीपुर। समस्तीपुर में लोकसभा चुनाव नजदीक आते ही स्थानीय सांसद एक्टीव हो गए हैं। गुरुवार रात करीब 11 बजे अचानक भोला टॉकी रेलवे गुमटी पर पहुंच कर निर्माण स्थल का जायजा लिया। रेलवे गुमटी पर सांसद प्रिंस राज करीब 10 मिनट के लिए रुके। इस दौरान आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच कर फ्लाई ओवर जल्द निर्माण कराने की मांग की। जिस पर उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया कि अब बिहार और केंद्र दोनों स्थान पर एनडीए सरकार है। कुछ तकनीकी समस्या है जिसे दूर कर निर्माण कार्य जल्द शुरू किया जाएगा।कहा कि मुक्तापुर रेलवे गुमटी पर निर्माण की एजेंसी बदली है जिससे कार्य में देरी हो रही है। नई कार्य एजेंसी अब अपने हिसाब से नई डीपीओर बनाएगी तक जाकर निर्माण कार्य शुरू होगा।करीब दो दशक से शहर के भोला टॉकीज रेलवे गुमटी पर फ्लाई ओवर निर्माण की मांग लोग कर रहे हैं। तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद ने पुल निर्माण की स्वीकृति प्रदान की थी। शुरू में इस पुल को रेलवे का निर्माण विभाग बनाने वाली थी। बाद में इसके कार्य एजेंसी को बदल कर राज्य पुल निगम को जिम्मेवारी सौंपी गई है। लेकिन बार-बार डीपीओर बदले जाने के कारण अबतक पुल के निर्माण की स्वीकृति प्रदान नही हो पाई है। जिससे पुल का निर्माण अधर में लटका है। फ्लाई ओवर निर्माण के लिए पथ निर्माण विभाग ने रेलवे मुख्यालय हाजीपुर को एक डीपीआर सौपां हैं। जिसमें पुल के निर्माण पर करीब 40 लाख रुपए का बजट बनाया है।राज्य पुल निगम द्वारा हाजीपुर रेलवे मुख्यालय को सौंपे गए नक्शे में पुल की चौड़ाई साढे सात मीटर की है। सड़क 25 फीट चौड़ी टू वे होगी। इसके अलावा ताजपुर रोड में गुमटी के दोनों ताजपुर और बाजार की ओर 300 मीटर आगे तक पुल का ढलान होगा। इसी तरह पूसा रोड में भी धरमपुर चौक के पास पुल से लोग नीचे उतर पाएंगे। इसके अलावे पुल के पहुंच पथ के दोनों ओर लोगों के आने जाने के लिए सड़क व नाला बनेगा। जरूरत पड़ी तो जमीन का अधिग्रहण भी होगा।शहर के भोला टॉकीज रेलवे गुमटी पर कभी-कभी जाम के कारण गेट मैन चाह कर भी गुमटी को बंद नहीं कर पाता। जिससे अकसर आउटर सिगनल पर ट्रेन फंसी रहती है। गुमटी बंद करने के लिए पुलिस को भी मदद लेनी पड़ती है। आए दिन गेट मैन के साथ भी मारपीट की घटना हो चुकी है। वहीं, अक्सर वाहन चालक गुमटी का बुम तक तोड़ देते हैं।53 नंबर गुमटी समस्तीपुर- मुजफ्फरपुर रेल खंड पर है। सामान्य दिनों में रोजाना 70 मेल व एक्सप्रेस ट्रेनें चलती है। इसके अलावा 30-40 माल ट्रेन व पैसेंजर ट्रेनें भी चलती है। हर पांच से दस मिनट के बाद गुमटी को बंद करना पड़ता है। इससे दिनभर जाम लगा रहता है।

चंदे पर सवाल

इलेक्टोरल बॉन्ड पर आया फैसला जितना प्रभावी है, उतना ही विचारणीय भी। सर्वोच्च न्यायालय की पांच जजों की पीठ ने गुरुवार को चुनावी बॉन्ड योजना को असांविधानिक करार दिया। भारतीय सियासत के लिए यह एक बड़ा फैसला है। आने वाले समय में न केवल इलेक्टोरल बॉन्ड के स्वरूप, बल्कि चुनावी चंदे के तौर-तरीकों में भी बदलाव आना तय है। वैसे सरकार इलेक्टोरल बॉन्ड के किसी स्वरूप को बनाए रखने के लिए कोई विधिगत परिवर्तन करे, तो आश्चर्य नहीं। हालांकि, जब चुनाव करीब हैं, तब इसमें किसी भी तरह के परिवर्तन के लिए रास्ता संभव करना आसान नहीं है। फिलहाल, यह इतिहास में दर्ज हो चुका है कि भारत के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने पर्याप्त सुनवाई और विमर्श के बाद अपना दोटूक फैसला सुना दिया है। पीठ में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बीआर गवई, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे, सभी ने इस योजना को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सर्वसम्मति से फैसले सुनाए हैं, अतः अदालत का रुख स्पष्ट रूप से सामने आ गया है। अदालत के अनुसार, राजनीतिक दल चुनावी प्रक्रिया में प्रासंगिक इकाइयां हैं। पारदर्शी निर्वाचन के लिए राजनीतिक दलों की फंडिंग की जानकारी बेहद जरूरी है। इस मोर्चे पर चुनावी बॉन्ड योजना सूचना के अधिकार और अनुच्छेद 19(1)(ए) के भी प्रतिकूल है। यह संदेह बहुत पुराना है कि राजनीतिक दल अगर चाहें, तो किसी काम के बदले किसी से चंदा ले सकते हैं। ऐसा नहीं है कि हर चंदे के पीछे ऐसी भावना होती है, पर कुछ चंदों पर इसलिए भी शंका होती है, क्योंकि धन लेने या देने वाले पर्याप्त पारदर्शिता से काम नहीं लेते हैं। मोटे तौर पर इलेक्टोरल बॉन्ड से शिकायत की भी यह बड़ी वजह है। न्यायालय चंदे के मामले में गोपनीयता के पक्ष में नहीं है। यह तथ्य है कि 2018 के बाद से गुमनाम दानदाताओं ने चुनावी बॉन्ड के माध्यम से भारत में राजनीतिक दलों को लगभग 16,000 करोड़ रुपये का योगदान दिया है। यहां इस बात के विस्तार में जाना बहुत जरूरी नहीं है कि ऐसी किसी भी योजना का सर्वाधिक लाभ सत्ताधारी पार्टी को होता है। साल 2013 के पहले कांग्रेस जब सत्ता में थी, तब उसके पास सर्वाधिक धन एकत्र होता था और वित्त वर्ष 2013-14 में भाजपा कुल 673.8 करोड़ रुपये के धन के साथ, कांग्रेस को मिले 598 करोड़ रुपये से आगे निकल गई। अब यहां से आगे की राह सरकार को निकालनी है। किसी भी लोकतंत्र में अधिक से अधिक पारदर्शिता की ओर बढ़ना सराहनीय ही कहा जाएगा। वैसे, सर्वोच्च न्यायालय के निदेशों को मानना किसी भी पार्टी के लिए आसान नहीं होगा। जब चुनाव का एलान होना है, तब कोई भी दल अपने खजाने को घटाना नहीं चाहेगा। कुछ बड़े सवाल खड़े हो गए हैं। जो लोग भारी-भरकम खर्च के साथ अपनी पार्टी को मैदान में जमाए हुए हैं, उनके लिए चिंता बहुत बढ़ गई है। क्या 15 दिन की वैधता अवधि के भीतर सियासी दल अपने चुनावी बॉन्ड खरीदारों को वापस कर पाएंगे?

खेती के मसले पर सहमति

हजारों की तादाद में पंजाब के किसान हरियाणा की सीमा पर तीन स्थानों पर इकट्ठा हुए हैं, जहां उन्हें दिल्ली की तरफ मार्च करने से रोक दिया गया है। प्रदर्शनकारी फसलों के लिए कानूनी रूप से गारंटीकृत न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), कर्ज माफी, कृषि क्षेत्र को प्रभावित करने वाले अंतरराष्ट्रीय समझौतों को रद्द करने और किसानों व खेत मजदूरों के लिए न्यूनतम 5,000 रुपये की पेंशन की मांग कर रहे हैं। इनमें से कुछ मांगें 2021-22 में उनके पहले विरोध प्रदर्शन के दौरान भी उठाई गई थीं। उस विरोध प्रदर्शन को भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में सुधार से संबंधित तीन विवादास्पद कानूनों को वापस लेने के बाद खत्म कर दिया गया था। इस बार विरोध की अगुवाई एसकेएम (गैर-राजनीतिक) द्वारा की जा रही है, जो उस संगठन से अलग हुआ एक समूह है जिसने पहले विरोध का नेतृत्व किया था। यह टूट हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के संबंधित हित समूहों में दरार का प्रतीक है। कम से कम तीन अन्य किस्म के विरोध प्रदर्शन जोर पकड़ रहे हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जेवर हवाईअड्डा परियोजना और यमुना एक्सप्रेसवे से प्रभावित किसान रोष में हैं। हरियाणा के सोनीपत में किसान बिजली केबल के लिए भूमि अधिग्रहण का विरोध कर रहे हैं। मूल एसकेएम और कई ट्रेड यूनियनों ने परस्पर जुड़े एवं अतिरिक्त मांगों, जिसमें चार श्रम संहिताओं को निरस्त करना शामिल है, के साथ 16 फरवरी को राष्ट्रीय ग्रामीण एवं औद्योगिक हड़ताल का आह्वान किया है। सरकार ने पंजाब के किसानों के साथ बातचीत शुरू कर दी है, लेकिन एमएसपी की कानूनी गारंटी की संभावना नहीं दिख रही है। हरियाणा और दिल्ली में पुलिस ने किसानों को दिल्ली से 200 किलोमीटर से ज्यादा दूर रोक दिया है क्योंकि वे इस बात को लेकर दृढ़ हैं कि किसानों को राष्ट्रीय राजधानी की सीमा के करीब नहीं फटकने दिया जाएगा जहां उन्होंने 2021-22 में घेरा डाल दिया था। एफसीआई द्वारा एमएसपी-आधारित खरीद खाद्य सुरक्षा का आधार रही है, लेकिन इसमें सुधार का तर्क मजबूत है। अनाज के अधिशेष उत्पादकों को एमएसपी योजना से लाभ हुआ है, लेकिन यह योजना गरीब इलाकों में निर्वाह करने वाले किसानों को नजरअंदाज कर देती है।

'एक राष्ट्र एक चुनाव' बड़ा विचार-बड़ा सुधार

ANALYSIS

✍ मुकुंद

वर्ष 1967 तक 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की अवधारणा के तहत देश में चुनाव हुए हैं, लेकिन कार्यकाल समाप्त होने से पहले राज्यों की विधानसभा और लोकसभा के बार-बार भंग होने के कारण यह सिलसिला थम गया। इसके बावजूद लोकसभा चुनाव के साथ कुछ राज्यों मसलन आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम के विधानसभा चुनाव अभी भी साथ होते हैं। आज 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की अवधारणा कुछ कारणों से अपरिहार्य हो गई है। केंद्र सरकार कुछ समय पहले इस संबंध में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति का गठन कर चुकी है। यह समिति इस संबंध में व्यापक मंथन कर रही है। इस अवधारणा पर अगस्त 2018 में जारी विधि आयोग की एक मसौदा रिपोर्ट बेहद महत्वपूर्ण है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के अभ्यास से सार्वजनिक धन की बचत होगी। प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा बलों पर पड़ने वाले तनाव को कम किया जा सकेगा। इससे सरकारी नीतियों का समय पर कार्यान्वयन संभव होगा। चुनाव प्रचार के बजाय विकास गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न प्रशासनिक सुधार किए जा सकेंगे। यहां यह महत्वपूर्ण है कि संविधान के अनुच्छेद 83(2) और अनुच्छेद 172 में कहा गया है कि लोकसभा और राज्यों की विधानसभा का कार्यकाल पांच वर्ष का होगा।

देश में गंभीर तार्किक एवं अन्य चुनौतियों के बावजूद लोकसभा और राज्यों के विधानसभा चुनाव एक साथ कराने का विचार दशकों से चर्चा के केंद्र में है। इसका मकसद भारतीय चुनाव चक्र की अनावश्यक पुनरावृत्ति को रोकना है। हालांकि वर्ष 1967 तक 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की अवधारणा के तहत देश में चुनाव हुए हैं, लेकिन कार्यकाल समाप्त होने से पहले राज्यों की विधानसभा और लोकसभा के बार-बार भंग होने के कारण यह सिलसिला थम गया। इसके बावजूद लोकसभा चुनाव के साथ कुछ राज्यों मसलन आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम के विधानसभा चुनाव अभी भी साथ होते हैं। आज 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की अवधारणा कुछ कारणों से अपरिहार्य हो गई है। केंद्र सरकार कुछ समय पहले इस संबंध में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति का गठन कर चुकी है। यह समिति इस संबंध में व्यापक मंथन कर रही है। इस अवधारणा पर अगस्त 2018 में जारी विधि आयोग की एक मसौदा रिपोर्ट बेहद महत्वपूर्ण है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के अभ्यास से सार्वजनिक धन की बचत होगी। प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा बलों पर पड़ने वाले तनाव को कम किया जा सकेगा। इससे सरकारी नीतियों का समय पर कार्यान्वयन संभव होगा। चुनाव प्रचार के बजाय विकास गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न प्रशासनिक सुधार किए जा सकेंगे। यहां यह महत्वपूर्ण है कि संविधान के अनुच्छेद 83(2) और अनुच्छेद 172 में कहा गया है कि लोकसभा और राज्यों की विधानसभा का कार्यकाल पांच वर्ष का होगा। इसमें जरूरी यह है कि यदि इन्हें पहले भंग न किया जाए। मगर अनुच्छेद 356 के तहत ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो सकती हैं जिसमें विधानसभाएं पहले भी भंग की जा सकती हैं। इसलिए कार्यकाल पूरा होने से पहले केंद्र अथवा राज्य सरकार के गिरने की स्थिति में इस योजना की व्यवहार्यता सबसे अहम प्रश्न है। चुनाव विशेषज्ञ मानते हैं कि इस बदलाव के लिए संविधान में संशोधन करने से न केवल विभिन्न स्थितियों और प्रावधानों पर व्यापक तौर पर विचार करने की आवश्यकता होगी, बल्कि ऐसे बदलाव भविष्य में किसी प्रकार के संवैधानिक संशोधनों के लिए एक मिसाल भी साबित हो सकते हैं। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि बार-बार होने वाले चुनाव के वर्तमान स्वरूप को लोकतंत्र में अधिक लाभकारी के तौर पर देखा जा सकता है, क्योंकि यह मतदाताओं की आवाज को बुलंद करता है। केंद्र और राज्यों के मुद्दे अलग-अलग होते हैं। इसलिए वर्तमान ढांचा अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करता है। माना जा रहा है कि एक साथ चुनाव के लिए लगभग 30 लाख इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और वोटर-वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) मशीनों की आवश्यकता होगी। भारत निर्वाचन आयोग वर्ष 2015 में सरकार को एक व्यवहार्यता रिपोर्ट सौंप चुका है। इसमें संविधान और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 में संशोधन का सुझाव दिया जा चुका है। आयोग ने रिपोर्ट में कहा कि एक साथ चुनाव कराने के लिए पर्याप्त बजट की आवश्यकता होगी। यही नहीं, 15 वर्ष बाद मशीनों को बदलने की अतिरिक्त लागत के साथ ईवीएम और वीवीपीएटी की खरीद के लिए लगभग 9,284.15 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। मशीनों की भंडारण लागत में भी वृद्धि होगी। इस अवधारणा पर कुछ राजनीतिक दलों का तर्क है कि यह मतदाताओं के व्यवहार को इस तरह से प्रभावित कर सकता है कि मतदाता राज्य चुनाव के लिए भी राष्ट्रीय मुद्दों को केंद्र में रखकर मतदान करेंगे। इससे बड़े राष्ट्रीय दल, राज्य विधानसभा और लोकसभा दोनों चुनाव में जीत हासिल कर सकते हैं और इस तरह क्षेत्रीय दलों के हाशिये पर चले जाने की संभावना बढ़ जाएगी। यहां यह जानना जरूरी है कि कई देशों में इसी अवधारणा के तहत चुनाव होते हैं। दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय और प्रांतों की विधानसभा के चुनाव पांच साल के लिए एक साथ होते हैं। स्वीडन में राष्ट्रीय विधायिका और प्रांतीय विधायिका और स्थानीय निकाय चुनाव चार साल के लिए एक निश्चित तिथि यानी सितंबर के दूसरे रविवार को होते हैं। लेकिन अधिकांश अन्य बड़े लोकतांत्रिक देशों में एक साथ चुनाव की ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। ब्रिटेन में ब्रिटिश संसद और उसके कार्यकाल को स्थिरता प्रदान करने के लिए निश्चित अवधि संसद अधिनियम, 2011 पारित किया गया था। इसमें प्रावधान था कि पहला चुनाव सात मई, 2015 को और उसके बाद हर पांचवें वर्ष मई के पहले गुरुवार को होगा। देश में 'एक राष्ट्र एक चुनाव' वक्त की फौरी जरूरत है। इसलिए सभी राजनीतिक दलों को कम से कम इस मुद्दे पर विचार-विमर्श में सहयोग करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की केंद्र सरकार तो अपना धर्म निभा चुकी है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की अध्यक्षता में गठित उच्च स्तरीय समिति ने विचार-विमर्श शुरू कर दिया है। कोविन्द और समिति के सदस्यों एनके सिंह, डॉ. सुभाष कश्यप और संजय कोठारी ने कल (14 फरवरी, 2024) देश के कुछ प्रमुख अर्थशास्त्रियों से मुलाकात कर विचार-विमर्श किया। 15वें वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एनके सिंह और आईएमएफ के सिस्टमिक डिवीजन इश्यूज की प्रमुख डॉ. प्राची मिश्रा ने ₹मेक्रोइकोनॉमिक्स इम्पैक्ट ऑफ हामोर्नाइजिंग इलेक्ट्रोरल साइकल्स₹ शीर्षक से तैयार एक पेपर कुछ अरसा पहले इस समिति के समक्ष प्रस्तुत किया था। इसमें कहा गया है कि खर्चों के अलावा, दोहराए जाने वाले खर्चों के व्यापक आर्थिक प्रभाव भी होते हैं। इनमें निवेशकों और अन्य सामाजिक हितधारकों के मन की अनिश्चितता के अलावा जीडीपी वृद्धि, निवेश, विस्तारित सार्वजनिक व्यय, राजकोषीय घाटा, शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी निष्कर्ष और कानून व्यवस्था जैसे मुद्दे शामिल हैं। समिति ने इस पेपर पर प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की प्रतिक्रिया जानने के लिए विचार-मंथन सत्र का आयोजन किया। इस मंथन में आर्थिक विकास संस्थान के निदेशक प्रो. चेतन घाटे, भारतीय अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद के निदेशक डॉ. दीपक मिश्रा, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च की अनिवासी मानद प्रतिष्ठित फेलो प्रो. इंदिरा राजारमन, नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च की महानिदेशक डॉ. पूनम गुप्ता, एमेरिटस के अध्यक्ष और सेंटर फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक प्रोग्रेस के प्रतिष्ठित फेलो डॉ. राकेश मोहन, सीआईआई के नामित अध्यक्ष संजीव पुरी, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की सदस्य डॉ. शमिका रवि और डॉ. सुरजीत एस. भल्ला, टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादक सिद्धार्थ, इंडियन एक्सप्रेस के संपादक वैद्यनाथन अय्यर, सीआईआई के उप महानिदेशक मारुत सेन गुप्ता और सुश्री अमिता सरकार के अलावा सीआईआई के कार्यकारी निदेशक बिनॉय जॉब ने हिस्सा लिया। इस समिति ने ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल-मुस्लिमीन के अध्यक्ष और संसद सदस्य असदुद्दीन ओवैसी से बातचीत कर उनकी पार्टी का पक्ष जाना। समिति ने राज्य चुनाव आयुक्तों के साथ परामर्श का क्रम जारी रखते हुए गुजरात के चुनाव आयुक्त संजय प्रसाद से भी चर्चा की। प्रसाद ने राज्य विधानसभा और लोकसभा के साथ-साथ स्थानीय निकाय चुनाव कराने के लिए आवश्यक विधायी आवश्यकता को रेखांकित किया। उम्मीद की जानी चाहिए यह समिति जल्द ही अपनी रिपोर्ट केंद्र को सौंप देगी।

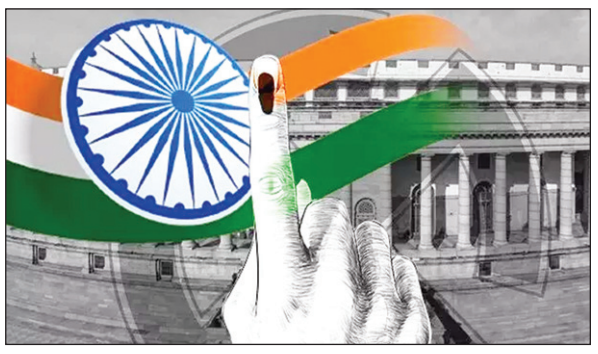

लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।

कोटा से कैसे मिटेगा आत्महत्याओं का कलंक?

कोटा में एक बार फिर कोचिंग स्टूडेंट के सुसाइड का मामला सामने आया है। छत्तीसगढ़ का रहने वाला स्टूडेंट शुभकुमार चौधरी (16) ने सोमवार रात फंदे पर लटककर जान दे दी। डीएसपी भवानी सिंह ने बताया कि स्टूडेंट 12वीं में पढ़ाई करता था। सोमवार रात जेईई की रिजल्ट आया। सुबह उसने पैरेंट्स का फोन नहीं उठाया तब वार्डन को कॉल किया। वार्डन ने गेट को धक्का देकर खोला तो स्टूडेंट पंखे पर लटका हुआ था। इस साल कोटा में सुसाइड का यह चौथा मामला है। दो फरवरी को गोंडा के नूर मोहम्मद (27), 31 जनवरी को कोटा के बोरखेड़ा की निहारिका (18) और 24 जनवरी को मुरादाबाद के मोहमद जैद (19) ने आत्महत्या की थी। राजस्थान का कोटा शहर देश में कोचिंग का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहां प्रतिवर्ष लाखों छात्र कोचिंग करने के लिए आते हैं। इससे कोचिंग संचालकों को सालाना कई हजार करोड़ रुपये की आय होती है। हालांकि कोटा आने वाले सभी छात्र मेडिकल व इंजीनियरिंग परीक्षा में सफल नहीं होते हैं। मगर देश की शीर्षस्थ मेडिकल व इंजीनियरिंग संस्थानों में चयनित होने वाले छात्रों में कोटा के छात्रों की संख्या काफी होती है। इसी कारण अभिभावक अपने बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं। कोचिंग के बड़े केंद्र कोटा में पढ़ने वाले छात्रों द्वारा की जा रही आत्महत्या की घटनाएं शहर के दामन पर दाग लगा रही है। वर्ष 2012 से अब तक यहां 148 छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। कोटा में कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई करने वाले छात्रों द्वारा लगातार की जा रही आत्महत्या की घटनाओं से पूरा देश सकते में है। सरकार व प्रशासन द्वारा लाख प्रयासों के उपरांत भी कोटा के छात्रों में यह प्रवृत्ति नहीं रुक रही। इसके लिए मुख्य कारण छात्रों पर पढ़ाई करने के लिए पड़ने वाला मनोवैज्ञानिक दबाव को माना जा रहा है। कोटा में कोचिंग लेने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष लाखों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। बहुत से छात्रों के अभिभावकों की स्थिति इतना खर्च वहन करने की नहीं होती है। यहां पढ़ने वाले छात्रों में अधिकांश मध्यमवर्गीय परिवारों से होते हैं। उनके अभिभावक आर्थिक रूप से अधिक सक्षम नहीं होते हैं। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए वह लोग विभिन्न स्तरों पर पैसों की व्यवस्था कर बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं। यहां आने वाले छात्रों को पता होता है कि उनके अभिभावकों ने कितनी मुश्किल से कोचिंग लेने के लिए उन्हें कोटा भेजा है। ऐसे में यदि वह सफल नहीं होंगे तो उनके अभिभावक जिंदगी भर कर्ज में दबे रह जाएंगे। यही सोचकर छात्र हमेशा मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करता रहता है। इसके अलावा यहां पढ़ने वाले छात्रों पर पढ़ाई का भी बहुत अधिक दबाव रहता है। यहां के कोचिंग संस्थानों में कई शिफ्टों में अलग-अलग बैच में पढ़ाई होती हैं। यहां पढ़ने वाले छात्रों पर मेडिकल या इंजीनियर की परीक्षा में अच्छे नंबर हासिल करने को लेकर अभिभावकों व कोचिंग संस्थानों का दबाव होता है। कोचिंग संस्थान भी अच्छा परिणाम दिखाने के चक्कर में छात्रों को मशीन बनाकर रख देते हैं। छात्रों पर हर दिन पढ़ाई का दबाव बना रहता है तथा साप्ताहिक टेस्ट पास करने के चक्कर में छात्र दिन-रात पढ़ाई करते रहते हैं, जिससे ना तो उनकी नींद पूरी हो पाती है ना ही वह मानसिक रूप से आराम कर पाते हैं। ऐसे में छात्र जल्दी उठकर कोचिंग संस्थान में जाकर पढ़ाई करने व दिनभर पढ़ाई में व्यस्त रहने के कारण वह तनाव में आ जाता है। बाहर से आने वाले बहुत से छात्र पढ़ाई में पिछड़ जाने के डर से आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं। कोटा कभी राजस्थान का बड़ा औद्योगिक नगर होता था। मगर श्रमिक आंदोलनों के चलते यहां के उद्योग-धंधे बंद होते गए। आज कोटा में नाम मात्र के ही उद्योग रह गए हैं। 1990 के दौरान कोटा शहर में कोचिंग संस्थान खुलने लगे थे। 2005 तक यहां बड़ी संख्या में कोचिंग संस्थान स्थापित हो गए, जिनमें प्रतिवर्ष लाखों छात्र पढ़ने लगे। आज कोटा शहर की पूरी अर्थव्यवस्था इन कोचिंग संस्थानों पर ही निर्भर है। शहर के हर चौक-चौराहों पर छात्रों की सफलता से अटे पड़े बड़े-बड़े होर्डिंग्स बताते हैं कि अब कोटा में कोचिंग ही सब कुछ है। यह सही है कि कोटा में सफलता की दर तीस प्रतिशत से उपर रहती है। देश के इंजीनियरिंग और मेडिकल के प्रतियोगी परीक्षाओं में टॉप टेन में पांच छात्र कोटा के रहते हैं। मगर उसके साथ ही कोटा में एक बड़ी संख्या उन छात्रों की भी है जो असफल हो जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक कोटा के कोचिंग मार्केट का सालाना आठ हजार करोड़ का टर्नओवर है। कोचिंग सेन्टरों द्वारा सरकार को सालाना 500-700 करोड़ रुपये से अधिक टैक्स के तौर पर दिया जाता है। कोटा में देश के तमाम नामी संस्थानों से लेकर छोटे-मोटे 200 कोचिंग संस्थान चल रहे हैं। यहां तक कि दिल्ली, मुंबई के साथ ही कई विदेशी कोचिंग संस्थाएं भी कोटा में अपना सेंटर खोल रही हैं। लगभग ढाई लाख छात्र इन संस्थानों से कोचिंग ले रहे हैं। कोटा में सफलता की बड़ी वजह यहां के शिक्षक हैं। आईआईटी और एम्स जैसे इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेजों में पढने वाले छात्र बड़ी-बड़ी कम्पनियों और अस्पतालों की नौकरियां छोडकर यहां के कोचिंग संस्थाओं में पढ़ा रहे हैं। तनख्वाह ज्यादा होने से कोटा शहर में 75 से ज्यादा आईआईटी पास छात्र पढ़ा रहे हैं। कोटा में बढ़ती आत्महत्याओं की घटनाओं से चिंतित सरकार हरकत में आई है। कोटा में कोचिंग करने वाले छात्रों के लिए अलग से पुलिस थाना खोला गया है। हॉस्टल के कमरों में ऐसे पंखे लगाए गए हैं जिन पर यदि कोई लटकने की कोशिश करेगा तो उस पर लगी डिवाइस में लगा सायरन बजने लगेगा। सरकार ने छात्रों के मानसिक तनाव के विस्तृत अध्ययन के लिए मनोचिकित्सकों की एक टीम भी बनाई है जो छात्रों से मिलकर आत्महत्याओं के कारणों की जांच करेगी।

Social Media Corner

सच के हक में...

पीएम विश्वकर्मा योजना से देशभर में लाखों लाभार्थी जुड़ रहे हैं। हरियाणा के हमारे विश्वकर्मा साथियों को भी इसका बहुत लाभ हुआ है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

दिल्ली के अलीपुर में एक फैक्ट्री में आग लगने से अनेक लोगों की मृत्यु होने का समाचार अत्यंत दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करती हूं और घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।

(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का 'एक्स' पर पोस्ट)

झारखंड में सभी महिलाओं एवं एससी- एसटी वर्ग के पुरुषों के लिए पेंशन की उम्र सीमा घटा कर 50 वर्ष कर दी गई है। हमारा प्रयास है कि ये लोग बिना किसी पर निर्भर हुए सम्मानजनक जीवन जी सकें। आगामी 20 फरवरी से राज्य भर में अभियान चला कर, ऐसे आवेदकों को सर्वजन पेंशन योजना से जोड़ा जायेगा।

(सीएम चंपाई सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)

कैंसर के नाम पर फूहड़ मजाक अक्षम्य है

शिराली मात्र 36 वर्ष की थीं, जब सर्वाइकल कैंसर से उनकी मौत हो गयी। वे भारत की उन 77,348 महिलाओं में से एक थीं जिनकी मौत 2022 में सर्वाइकल कैंसर से हुई। उनका कैंसर उसी वर्ष डायग्नोस हुआ और वे जिंदगी की जंग कुछ ही महीने में हार गयीं। उस वर्ष भारत में सर्वाइकल कैंसर के कुल 1,23,907 मामले रजिस्टर्ड हुए थे। उनकी मौत से पहले के 48 घंटे काफी कष्ट में गुजरे। वे वेंटिलेटर पर पड़ी रहीं। खाना-पानी तो सप्ताह भर पहले से बंद था। हीमोग्लोबिन छह से भी कम हो गया। सोडियम, पोटैशियम समेत शरीर के लिए जरूरी सभी आवश्यक तत्व अपने न्यूनतम स्तर से काफी नीचे चले गये। ऑक्सीजन का सेचुरेशन गिरने लगा। मरते समय वे अपने सात वर्ष के इकलौते बेटे को भी नहीं देख सकीं। शिराली एक छद्म नाम है, जो मैंने वास्तविक पहचान गोपनीय रखने के वास्ते बदल दिया है। उनसे मेरी भेंट अस्पताल आते-जाते हुई थी। वह कब पारिवारिक पहचान में बदल गयी, इसका आभास ही नहीं हुआ, क्योंकि हमारी पीड़ा एक-सी थी। पर अब मैं जिस नाम का उल्लेख करने जा रहा हूं, उसे बदलने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि उन्हें अपनी पहचान नहीं छिपानी। वे बड़े गर्व (फूहड़ता) से अपने नाम की मुनादी करती हुई दावा कर रही हैं कि वे सर्वाइकल कैंसर की जागरूकता के अभियान में शामिल हैं। यह नाम है, पूनम पांडेय। मायानगरी मुंबई में रहने वाली एक मॉडल। उनका दावा है कि उनकी मां को भी कैंसर था। लिहाजा वे कैंसर की पीड़ा समझती हैं। यदि यह सच है, तो मुझे और मुझ जैसे लाखों लोगों को उनकी समझ पर तरस आता है। ईश्वर उन्हें क्षमा करें, सही समझ दें और भगवान न करे कि उन्हें कभी कैंसर हो। उनकी मां भी हमेशा स्वस्थ रहें। उनके कैंसर का रिकरेंस न हो। परंतु, क्या पूनम पांडेय की फूहड़ता क्षमा लायक है। अपनी सस्ती पब्लिसिटी के लिए कैंसर से स्वयं की मौत की अफवाह फैला पूनम ने उन डेढ़ करोड़ भारतीयों का अपमान किया है, जिनकी मौत 2000 से 2022 के बीच कैंसर की वजह से हो गयी। पूनम ने यह पब्लिसिटी स्टंट एक आर्थिक मॉडल वाली मीडिया कंपनी की पार्टनरशिप में किया और बड़ी बेशर्मी से उसे जागरूकता का नाम दे दिया। विश्व कैंसर दिवस से महज दो दिन पहले सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता के नाम पर औसत दर्जे की मॉडल पूनम ने जिस फूहड़ता का परिचय दिया, उसे बेशर्मी कहने के लिए शिराली जैसी महिलाओं की कहानियों से गुजरना होगा, जो पूनम के वश की बात नहीं। उस पब्लिसिटी स्टंट के बाद उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर जिन सोशल मीडिया पोस्ट के स्क्रीन शॉट्स लगाकर अपनी फूहड़ता को जायज ठहराने की कोशिश की है, उससे साफ है कि उन्हें अपने किये का कोई अफसोस नहीं। पूनम जी, इस देश में हर वर्ष 14 लाख लोगों को कैंसर डायग्नोस होता है। इसके करीब आधे लोग हर वर्ष कैंसर से मर भी जाते हैं। जो जीवित बचते हैं, उनमें से किसी की जीभ काट ली जाती है, तो किसी के मुंह का एक हिस्सा कटा होता है। किसी की टांग कटी होती है, तो किसी का थायरॉयड निकाल लिया जाता है। किसी की फूड पाइप, तो किसी की पूरी ओवरी या ब्रेस्ट। इसके बाद भी रिकरेंस का डर बना रहता है। आपको शायद फुर्सत नहीं हो। कभी फुर्सत मिले तो मुंबई में अपनी गाड़ी कभी मनीषा कोइराला के घर की तरफ मोड़ लीजियेगा (बशर्ते वो आपको मिलने का समय दें), जिनकी ओवरी काटकर निकालनी पड़ी। कभी महिमा चौधरी, लीजा रे जैसी बहादुर महिलाओं से भी बात करने की कोशिश कीजियेगा। शायद आपको कैंसर के दर्द का वास्तविक अहसास हो। आप अपनी मौत की अफवाह उड़ाती हैं। मुझसे जानिए मौत क्या होती है, इसका डर क्या होता है। मैं कैंसर के अंतिम स्टेज का मरीज हूं। अब तक 52 बार कीमोथेरेपी हुई है।

पाकिस्तान में उथल-पुथल

पाकिस्तान में 8 फरवरी को कराये गये चुनाव बराबरी के स्तर वाले नहीं थे। यकीनन सबसे लोकप्रिय राजनेता पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान मई 2023 से जेल में बंद हैं, कई मुकदमों का सामना कर रहे हैं और सजा काट रहे हैं। उनकी पार्टी, पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) को मतपत्र पर अपने चुनाव चिन्ह का इस्तेमाल करने से रोक दिया गया। लिहाजा, पार्टी को निर्दलीय उम्मीदवारों को मैदान में उतारने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसके कई नेता जहां जेल में हैं या भागे हुए हैं, वहीं कई अन्य नेताओं को राजनीति छोड़ने या किसी अन्य पार्टी में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। चुनावों से पहले पाकिस्तान ताकतवर हलकों द्वारा श्री खान के राजनीतिक वाहन को नष्ट करने की व्यवस्थित प्रयासों से रूबरू रहा। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-एन (पीएमएल-एन) के नेता नवाज शरीफ, जो कभी सेना के दुश्मन थे, लंदन में निर्वासन से लौटे। उन्होंने सत्ता प्रतिष्ठान के आशीर्वाद से अपनी पार्टी के चुनाव अभियान की अगुवाई की। लेकिन मतदाताओं ने जनरलों की इस सोच को गलत साबित कर दिया कि उनके ये उपाय पीटीआई के राजनीतिक प्रभाव को नष्ट कर देंगे और उनके अपने पसंदीदा लोगों को सत्ता में पहुंचा देंगे। निर्दलियों ने 265 सीटों में से 101 सीटें जीतीं (93 पीटीआई से जुड़े उम्मीदवारों के खाते में गईं), पीएमएल-एन ने 75 सीटें हासिल कीं, जबकि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) ने 54 सीटें जीतीं और कराची स्थित मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट-पाकिस्तान ने 17 सीटें जीतीं। सरकार बनाने के लिए 134 सीटें चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि पीटीआई, जिसके निर्दलीय उम्मीदवार सबसे बड़ा गुट हैं, अगली सरकार बनाने में समर्थ होंगे। जब यह स्पष्ट हो गया कि किसी भी गुट के पास पूर्ण बहुमत नहीं है, तो नवाज शरीफ ने पीटीआई को छोड़कर, सभी पार्टियों से एकता सरकार बनाने का आह्वान किया।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899 Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

जनवरी में उड़ानों की देरी से पांच लाख यात्री प्रभावित हुए: डीजीसीए

मुंबई ।

इस साल जनवरी में उड़ानों में देरी होने से 4.82 लाख यात्रियों पर असर पड़ा है, जिसके मुआवजे के तौर पर एयरलाइन कंपनियों को 3.69 करोड़ रुपये का भुगतान करना पड़ा। मासिक हवाई यातायात आंकड़ों से यह जानकारी सामने आई है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की तरफ से जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक जनवरी में घरेलू यात्रियों की संख्या पिछले साल के इसी महीने की तुलना में 4.69 प्रतिशत बढ़कर 1.31 करोड़ हो गई। जनवरी, 2023 में घरेलू यात्री यातायात 1.25 करोड़ रहा था। आंकड़ों के अनुसार पिछले महीने उड़ानों में देरी के अलावा विभिन्न एयरलाइंस ने 1,374 यात्रियों को विमान में सवार होने से रोक दिया था।

इसकी वजह से वैकल्पिक उड़ानों के इंतजाम और ठहरने एवं खानपान सुविधा देने पर 1.28 करोड़ रुपये खर्च हुए। डीजीसीए के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी में उड़ानों के रद्द होने पर एयरलाइंस ने 68,362 यात्रियों को रिफंड और दोबारा बुकिंग की पेशकश के साथ 1.43 करोड़ रुपये भी हर्जाने के तौर पर दिए। घरेलू यात्री यातायात के मोर्चे पर पिछले महीने इंडिगो ने 79.09 लाख यात्रियों के साथ 60.2 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल की। इसके बाद 15.97 लाख यात्रियों के साथ एयर इंडिया की 12.2 प्रतिशत हिस्सेदारी रही।

इंडिया यामाहा मोटर तीन लाख स्कूटर वापस मंगाएगी

नई दिल्ली ।

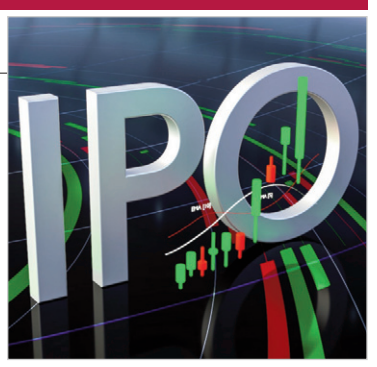

इंडिया यामाहा मोटर ब्रेक के कलपुर्जे को ठीक करने के लिए अपने 125 सीसी स्कूटर मॉडल रे जेडआर 125 एफआई हाइब्रिड और फैसिनो 125 एफआई हाइब्रिड की लगभग तीन लाख इकाइयां वापस मंगाएगी। दोपहिया वाहन बनाने वाली जापान की कंपनी ने कहा कि वह एक जनवरी, 2022 से चार जनवरी, 2024 के बीच विनिर्मित स्कूटर इकाइयों को तत्काल प्रभाव से वापस मंगा रही है। कंपनी ने कहा कि वह उत्पादों की उच्च गुणवत्ता और सुरक्षा मानक को लेकर प्रतिबद्ध है। इसी के तहत इंडिया यामाहा मोटर (आईवाईएम) ने स्वैच्छिक रूप से 125 सीसी के स्कूटरों की लगभग 3,00,000 इकाइयों को वापस मंगाने की घोषणा की है। बयान के अनुसार वाहन वापस मंगाने का उद्देश्य रे जेडआर 125 एफआई हाइब्रिड और फैसिनो 125 एफआई हाइब्रिड स्कूटर मॉडल (जनवरी 2022 के बाद के मॉडल) की चुनिंदा इकाइयों में ब्रेक लीवर के काम करने से जुड़ी समस्या का हल करना है। आईवाईएम ने कहा कि संबंधित ग्राहकों को कलपुर्जे मुफ्त उपलब्ध कराए जा रहे हैं। ग्राहक वाहन वापस मंगाये जाने की पात्रता के बारे में जानने के लिए कंपनी की वेबसाइट के सेवा अनुभाग पर जा सकते हैं और अपने चेसिस नंबर का विवरण दर्ज कर सकते हैं। इसके अलावा ग्राहक मदद के लिए समीप के यामाहा सेवा केंद्र पर जा सकते हैं।

ब्लूस्टोन ज्वैलरी अपना आईपीओ जल्द लाएगी

नई दिल्ली ।

टाटा समूह के अध्यक्ष रतन टाटा और ज़ेरोधा के सह-संस्थापक निखिल कामथ के निवेश वाली ज्वेलरी कंपनी स्टोन ज्वैलरी अपना आईपीओ लाने पर विचार कर रही है। इस आईपीओ के माध्यम से कंपनी ने लगभग 2,000 करोड़ जुटाने की योजना बनाई है। ऑनलाइन-फर्स्ट ज्वैलर आईपीओ के लिए निवेश बैंकरों से प्रस्ताव मांग रहा है, जिसमें 10-15 प्रतिशत हिस्सेदारी को कम करने की संभावना है, जिसमें शेयरों का एक नया मुद्दा और बिक्री के लिए प्रस्ताव (ओएफएस) शामिल है। बताया जा रहा है कि कंपनी ने शुरुआत में 2022 में सार्वजनिक होने की योजना बनाई थी, लेकिन योजनाओं को स्थगित कर दिया और इसके बजाय निजी इक्विटी (पीई) फर्मों से धन जुटाया। पिछले साल ब्लूस्टोन ने निखिल कामथ, रंजन पई, अमित जैन, दीपिंदर गोयल और 360 वन जैसे पुराने और नए निवेशकों से मिलकर 550 करोड़ का निवेश आकर्षित किया, जिससे शुद्ध मूल्यांकन 440 मिलियन के करीब पहुंच गया। रिपोर्ट के अनुसार, हीरो एंटरप्राइज के सुनील कांत मुंजाल के नेतृत्व में 2022 में 30 मिलियन डॉलर के फंडिंग राउंड के बाद कंपनी का मूल्य 410 मिलियन डॉलर आंका गया। टाइटन के तनिष्क ब्रांड, कल्याण ज्वैलर्स और नव सार्वजनिक सेनको गोल्ड जैसे सूचीबद्ध दिग्गजों के साथ, ब्लूस्टोन खुद को उद्योग में एक अग्रणी दावेदार के रूप में स्थापित कर रहा है। सेनको इस क्षेत्र की नवीनतम सूचीबद्ध इकाई, वर्तमान में 5,908 करोड़ के मूल्यांकन पर कारोबार कर रही है, जो पिछले साल जुलाई में इसके आईपीओ मूल्य से 141 प्रतिशत प्रीमियम है। वर्तमान में ब्लूस्टोन के देश भर में 180 से अधिक बिक्री केंद्र हैं और यह 8,000 से अधिक अद्वितीय आभूषण डिजाइनों की एक विस्तृत सूची प्रदान करता है। कंपनी की मुंबई, जयपुर और अन्य स्थानों पर आभूषण निर्माण इकाइयां हैं।

कच्चे तेल में तेजी, पेट्रोल और डीजल भी महंगा

- ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 1 डॉलर बढ़कर 82.86 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर गिरावट आने के बाद शुक्रवार को 1 डॉलर से ज्यादा का उछाल दिख रहा है। इसका असर शुक्रवार को सरकारी तेल कंपनियों की ओर से जारी पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर भी दिख रहा है। शुक्रवार को यूपी, बिहार और पंजाब सहित देश के तमाम राज्यों में तेल की कीमतों में बदलाव हुआ है। हालांकि, दिल्ली-मुंबई जैसे देश के चारों महानगरों में कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार पंजाब के अमृतसर में पेट्रोल 18 पैसे महंगा होकर 98.44 रुपये लीटर हो गया है। यहां डीजल भी 17 पैसे चढ़ा और 88.76 रुपये लीटर बिक रहा है। यूपी मेरठ में पेट्रोल 23 पैसे महंगा होकर 96.46 रुपये लीटर तो डीजल 22 पैसे चढ़कर 89.64 रुपये लीटर हो गया है। इसके अलावा बिहार के गया शहर में पेट्रोल 30 पैसे सस्ता हुआ और 108.31 रुपये लीटर पहुंच गया है, जबकि डीजल 27 पैसे गिरावट के साथ 95.04 रुपये लीटर बिक रहा है। ग्लोबल मार्केट में एक दिन पहले सस्ता हुआ क्रूड ऑयल फिर 1 डॉलर से ज्यादा के उछाल पर है। ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 1 डॉलर बढ़कर 82.86 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। डब्ल्यूटीआई भी बढ़त के साथ 78.11 डॉलर प्रति बैरल के भाव पहुंच गया है। दिल्ली पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, अमृतसर में पेट्रोल 98.44 रुपये और डीजल 88.76 रुपये प्रति लीटर हो गया है। मेरठ में पेट्रोल 96.46 रुपये और डीजल 89.64 रुपये प्रति लीटर हो गया है। गया में पेट्रोल 108.31 रुपये और डीजल 95.04 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

पेटीएम पेमेंट्स बैंक अब 15 मार्च तक स्वीकार कर सकेगा जमा

मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड के जमा स्वीकार करने पर रोक लागू करने की समय सीमा 15 दिन बढ़ा दी है। अब रोक 1 मार्च की जगह 16 मार्च से प्रभावी होगी। आरबीआई ने कहा कि पीपीबीएल के ग्राहकों (व्यापारियों सहित) के हितों को ध्यान में रखते हुए समय सीमा बढ़ाई गई है। आरबीआई के आदेश में कहा गया है, ÷15 मार्च 2024 के बाद किसी भी ब्याज, कैशबैक, पार्टनर बैंकों से स्वीप इन या रिफंड के अलावा किसी भी ग्राहक खाते, प्रीपेड उपकरण, वॉलेट, फास्टैग, नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड आदि में कोई और जमा या क्रेडिट लेनदेन या टॉपअप की अनुमति नहीं दी जाएगी (29 फरवरी, 2024 की पूर्व निर्धारित समयसीमा से विस्तारित)। पहले 31 जनवरी को जारी आदेश के अनुरूप, इसके ग्राहकों द्वारा बचत बैंक खाते, चालू खाते, प्रीपेड उपकरण, फास्टैग, नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड आदि सहित अपने खातों से शेष राशि की निकासी या उपयोग की अनुमति उनके उपलब्ध शेष तक बिना किसी प्रतिबंध के होगी। फंड ट्रांसफर जैसी बैंकिंग सेवाएं (एईपीएस, आईएमपीएस इत्यादि जैसी सेवाओं के नाम और प्रकृति के बावजूद), बीबीपीओयू और यूपीआई सुविधा बैंक द्वारा 15 मार्च 2024 के बाद भी प्रदान की जाएगी। हालाँकि, ग्राहकों या वॉलेट धारकों द्वारा उपलब्ध शेष राशि की निकासी या उपयोग के उद्देश्य से, एईपीएस, आईएमपीएस और यूपीआई सहित ऐसे फंड ट्रांसफर की अनुमति किसी भी समय दी जा सकती है।

कार्लाइल ने यस बैंक में 1.3 फीसदी हिस्सेदारी बेची

नई दिल्ली । वैश्विक निवेश फर्म द कार्लाइल ग्रुप ने खुले बाजार लेनदेन के जरिये निजी क्षेत्र के ऋणदाता यस बैंक में 1,057 करोड़ रुपये में अपनी 1.3 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच दी है। अमेरिका के समूह ने अपने सहयोगी सीए बास्क इन्वेस्टमेंट्स के माध्यम से बीएसई पर निजी क्षेत्र के ऋणदाता यस बैंक के 39 करोड़ शेयर बेचे। बीएसई पर उपलब्ध सौदे के आंकड़ों के अनुसार सीए बास्क इन्वेस्टमेंट्स ने यस बैंक में 1.35 प्रतिशत हिस्सेदारी के बराबर 39 करोड़ शेयर बेचे। प्रत्येक शेयर का निपटान औसतन 27.10 रुपये की कीमत पर किया गया, जिससे सौदे का मूल्य 1,056.90 करोड़ रुपये बैठता है। इस सौदे के बाद कार्लाइल समूह की यस बैंक में हिस्सेदारी 6.43 प्रतिशत से घटकर 5.08 प्रतिशत रह गई है। इस बीच मॉर्गन स्टेनली एशिया सिंगापुर ने यस बैंक में 30.63 करोड़ से अधिक शेयरों का अधिग्रहण किया है, जो 1.06 प्रतिशत हिस्सेदारी के समान है।

भारत का रुख स्वास्थ्य जरुरतों के साथ नवाचार संतुलित करना: रिपोर्ट

नई दिल्ली ।

प्रस्तावित व्यापार समझौतों में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और दवा क्षेत्र के मुद्दों पर भारत का रुख सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करता है। सस्ती दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और जेनेरिक दवा उद्योग के विकास को बढ़ावा देता है। एक रिपोर्ट में यह बात कही गई। शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) की रिपोर्ट के अनुसार मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में डेटा विशिष्टता और पेटेंट लिंकेज जैसे मुद्दों पर विकसित देशों की मांगों का विरोध करके भारत यह सुनिश्चित करता है कि जेनेरिक दवा निर्माताओं को अधिक बाजार पहुंच मिले और जीवन रक्षक दवाओं की लागत काफी कम हो जाए। जीटीआरआई ने ककि` कि भारत का दृष्टिकोण सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करने, अपने विकासात्मक लक्ष्यों के साथ संरेखित करने के लिए टीआरआईपीएस की मजबूत व्याख्या को अपनाने और विशेष रूप से दवा क्षेत्र में अनुचित एकाधिकार की स्थापना को रोकने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। यह मुद्दा महत्वपूर्ण है क्योंकि विकसित देश हमेशा भारत जैसे विकासशील देशों पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित पहलुओं (टीआरआईपी) समझौते के तहत सहमत आईपीआर मामलों को लेकर एफटीए में दबाव बनाते हैं। व्यापार की भाषा में इसे टीआरआईपीएस-प्लस कहा जाता है।

भारत ने चीन, वियतनाम से सोलर ग्लास आयात की डंपिंग रोधी जांच शुरू की

नई दिल्ली । भारत ने चीन और वियतनाम से कुछ सोलर ग्लास के आयात के खिलाफ डंपिंग रोधी जांच शुरू की है। वाणिज्य मंत्रालय की जांच शाखा व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) चीन और वियतनाम में बने टेक्सचर्ड टेम्पर्ड कोटेड और अनकोटेड ग्लास की कथित डंपिंग की जांच कर रही है। इस उत्पाद को बाजार में सोलर ग्लास या सोलर फोटोवोल्टिक ग्लास जैसे विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। घरेलू उद्योग की ओर से बोरोसिल रिन्यूएबल्स लिमिटेड ने जांच और आयात पर उचित डंपिंग रोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन दायर किया है। अधिसूचना के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा प्रमाणित आवेदन के आधार पर और आवेदक द्वारा डंपिंग तथा घरेलू उद्योग को इससे नुकसान होने के संबंध में आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य से संतुष्ट होने के बाद प्राधिकरण कथित डंपिंग के मामले में डंपिंग रोधी जांच शुरू करता है। इसमें कहा गया कि यदि डंपिंग से घरेलू कंपनियों को वास्तविक क्षति होने की पुष्टि होती है, तो डीजीटीआर आयात पर डंपिंग रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करेगा। वित्त मंत्रालय शुल्क लगाने के संबंध में अंतिम निर्णय लेगा। सस्ते आयात में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योगों को नुकसान हुआ है या नहीं यह निर्धारित करने के लिए देशों द्वारा डंपिंग रोधी जांच की जाती है। जांच में नुकसान की पुष्टि होने पर कोई देश जिनेवा स्थित विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के बहुपक्षीय शासन के तहत ये शुल्क लगा सकता है। चीन समेत विभिन्न देशों से सस्ता आयात रोकने के लिए भारत पहले ही कई उत्पादों पर डंपिंग रोधी शुल्क लगा चुका है।

असम को जल्द मिलेगा चिप पैकेजिंग प्लांट: राजीव चंद्रशेखर

नई दिल्ली ।

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने असम में 25,000 करोड़ रुपये की लागत वाले सेमीकंडक्टर पैकेजिंग संयंत्र का ऐलान करते हुए कहा कि असम को जल्द ही 25,000 करोड़ रुपये का सेमीकंडक्टर पैकेजिंग संयंत्र मिलने वाला है। यह टाटा का प्रस्ताव है, जिसका आकलन किया जाना है। चंद्रशेखर ने हाल ही में गुवाहाटी में डिजिटल इंडिया फ्यूचर स्किल्स समिट में यह बात कही। पिछले साल दिसंबर में असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने राज्य में सेमीकंडक्टर इकाई के लिए टाटा समूह की निवेश योजनाओं का खुलासा किया था। एक्स पर एक पोस्ट में शर्मा ने कहा था, टाटा ग्रुप ने 40,000 करोड़ रुपये के निवेश के साथ असम में सेमीकंडक्टर प्रोसेसिंग संयंत्र के लिए आवेदन किया है। इससे बड़ा बदलाव होगा। निवेश की यह घोषणा पिछले साल अगस्त में राज्य के मंत्रिमंडल द्वारा सेमीकंडक्टर नीति को मंजूरी देने के बाद की गई थी। चंद्रशेखर ने गुवाहाटी में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी तथा नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स ऐंड आईटी (एनआईईएलआईटी) के सहयोग से आयोजित डिजिटल इंडिया फ्यूचर स्किल समिट के पहले संस्करण में अपने संबोधन के दौरान यह घोषणा की। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक इस शिखर सम्मेलन में एनआईईएलआईटी और इंटेल, एचसीएल, माइक्रोसॉफ्ट, किंडराइल, आईआईएम रायपुर, आईआईटीएम ग्वालियर, विप्रो और अन्य कंपनियों के बीच 20 से अधिक रणनीतिक सहयोग होंगे।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को बढ़त पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी रहने से आया है। इस दौरान एलएंडटी , इन्फोसिस और महिंद्रा एंड महीना के शेयर ऊपर आये।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 376.26 अंक करीब 0.52 फीसदी बढ़कर 72,426.64 पर बंद हुआ। सेंसेक्स 72,545.33 के उच्च और 72,218.10 के निचले स्तर तक पहुंचा।

वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 129.95 अंक तकरीबन 0.59 फीसदी बढ़कर 22,040.70 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स में विप्रो का शेयर सबये ज्यादा 4.79 फीसदी बढ़कर सबसे अधिक लाभ के साथ बंद हुआ। इसके अलाव एमएंडएम, एलएंडटी, टाटा मोटर्स, मारुति, इंफोसिस, नेस्ले इंडिया और इंडसइंड बैंक के शेयर भी लाभ में रहे।

वहीं महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर 5 फीसदी से अधिक बढ़े। इनकी कीमतें 5 फीसदी से ज्यादा बढ़कर 52 सप्ताह के शीर्ष स्तर पर पहुंच गयीं। वहीं दूसरी ओर पावरग्रिड, एसबीआई, रिलायंस, एनटीपीसी और एक्सिस बैंक के शेयर गिरावट के साथ ही बंद हुए।

इससे अलावा बजाज ऑटो और मारुति सूजुकी के शेयर बढ़े हैं। दोनों कंपनियों के शेयरों ने आज 1 साल के रिकॉर्ड तोड़ते हुए जबरदस्त बढ़त दर्ज की। इसके शेयर एनएसई पर 2.72 फीसदी की बढ़त के साथ 8,344 रुपये पर बंद हुए जबकि मारुति के शेयर भी 52 सप्ताह का रिकॉर्ड तड़ते हुए 11,480 रुपये पर पहुंच गए। एशियाई बाजारों में जापान का

निक्केई, हांगकांग का हैंग सेंग और दक्षिण कोरिया का कोस्पी लाभ के साथ बंद हुए। वहीं गत दिवस अमेरिकी शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुए। इससे पहले गत सप्ताह भी बाजार बढ़त पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह कारोबारी दिन बाजार की शुरुआत मजबूत हुई है। एनएसई का निफ्टी 96 अंक बढ़कर 22,000 के पार खुला। हालांकि बाद में थोड़ा लुढ़क कर 21989 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। जबकि सेंसेक्स करीब 373 अंक ऊपर खुलकर 72269 के लेवल पर कारोबार करता नजर आ रहा था। बीपीसीएल, एमएंडएम, टाटा मोटर्स, हीरो मोटो और हिंडाल्को के शेयर तेजी के साथ कारोबार करते हुए दिखाई दिए।

गोफर्स्ट के लिए स्पाइसजेट के सीएमडी और बिजी बी एयरवेज ने संयुक्त रूप से लगाई बोली

नई दिल्ली ।

स्पाइसजेट के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक और बिजी बी एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड ने संयुक्त रूप से नकदी संकट से जूझ रही गोफर्स्ट के लिए बोली लगाई है।

स्पाइसजेट के एक अधिकारी ने बताया कि उसके अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने बिजी बी एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड के साथ अपनी व्यक्तिगत क्षमता में बोली लगाई है। अधिकारी ने कहा, नई एयरलाइन के लिए परिचालन भागीदार के रूप में स्पाइसजेट की भूमिका में आवश्यक कर्मचारी, सेवाएँ और उद्योग विशेषज्ञता प्रदान करना शामिल है। इस सहयोग से दोनों वाहकों के बीच तालमेल उत्पन्न होने की उम्मीद है, जिससे बेहतर लागत प्रबंधन, राजस्व वृद्धि और भारतीय विमानन उद्योग के भीतर एक मजबूत बाजार स्थिति होगी। राजस्व विस्तार पर ध्यान देने के साथ, स्पाइसजेट का लक्ष्य अपनी स्थापित बुनियादी ढांचे और परिचालन क्षमताओं का लाभ उठाना है।

रखरखाव, ग्राउंड हैंडलिंग और इंजीनियरिंग जैसे विभिन्न कार्यों में संसाधन आवंटन को अनुकूलित करके, एयरलाइन अधिक दक्षता और लाभ प्राप्त करने की उम्मीद करती है। स्पाइसजेट वर्तमान में एक पुनरुद्धार योजना को अमली जामा पहना रही है, और हाल ही में 744 करोड़ रुपये की पूंजी निवेश की पहली किस्त पूरी की है। कंपनी ने अतिरिक्त 1,000 करोड़ रुपये जुटाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

स्पाइसजेट के पास पहले से ही क्यूआईपी के माध्यम से 2,500 करोड़ रुपये तक जुटाने के लिए वैध शेयरधारक अनुमोदन है, जिससे आगे शेयरधारक अनुमोदन की आवश्यकता समाप्त हो गई है। अजय सिंह ने कहा, ÷मेरा दृढ़ विश्वास है कि गोफर्स्ट में अपार संभावनाएं हैं और इसे स्पाइसजेट के साथ घनिष्ठ तालमेल में काम करने के लिए पुनर्जीवित किया जा सकता है, जिससे दोनों वाहकों को लाभ होगा। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर प्रतिष्ठित स्लॉट, अंतर्राष्ट्रीय यातायात अधिकार और 100 से अधिक एयरबस नियो विमानों के ऑर्डर के अलावा, गोफर्स्ट यात्रियों के बीच एक विश्वसनीय और मूल्यवान ब्रांड है। मुझे इस लोकप्रिय एयरलाइन को पुनर्जीवित करने और पारस्परिक विकास और सफलता के लिए इसकी ताकत का लाभ उठाने के प्रयासों में योगदान देने में खुशी हो रही है।

कॉग्निजेंट के कर्मचारियों की संख्या घटी

- वर्ष 2023 में 7600 लोगों ने छोड़ी कंपनी

मुंबई । कॉग्निजेंट के कर्मचारियों की संख्या 2023 में पिछले वर्ष की तुलना में 7,600 घटकर 347,700 हो गई है। कंपनी की 2023 की वार्षिक रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई है। नैस्डैक-सूचीबद्ध आईटी और आउटसोर्सिंग फर्म है और वित्तीय वर्ष का पालन करती है। कंपनी ने अपनी कुल कर्मचारियों की संख्या 347,700 बताई, जो कि दिसंबर तिमाही 2024 के ओ खिर में सालाना आधार पर 1,100 अधिक थी। कॉग्निजेंट ने बताया कि नौकरी छोड़ने वालों की दर 2022 में 25.6 प्रतिशत की तुलना में 2023 में घटकर 13.8 प्रतिशत हो गई। कम नियुक्ति का यह ट्रेंड कमजोर आर्थिक संकेतकों, बैंकिंग और वित्तीय सेवा क्षेत्र में चल रहे दबाव को` दिखाता है। कंपनी ने अकेले भारत में 4,500 कर्मचारियों की उल्लेखनीय कमी देखी, जिसमें लगभग 3,000 कर्मचारी ऑनसाइट थे। एक रिपोर्ट के अनुसार इसके वर्कफोर्स वितरण में भारत में लगभग 250,000 कर्मचारी, नार्थ अमेरिका में 40,500, कॉन्टिनेंटल यूरोप में 16,300, यूके में 8,500 और अन्य स्थानों पर 28,400 कर्मचारी शामिल हैं। आईटी फर्म ने क्लाइंट ऑफरिंग और आंतरिक संचालन दोनों में जेनएआई सहित एआई-आधारित प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग पर जोर दिया है। हालांकि, रिपोर्ट में यह स्वीकार किया गया कि एआई में प्रगति से कुछ सेवाओं की मांग कम हो सकती है या अफेक्ट प्राइस और शर्तें प्रभावित हो सकती हैं, जिसके कारण कार्यबल में कमी आ सकती है।

जैव उर्वकों से बढ़ती है फसल की गुणवत्ता

फसल उत्पादन में उर्वरकों की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। आधुनिक सघन खेती में रासायनिक उर्वरकों तथा अन्य कृषि रसायनों के दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए असंतुलित प्रयोग से भूमि की संरचना तथा उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस बात ने हमें यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि हम प्रकृति के इस महत्वपूर्ण संसाधन भूमि की उर्वरता संरचना तथा पर्यावरण को लम्बे समय तक कैसे बचाये रखें।

दूसरी ओर विश्व व्यापार संगठन में भारत का प्रवेश होने से हमारे आगे न केवल अधिक फसल उत्पादन करने की बल्कि उत्कृष्ट गुणवत्ता बनाए रखने की भी चुनौती है। जैव उर्वरकों को पूरक के रूप में प्रयोग करने से रासायनिक उर्वरकों की क्षमता बढ़ती है साथ-साथ फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

क्या हैं जैव उर्वरक?

पर्यावरण के संरक्षण, भूमि की संरचना तथा उर्वरता को बचाए रखते हुए अधिक उत्पादन के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसे जीवाणुओं के उर्वरक तैयार किये हैं जो वायुमण्डल में उपलब्ध नत्रजन को पौधो को उपलब्ध कराते है तथा भूमि में पहले से मौजूद फास्फोरस आदि पोषक तत्वों को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं।

यह जीवाणु प्राकृतिक हैं, रासायनिक नहीं इसलिए इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और पर्यावरण पर विपरीत असर नहीं पड़ता। जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरक का विकल्प नहीं है। इन्हें रासायनिक उर्वरकों के पूरक के रूप में प्रयोग करने से हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते है।

कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड (कृभकों) द्वारा उत्पादित राइजोबियम कल्चर, एजेटो वैक्टर, एसीटो वैक्टर और पी.एस.एम. उपयोगी जैव उर्वरक हैं।

राइजोबियम कल्चर

इसके जीवाणु पौधों की जड़ो में गांठ बनाकर रहते हैं तथा वायुमण्डल में उपस्थित नाइट्रोजन को शोषित कर भूमि में स्थिरीकरण कर पौधों को उपलब्ध कराते है। ये जैव उर्वरक दलहनी फसलों जैसे अरहर, मूंग, उर्द, चना, मटर, मसूर, सोयाबीन आदि फसलों में उपयोग में लाये जाते है। प्रयोग के लिए यह ध्यान रखना चाहिये कि ये फसल विशेष के लिए अलग-अलग होते हैं और फसल का नाम पैकेट पर अंकित होता है।

एजेटो बैक्टर

यह जैव उर्वरक सभी अनाज गेहूं, जौ, जई ज्वार, बाजरा, मक्का, धान, सब्जी की फसलों, फूलों तथ अन्य फसलों जैसे गन्ना, कपास, तम्बाकू एवं पटसन आदि में प्रयोग में लाया जाता है। इसके जीवाणु पौधों की जड़ क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से रहते हुए वायुमण्डल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर पौधो को उपलब्ध कराते हैं।

एसीटो बैक्टर

यह जैव उर्वरक गन्ने की फसल के लिए उपयुक्त पाया गया है। जो गन्ने की फसल के लिए नत्रजन वाले उर्वरकों की लगभग 25-30 प्रतिशत की बचत करने में सहायक होता है, इसके प्रयोग से गन्ने की फसल से प्राप्त होने वाली चीनी के परते में 1-2 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

पी.एस.एम.

भारत की 80 से 90 प्रतिशत भूमि में फास्फोरस की कमी पाई जाती है। भूमि में फास्फोरस तत्व की पूर्ति हेतु प्रयोग किये जाने वाले उर्वरकों की मात्रा का लगभग 35-40 प्रतिशत भाग ही फसल उपयोग में ला पाती है, शेष भाग अघुलनशील अवस्था में भूमि के अन्दर बेकार पड़ा रहता है। जबकि फास्फेटिक उर्वरकों पर कृषकों की सबसे ज्यादा लागत आती है। पी.एस.एम. भूमि में अघुलनशील अवस्था में उपस्थित फास्फोरस तत्व को घुलनशील अवस्था में परिवर्तित कर पौधों को उपलब्ध कराता है। यह सभी प्रकार की फसलों में उपयोग किया जा सकता है।

प्रति.हे. की आवश्कता पड़ती है।

बीज उपचार

इस विधि द्वारा राइजोबियम, एजोटो बैक्टर एवं पीएसएम जैव उर्वरकों का प्रयोग दलहन की फसलों, गेहूं, जौं, मक्का, बाजरा, राई, सरसों, तिल, सूरजमुखी आदि फसलों में किया जाता है। इस विधि में एक पैकेट का घोल लगभग 200-500 मिली. पानी में बनाकर 10 किलो बीज के ऊपर एक साथ छिड़क कर हाथ से अच्छी तरह मिलायें ताकि जैव उर्वरक की एक पतली परत बीज के सभी दानों पर बन जायें। उपचार के तुरन्त बाद छाया में सुखाकर बीज की बुवाई कर दें।

भूमि उपचार

इस विधि द्वारा एजेटो बैक्टर, एसीटो बैक्टर एवं पीएसएम जैव उर्वरकों का प्रयोग सभी खाद्यान्नों की फसलों, गन्ना, तिलहन फसलों, सब्जी फसलों, फूलों आदि में किया जा सकता है। इस विधि में जैव उर्वरकों की लगभग 2-5 कि.ग्रा. मात्रा को 100 कि.ग्रा. अच्छी प्रकार सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट में मिलाकर खेत की तैयारी के समय अन्तिम जुताई से पूर्व खेत में एक साथ छिड़क कर मिट्टी में मिला दें।

कन्द उपचार

आलू की फसल में एजोटो बैक्टर व पीएसएम का उपयोग करने के लिये प्रति हे.2 कि.ग्रा. जैव उर्वरकों को 20-25 लीटर पानी में घोल बनाकर उसमें बीज को 5 मिनट के लिये डुबोकर बुवाई करें। गन्ने की फसल में एसीटो बैक्टर के प्रयोग में लगभग 5 किलो जैव उर्वरक

जड़ उपचार विधि

यह विधि रोपाई वाली फसलों में प्रयोग की जाती है। इस विधि में 1-2 किग्रा. जैव उर्वरकों को 10-20 लीटर पानी में घोल बनाकर उसमें एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिये रोपाई हेतु पौधों को रोपाई से पूर्व 10 मिनट के लिये जड़ो को डुबोकर रोपाई की जाती है।

जैव उर्वरकों के प्रयोग में सावधानियाँ

यह जीवित जीवाणुओं का मिश्रण है, इसलिए इन्हें तेज धूप, उच्च तापक्रम से सदैव बचाये रखें, अन्यथा उनके जीवाणु मरने शुरू हो जाते है। गर्मियों में भण्डारण के लिये मकान के कोने में रेत के अन्दर घड़े मे रख दें। रेत पर पानी छिड़कर कर भिगोते रहें। इस प्रकार अधिक तापक्रम के प्रभाव से जैव उर्वरकों को बचाया जा सकता है। पैकेट खरीदते समय उनकी निर्माण तिथि अवश्य देख लें और उनका उपयोग अन्तिम तिथि से पूर्व कर लें। पैकेट उपयोग के समय ही खोलें।

सदैव ध्यान रखें कि ये रासायनिक उर्वरकों के विकल्प नहीं है। फसलों की पोषक तत्वों की मांग की पूर्ति इनका रासायनिक एवं कार्बनिक खादों के साथ बेहतर समन्वय बनाकर करें। फसल के लिये निर्धारित जैव उर्वरक ही प्रयोग करें। बीज शोधन में यदि रसायन का प्रयोग करना हो तो इनकी प्रयोग की जानी वाली मात्रा को निर्धारित मात्रा से दोगुना कर देना चाहिये और पहले रसायनों को प्रयोग करें उसके उपरान्त ही जैव उर्वरकों का प्रयोग करें। रासायनिक खादों में मिलाकर इनका प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये। जैव उर्वरकों को सड़ी नमी युक्त गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट खाद के साथ मिलाकर प्रयोग करने से ही बेहतर परिणाम प्राप्त होते है। कृभको द्वारा हजीरा संयंत्र (गुजरात) वाराणसी संयंत्र (उत्तर प्रदेश) लांचा संयंत्र (महाराष्ट्र) में कुल 650 मैट्रिक टन जैव उर्वरकों का उत्पादन किया जाता है। ये जैव उर्वरक कृषक भारती सेवा केन्द्रों एवं सहकारी समितियों से प्राप्त किये जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए कृभकों के नजदीकी प्रतिनिधि से भी सम्पर्क किया जा सकता है।

ब्रिटिश काउंसिल ने भारतीय छात्रों को दिया तोहफा, ग्रेट स्कॉलरशिप 2024 की घोषणा

नई दिल्ली । विदेश जाकर पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स के लिए बड़ी खबर है। दरअसल ब्रिटिश काउंसिल ने भारतीय छात्रों के लिए ग्रेट स्कॉलरशिप 2024 की घोषणा की है। इस स्कॉलरशिप का लाभ भारतीय 2024 की शरद ऋतु से यूके में अध्ययन के लिए उठा सकते है। हालांकि, स्कॉलरशिप का लाभ उन्हें ही मिलेगा, जो पोस्टग्रेजुएशन की पढ़ाई करे। ब्रिटिश काउंसिल शैक्षिक अवसरों और सांस्कृतिक संबंधों के लिए यूके का अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। इस वर्ष यूके के 25 विश्वविद्यालय कार्यक्रम के हिस्से के रूप में भारतीय छात्रों को 26 स्नातकोत्तर ग्रेट स्कॉलरशिप प्रदान करेंगे। भारतीय छात्रों को जिन विषयों में स्कॉलरशिप दी जाएगी उसमें फाइनेंस, मार्केटिंग, बिजनेस, मनोविज्ञान डिजाइन, मानविकी, डांस सहित अन्य हैं। आधिकारिक बयान के मुताबिक प्रत्येक ग्रेट स्कॉलरशिप का मूल्य न्यूनतम ू10,000 है, जिसका भुगतान 2024-25 शैक्षणिक वर्ष के लिए यूके में एक वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए ट्यूशन फीस के लिए किया जाएगा। इसके अलावा योजना के तहत भारतीय छात्रों को जस्टिस और लॉ स्टडीज के लिए भी स्कॉलरशिप प्रदान की जाएंगी। ये छात्रवृत्तियां दो भाग लेने वाले उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रदान की जाती हैं। यानि कि जो भारतीय छात्र मानवाधिकार, संपत्ति कानून, आपराधिक न्याय, वाणिज्यिक कानून और अन्य विभिन्न पाठ्यक्रमों में रुचि रखने हैं, वे आवेदन कर सकते हैं।

जांच में हुई पुष्टि, रेव पार्टियों में कोबरा के जहर का हुआ उपयोग, एल्विश की बढ़ेगी मुश्किल

नोएडा। रेव पार्टियों में नशे में इस्तेमाल हो रहे सांपों के जहर के मामले में जयपुर एफएसएल की जांच रिपोर्ट आ गई है। इस जांच रिपोर्ट में बरामद जहर कोबरा करैत प्रजाति के सांप का होना पाया गया है। रेव पार्टियों और क्लबों में ये जहर सप्लाई होता था। इसके बाद बिग बॉस ओटीटी सीजन-2 के विजेता और यूट्यूबर एल्विश यादव की मुश्किलें फिर बढ़ सकती हैं। रेव पार्टियों में कथित तौर पर नशे के लिए इस्तेमाल हो रहे जहर के मामले में जयपुर एफएसएल की रिपोर्ट में सांपों के जहर का इस्तेमाल होने की पुष्टि हुई है। सूत्रों के मुताबिक, रेव पार्टियों में नशे में इस्तेमाल हो रहे सांपों के जहर के मामले में जयपुर एफएसएल की जांच रिपोर्ट आ गई है। इस जांच रिपोर्ट में बरामद जहर कोबरा करैत प्रजाति के सांप का होना पाया गया है। रेव पार्टियों और क्लबों में ये जहर सप्लाई होता था। नोएडा पुलिस ने जयपुर एफएसएल को जांच के लिए सांपों के जहर के सैंपल भेजे थे। अब नोएडा पुलिस ने जयपुर एफएसएल से कार्रवाई के लिए ये जांच रिपोर्ट ली है। सूत्रों का कहना है कि इन पार्टियों में कोबरा करैत सांप का जहर सप्लाई होता था। चर्चित यूट्यूबर एल्विश यादव समेत कई लोगों के खिलाफ सेक्टर-49 थाने में मुकदमा दर्ज हुआ था। जांच रिपोर्ट आने के बाद एल्विश यादव की मुश्किलें बढ़ सकती है। बता दें कि इस मामले में पुलिस ने पांच सपेरों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया था।ऐसा माना रहा है कि अब नोएडा पुलिस जल्द ही एल्विश यादव और अन्य आरोपियों से फिर से पूछताछ कर सकती है। बता दें कि, इससे पहले मुख्य आरोपी राहुल ने पुलिस को कई ऐसे चौंकाने वाले नाम बताए जो रेव पार्टी में बीन के साथ सांपों का खेल करवाते थे।

बांग्लादेश से लाकर 6 राज्यों में बेची गईं लड़कियां

-2 से 5 लाख रुपए में बिकती हैं, बांग्लादेश की लड़कियां

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ के दौरान आरोपियों से जो जानकारी मिली है। उसके अनुसार बांग्लादेश से लड़कियां लाकर भारत के 6 राज्यों में लड़कियों को बेचा गया है। बांग्लादेश से घुसपैठ करके बांग्लादेश की लड़कियों को भारत लाया जाता था। अभी तक गिरोह ने 50 से ज्यादा लड़कियां भारत लाकर बेचना स्वीकार किया है। मानव तस्करी से जुड़े गिरोह की जांच के दौरान, एनआईए ने म्यांमार मे रहने वाले रवि इस्लाम, मोहम्मद उस्मान और सफी अलम को गिरफ्तार किया था। भारत के एक दर्जन से ज्यादा राज्यों में इनका नेटवर्क बना हुआ है। बांग्लादेश से लड़कियां लाकर घुसपैठ के माध्यम से भारत के हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, बिहार और जम्मू कश्मीर में लड़कियां बेचने की बात आरोपियों ने स्वीकार की है। लड़कियों का सौदा 2 लाख से लेकर 500000 रुपये के बीच बांग्लादेश की लड़कियों को बेचा गया है। गिरोह के सदस्य बांग्लादेश से लड़कियों को पहले फुसलाकर पहले म्यांमार ले जाते थे। उसके बाद म्यांमार से भूटान के रास्ते नेपाल और नेपाल से बिहार के रास्ते भारत की कई राज्यों में ले जाया जाता था। बिहार से मांग के अनुसार अलग-अलग राज्यों में लड़कियों को ले जाकर बेच दिया जाता था। बांग्लादेश के जो युवक प्रेम जाल में फंसाकर मानव तस्करी के कारोबार में लगे हुए हैं। उन्हें गिरोह द्वारा 50000 रुपये प्रति लड़की भुगतान किया जाता था। मानव तस्करी के कारोबार में लगे गिरोह का खुलाशा एनआईए ने किया है।

संदेशखाली मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा- ईमेल करें फिर देखते हैं क्या करना है?

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के संदेशखाली हिंसा मामले में सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जाहिर की है। याचिकाकर्ता वकील अलख आलोक ने इस मामले में जल्द सुनवाई करने की मांग सुप्रीम कोर्ट से की है। इस पर सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि आप ऐसे दवाब नहीं बना सकते हैं। फिर भी मामले को ईमेल कीजिए फिर देखते हैं क्या करना है। बता दें कि संदेशखालि क्षेत्र की कई महिलाओं ने तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता शाहजहां शेख और उनके समर्थकों पर जमीन हड़पने और उनका यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। कई महिलाओं ने आरोप लगाया है कि शाहजहां और उनके समर्थक रात में उनके घर की बहू-बेटियों को ले जाते थे। अब महिलाएं वहां टीएमसी नेताओं के खिलाफ प्रदर्शन कर रही हैं और उनकी गिरफ्तारी की मांग पर अड़ी हैं। वकील ने कहा मामला बहुत आवश्यक है लिहाजा मामले में तत्काल सुनवाई की जाए। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता वकील पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट नियमों के तहत काम करेगा आपके प्रेशर डालने से हम कोई आदेश जारी नही करेंगें। सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल कर मामले की जांच एसआईटी या सीबीआई से करवाने मांग की है। निष्पक्ष जांच के लिए पूरी जांच पश्चिम बंगाल से बाहर करवाने की मांग शामिल है। साथ ही सुप्रीम कोर्ट से मणिपुर के तर्ज पर 3 जजों की कमेटी बनाकर मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की गई है। दरअसल वकील अलख आलोक श्रीवास्तव ने सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर की थी। याचिका में पीड़ितों को मुआवजा देने के निर्देश देने के साथ- साथ दोषी पुलिसकर्मियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग भी की गई है।

हल्द्वानी हिंसा में नहीं बल्कि अवैध संबंधों के चलते हुई थी प्रकाश की हत्या

हल्द्वानी। बिहार निवासी प्रकाश कुमार की मौत पर हल्द्वानी पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। पुलिस के मुताबिक प्रकाश की मौत 8 फ़रवरी को बनभूलपुरा में हुए सांप्रदायिक हिंसा में नहीं हुई थी, बल्कि अवैध संबंधों की वजह से उसकी जान गई थी। इस मामले में पुलिस ने एक कांस्टेबल समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। एसएसपी नैनीताल प्रह्लाद नारायण मीणा ने बताया कि प्रकाश की हत्या चोरगलिया थाने में तैनात एक जवान बीरेंद्र सिंह, उसकी पत्नी प्रियंका और तीन अन्य ने मिलकर की थी। उसके बाद शव को हिंसा प्रभावित इलाके में फेंक दिया गया था। एसएसपी ने बताया कि जवान की पत्नी के साथ प्रकाश के अवैध संबंध थे और वह ब्लैकमेल कर पैसे की डिमांड भी कर रहा था। हल्द्वानी हिंसा वाले दिन वह शहर में था। जिसके बाद वह गौलापार गया जहां, उसकी तीन लोगों से झड़प हुई और उसकी हत्या कर दी गई। इस हत्याकांड में जवान, उसकी पत्नी, साला और एक दोस्त शामिल थे। तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है, हालांकि जवान की पत्नी फरार है। हत्या में प्रयुक्त अवैध असलहे को भी पुलिस ने बरामद कर लिया है। गौरतलब है कि बनभूलपुरा कांड के दूसरे दिन प्रकाश कुमार की गोलियों से छलनी लाश रेल के पटरियों के पास मिली थी। जिसके बाद कहा जा रहा था कि प्रकाश की हत्या हिंसा के दौरान ही गई थी। एसएसपी ने कांफ्रेंस करते हुए बताया कि प्रकाश के अवैध संबंध कांस्टेबल की पत्नी से थे। हत्या के बाद दंगे में मौत की साजिश पुलिस कांस्टेबल, उसकी पत्नी और साले के द्वारा रची गई थी।

जातिगत जनगणना कराने के लिए कांग्रेस सरकार ने विधानसभा में पेश किया प्रस्ताव

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना में कांग्रेस सरकार ने शुक्रवार (16 फरवरी) को राज्य में जाति जनगणना कराने के लिए विधानसभा में एक प्रस्ताव पेश किया। यह वादा पार्टी ने पिछले साल विधानसभा चुनावों से पहले किया था। लक्षित कल्याण और समान संसाधन वितरण के लिए जाति डेटा इकट्ठा करने के उद्देश्य से जनगणना के संचालन के लिए विधानसभा में पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री पोन्नम प्रभाकर द्वारा प्रस्ताव लाया गया था।

मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि 4 फरवरी को तेलंगाना कैबिनेट द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार, पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य कमजोर वर्गों की उन्नति के लिए सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, रोजगार और राजनीतिक अवसर योजनाएँ, सरकार ने राजनीतिक रोजगार के लिए एक व्यापक घरेलू जाति गणना परिवार सर्वेक्षण आयोजित करने का निर्णय लिया है। सरकार का कहना है कि उनका सदन 4 फरवरी 2024 के मंत्रिपरिषद के निर्णय के अनुसार पूरे तेलंगाना राज्य का एक व्यापक घर-घर घरेलू सर्वेक्षण (सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, रोजगार, राजनीतिक और जाति सर्वेक्षण (कुल गणना) करने का संकल्प लेता है।

सरकार के अनुसार इसका लक्ष्य राज्य के पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के नागरिकों और राज्य के अन्य कमजोर वर्गों के सुधार के लिए विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, रोजगार और राजनीतिक अवसरों को लागू करना है। राहुल गांधी ने पिछले साल चुनाव प्रचार के दौरान तेलंगाना के लोगों से वादा किया था कि अगर कांग्रेस सरकार सत्ता में आई तो जाति सर्वेक्षण कराएगी। कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) ने भी 9 अक्टूबर को एक प्रस्ताव अपनाया था जिसमें केंद्र में सत्ता में आने पर दशकीय जनगणना के हिस्से के रूप में देशव्यापी जाति जनगणना का वादा किया गया था। इसमें कहा गया कि आरक्षण पर लगी 50 फीसदी की सीमा को भी कानून के जरिए हटा दिया जाएगा। राज्य की स्थापना के बाद पहली बार कांग्रेस ने तेलंगाना में 119 में से 64 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत हासिल किया था।

प्रियंका नहीं शामिल हो रहीं न्याय यात्रा में

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के चंदौली पहुंच रही है। यहां से कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को न्याय यात्रा में शामिल होना था, लेकिन वो इसमें शरीक नहीं हो रहीं हैं। यात्रा में शामिल नहीं होने के पीछे प्रियंका गांधी का स्वास्थ्य खराब होना बताया जा रहा है। कहा जा रहा है कि तबीयत ठीक होते ही प्रियंका यात्रा में शामिल होंगी। गौरतलब है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी की अगुवाई में कांग्रेस पार्टी मणिपुर से मुंबई तक भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकालने में व्यस्त चल रही है। इसी तारतम्य में आज यात्रा को बिहार से यूपी में प्रवेश करते हुए चंदौली पहुंचना है, जहां प्रियंका भी शामिल होने वाली थीं। इसी बीच खबर आई कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी का स्वास्थ्य सही नहीं है, इसलिए आज शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के चंदौली में भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल नहीं हो रही हैं। वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने उन खबरों का खंडन करते हुए स्पष्ट किया है कि उत्तर प्रदेश में यात्रा की अवधि में कटौती नहीं की गई है। यह आठ दिनों के लिए 16 से 21 फरवरी तक और फिर 24 से 25 फरवरी तक उत्तर प्रदेश में रहेगी। उन्होंने कहा, कि 22 और 23 फरवरी को यात्रा के लिए विश्राम का दिन रहेगा, इसके बाद 24 और 25 फरवरी को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यात्रा फिर से प्रारंभ की जाएगी।

राहुल की मध्य प्रदेश में न्याय यात्रा के पहले भाजपा करेगी बड़ा धमाका

नई दिल्ली (एजेंसी)। भोपाल (ईएमएस)।दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक और शनिवार को संपन्न होनी है। जिसमें भाजपा कई अहम प्रस्तावों पर चर्चा करेगी। आने वाले लोकसभा चुनाव में 400 सीटे जीतने का लक्ष्य निर्धारित करेगी। इस अधिवेशन में भारतीय जनता पार्टी के सभी शीर्ष नेतृत्व के साथ-साथ देशभर से नेता एवं कार्यकर्ता दिल्ली में जुटेंगे। इस राष्ट्रीय अधिवेशन के बाद भाजपा एक बड़ा धमाका करने की तैयारी में है।जिसके अंतर्गत कांग्रेस के कई बड़े नेताओं को पार्टी की सदस्यता दिलाई जा सकती है। इस संबंध में भी राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में उच्च स्तरीय चर्चा होगी। कांग्रेस के बड़े नेताओं की सूची में मध्य प्रदेश के कई नेताओं के नाम भी शामिल हैं। जिसे राहुल गांधी की न्याय यात्रा के पहले एक बड़े धमाके के तौर पर देखा जा रहा है। लोकसभा चुनाव के पहले नेताओं का कांग्रेस छोड़ने कहीं ना कहीं कांग्रेस और राहुल गांधी की न्याय यात्रा को कमजोर करने के लिए यह अभी तक का सबसे बड़ा प्रयास होगा। सूत्रों की माने तो मध्य प्रदेश के बड़े नेताओं को भाजपा में लाने का प्रयास लंबे समय से किया जा रहा था। जो निर्णायक स्थिति में पहुंच गया है। ऐसा माना जा रहा है कि अधिवेशन के आखिरी दिन कांग्रेस के बड़े नेता भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व की उपस्थिति में ले सकते हैं।

इससे पहले मध्य प्रदेश के कई कांग्रेसी नेताओं ने कांग्रेस का दामन छोड़ भाजपा की सदस्यता राज्य स्तरीय नेतृत्व के सामने कर चुके हैं। जिसमे जबलपुर के महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू, पूर्व महाधिवक्ता मध्य प्रदेश शशांक शेखर एवं कई जिला कांग्रेस अध्यक्ष शामिल है। अब कांग्रेस के एक राष्ट्रीय स्तर के नेता को भाजपा की सदस्यता दिलाने की कार्रवाई राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के समक्ष हो सकती है। राहुल गांधी के मध्य प्रदेश में प्रवेश करने के पहले ही यह बड़ा धमाका हो सकता है। भाजपा का मानना है, कि कांग्रेस के लिए यह अभी तक का सबसे बड़ा धमाका होगा।

षडयंत्र का शिकार हुईं सांसद प्रज्ञा ने लिखी चिट्ठी कहा.. उम्मीद है कार्रवाई करेंगे

भोपाल (एजेंसी)। सांसद प्रज्ञा सिंह एक बड़े षडयंत्र का शिकार हुई हैं। इससे उन्हे इतनी तकलीफ हुई की 16 फरवरी की रात 3:20 बजे अपने एक्स प्लेट फॉर्म पर पीडा लिखनी पड़ी। उन्होंने अकासा एयरलाइंस के स्टाफ पर गंभीर आरोप लगाते हुए लिखा कि मुंबई से दिल्ली जाने वाली अकासा एयर, फ्लाइट नंबर क्यूपी-1120 से दिल्ली आने पर ड्यूटी मैनेजर इमरान और उसके साथियों द्वारा षड्यंत्र कर मुझे बड़ी हानि पहुंचाने का प्रयास किया। इस संबंध में सांसद ठाकुर नागरिक विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से कार्रवाई की अपील की है। सांसद प्रज्ञा ने लिखा, 'उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, अपेक्षा करती हूं आप कार्यवाही अवश्य करेंगे। जय श्री राम....।

हालांकि सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर अपने विवादित बयानों के लिए जानी जाती हैं। अयोध्या में रामलला मंदिर के निर्माण के दौरान कांग्रेसी नेताओं ने वहां जाने से मना कर दिया था। इस पर प्रज्ञा ने कहा था, श्री राम का मंदिर बनना सौभाग्य की बात है। जिनको रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण मिला है, उन्हें सशरीर पहुंचना चाहिए। सभी को उत्सव मनाना चाहिए। कांग्रेस को लेकर उन्होंने कहा कि कांग्रेस को आमंत्रण मिला है लेकिन वो नहीं जा रहे। कांग्रेस हमेशा प्रभु राम के कार्य का विरोध करती रही है। मां सरस्वती ने उसकी जीभ पर विराजमान होकर मना करवाया है।इसके साथ-साथ सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर भी तंज सका था। उन्होंने कहा था कि इनके शासन में तो कभी न्याय हुआ ही नहीं। शासन में रहते हुए जनता ने विकास और काम केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासन में देखा है। कांग्रेस ने पहले भी भारत जोड़ो यात्रा निकाली थी। उसका भी हश्र सभी ने देख लिया। अब इस यात्रा का हश्र क्या होगा, ये भी जनता बताएगी। पिछले साल मार्च में उन्होंने कहा था कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को विदेशी धरती पर दिए गए उनके कुछ विवादास्पद बयानों के लिए देश से निकाल देना चाहिए। उन्होंने यह बात तब कही थी, जब राहुल गांधी ने पिछले साल मार्च में लंदन में ब्रिटिश सांसदों के बीच बयान दिया था।

मेक इन इंडिया के तहत, नौसेना के लिए छह समुद्री गश्ती विमान खरीदने को मंजूरी

नई दिल्ली। केंद्रीय रक्षा मंत्रालय ने भारतीय नौसेना के लिए नौ समुद्री निगरानी विमान और भारतीय तट रक्षक के लिए छह समुद्री गश्ती विमान खरीदने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। प्रस्तावित अधिग्रहण में 15 समुद्री गश्ती विमानों का निर्माण शामिल है, जो सी-295 परिवहन विमानों पर आधारित होगा, जिनका निर्माण भारत में टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स और एयरबस के बीच एक संयुक्त उद्यम में किया जा रहा है। यह कदम मोदी सरकार की मेक इन इंडिया पहल के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य देश की सुरक्षा जरूरतों को पूरा करते हुए स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमताओं को बढ़ाना है। रिपोर्ट के अनुसार, इन परियोजनाओं का अनुमानित मूल्य 29,000 करोड़ है। रिपोर्ट के अनुसार, परिवहन विमान आवश्यक रडार और सेंसर से लैस होगा और रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के सेंटर फॉर एयरबोर्न सिस्टम्स (सीएबीएस) द्वारा इस समुद्री गश्ती विमान में बदल दिया जाएगा। भारतीय तटरक्षक बल के मुख्य महानिदेशक राकेश पाल ने बताया, लंबी दूरी के समुद्री निगरानी विमान प्राप्त करने की योजना है, जिसे वायु सेना ने ले लिया है, और अनुबंध पर टीएएसएल (टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड) के साथ हस्ताक्षर किए जाएंगे, जिसमें हम हैं छह सी 295 परिवहन विमान मिलने वाले हैं।

पूर्व सीएम चव्हाण का बयान, रातोंरात नहीं बदलेगी विचारधारा

-मैं भाजपा की विचारधारा को समझूंगा

मुंबई (एजेंसी)। (ईएमएम)। कांग्रेस से दो पीढ़ियों का रिश्ता तोड़कर भाजपा में आए पूर्व सीएम अशोक चव्हाण ने कहा है कि उनकी विचारधारा रातोंरात नहीं बदलेगी। उन्होंने कहा कि मैं जानता हूं कि रातोंरात अपनी विचारधारा को बदल लेना संभव नहीं है। मैं भाजपा की विचारधारा को समझूंगा। इसके अलावा यह भी ध्यान देने की बात है कि मैं हर चीज से सहमत ही रहूं, यह जरूरी नहीं है। मुझे उन चीजों के बारे में समझने के लिए समय चाहिए। इसके अलावा हमें यह भी देखना होगा कि वक्त की जरूरत क्या है। सेकुलरिज्म से ज्यादा अहम यह है कि हम एक देश के तौर पर भविष्य के लिए कैसे तैयार हैं।

उन्होंने विचारधारा के सवाल को पीएम नरेंद्र मोदी से जोड़ते हुए कहा कि वह जो कर रहे हैं, वह पूरी दुनिया को ही दिख रहा है। आप देश का मूड देखिए। जनादेश उनके साथ है, क्योंकि वे सही चीजें कर रहे हैं। यही नहीं उन्होंने कांग्रेस छोड़ने के फैसले पर भी कहा कि यहां अचानक नहीं हुआ है। मैं बीते काफी दिनों से देख रहा था कि कैसे चीजों को रोका जा रहा है। लोकसभा चुनाव सिर पर है और कांग्रेस की तैयारी ही नहीं थी। ऐसी स्थिति में मैंने अपना वक्त बर्बाद करने की बजाय सही विकल्प चुना। मुझे राष्ट्रीय स्तर पर काम करने का मौका भी मिला। चव्हाण ने कहा कि पीएम मोदी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार काम कर रहे हैं। दूसरी तरफ विपक्ष कमजोर है। यह पूछने पर कि क्या केंद्रीय एजेंसियों के दबाव में आकर कांग्रेस छोड़ी है? उन्होंने कहा कि यह झूठ है। कांग्रेस के लोगों को मुझ पर इसतरह के आरोप लगाने की बजाय खुद का विश्लेषण करना चाहिए। सोचना चाहिए कि आखिर पार्टी इस लेवल तक कैसे पहुंच गई। अब जहां तक आदर्श हाउसिंग घोटाले की बात है, तब फिलहाल मेरे ऊपर कोई केस नहीं चल रहा है।

10 सालों में मोदी सरकार ने कृषि-कृषक हित में हर ज़रूरी निर्णय लिए: अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने आज नई दिल्ली में किसान आंदोलन को लेकर संवाददाताओं से बातचीत की। अनुराग ठाकुर ने कहा, ' मोदी सरकार किसानों के कल्याण के लिए सदा समर्पित रही है। पिछले कल केंद्र सरकार ने जारी गतिरोध के बीच किसान संगठनों को बातचीत के लिए निमंत्रण दिया था। कई किसान नेता आए और बेहद सार्थक चर्चा भी हुई है। हमने मिलकर अगली वार्ता रविवार को रखी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि रविवार को भी अच्छे माहौल में बातचीत होगी और हम मुद्दों के समाधान की ओर बढ़ेंगे।'

केंद्र द्वारा किए गए कार्यों के जवाब में अनुराग ठाकुर ने कहा, ÷खाद, पानी, एमएसपी पर खरीद, बैंकों से सस्ते ऋण और मुआवजे पर पिछले 10 वर्षों में मोदी सरकार ने जितना किया है वह आज से पहले किसी भी सरकार ने नहीं किया। 2013-14 में जब यूपीए की सरकार थी, तब कृषि बजट ?27 हजार 662 करोड रुपए था। अभी मोदी सरकार का कृषि बजट ?1 लाख 25 हजार करोड़ से ज्यादा है। यानी यूपीए काल से 5 गुना ज्यादा कृषि बजट। कांग्रेस के समय किसान सम्मान निधि नहीं थी, हमने किसान सम्मान निधि के माध्यम से 11 करोड़ से ज्यादा किसानों को 2 लाख 81 हजार करोड़ रुपए सीधा उनके बैंक खातों में हस्तांतरित किए हैं। यूपीए काल की फसल बीमा योजना के अंतर्गत किसानों को कुछ नहीं मिलता था। मोदी सरकार में डेढ़ लाख करोड़ से ज्यादा का मुआवजा किसानों को मिला है। 10 हजार एफपीओ में से 8 हजार बन चुके हैं और इसे लाखों किसान भी जुड़ चुके हैं।'

अनुराग ठाकुर ने आगे एमएसपी पर बातचीत करते हुए बताया, ÷कांग्रेस के समय में गेहूं, धान, दलहन और तिलहन की कुल खरीददारी ?5 लाख 50 हजार करोड़ रुपए की हुई। मोदी सरकार ने 18 लाख 39 हजार करोड़ रुपए की खरीददारी की। यानी लगभग साढ़े तीन गुना ज्यादा। इससे पता चलता है की हमने दाम भी बढ़ाए और खरीदारी भी दोगुनी से ज्यादा की।

आगे मोदी सरकार द्वारा किसान हित में किए कार्यों की जानकारी देते हुए अनुराग सिंह ठाकुर ने बताया, ÷सिंचाई योजनाओं के लिए मोदी सरकार ने डेढ़ गुना ज्यादा यानी लगभग ?15 हजार 500 करोड़ रुपए खर्च किए। कांग्रेस के समय कृषि ऋण मात्र 7 लाख करोड़ रुपए के आसपास था जिसे बढ़ाकर हमने 20 लाख करोड़ रुपए किया है। और यह मात्र पिछले वर्ष का आंकड़ा है। इनके समय एक्सपोर्ट 2 लाख 62 हजार करोड रुपए का था, हमने 4 लाख 27 हजार करोड़ का किया। इसी प्रकार आप अगर कोई भी दूसरा क्षेत्र लेंगे तो उसमें भी कांग्रेस बिल्कुल फीकी दिखाई देगी।'

अब हर दिन एक घंटे के लिए बंद होंगे रामलला के कपाट

अयोध्या। श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने झल शुक्रवार से अपराह्न में एक घंटे के लिए राम मंदिर के कपाट बंद रखने का फैसला लिया है। राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास के मुताबिक रामलला शुक्रवार से अपराह्न में एक घंटे का विश्राम करेंगे। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद मंदिर में आने वाले भक्तों की भीड़ को देखते हुए मंदिर ट्रस्ट ने दर्शन का समय सुबह छह बजे से रात 10 बजे तक बढ़ा दिया है। दरअसल, श्री रामलला पांच साल के बाल स्वरूप में हैं, इसलिए बाल देवता को कुछ आराम देने के लिए ट्रस्ट ने फैसला किया है कि मंदिर के कपाट अपराह्न में एक घंटे तक बंद कर दिए जाएंगे। मंदिर अपराह्न साढ़े 12 बजे से अपराह्न एक बजकर 30 मिनट तक बंद रहेगा।

क्या गठबंधन की गाड़ी पर ड्राइविंग सीट पर तेजस्वी और बगल राहुल गांधी बैठेंगे?

सासाराम (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर हैं और उन्होंने बिहार में दस्तक दी है। राहुल ने सासाराम में रोड शो किया है और उनके साथ तेजस्वी यादव भी ड्राइविंग सीट पर नजर आए। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव और राहुल गांधी एक ही गाड़ी में साथ रहे। राहुल गांधी तेजस्वी यादव की बाईं ओर बैठे थे।

जानकारी के अनुसार, राहुल गांधी ने ही तेजस्वी यादव को ड्राइविंग ऑफर की थी। एक जीप पर एक साथ दिखने के बाद ये दोनों एक मंच पर नजर आएंगे। बता दें कि इंटर कॉलेज मैदान में राहुल गांधी की सभा होगी और इसमें बिहार कांग्रेस के नेता भी राहुल गांधी के साथ होंगे। तेजस्वी यादव की राहुल गांधी से मुलाकात के बाद बिहार में सियासी पारा हाई है। सियासत के जानकारों की मानें तो इस तस्वीर से यह भी साफ हो रहा है कि नीतीश कुमार के इंडिया अलायंस से अलग होने के बाद बिहार की राजनीति का फ्यूचर कुछ ऐसा ही दिखेगा।

दरअसल, यह बात बिहार में सीट शेयरिंग से भी जुड़ती है, जिसको लेकर अभी भी मंथन जारी है और अब तक बात फाइनल नहीं हुई है। इसमें राजद, कांग्रेस और वाम दलों के बीच बातचीत अभी जारी है। इंडिया अलायंस कहिये या फिर बिहार में महागठबंधन, ड्राइविंग सीट पर राजद रहेगा तेजस्वी यादव इसका नेतृत्व करेंगे और बगल में कांग्रेस रहेगी और राहुल गांधी की कांग्रेस इनके अनुसार ही बिहार में अपनी राजनीतिक यात्रा बढ़ाएगी। बता दें कि राहुल गांधी का काफिला सासाराम के पुरानी जीटी रोड से होकर गुजरा। उनका रोड शो जमुहार से निकलकर सासाराम के मुख्य बाजार से होते हुए उनका रोड से गुजरा। विभिन्न दालों के कार्यकर्ता भी इस दौरान मौजूद रहे। खासकर गठबंधन के कार्यकर्ता काफी उत्साहित थे। हालांकि, सड़कों पर आम लोगों की भीड़ अपेक्षा के अनुरूप नहीं थी। बता दें कि राहुल गांधी शिवसागर प्रखंड में जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद चेनारी के टेकारी में मैं भी राहुल गांधी की सभा होगी। रोहतास के बाद कैमूर में राहुल गांधी की न्याय यात्रा आगे बढ़ेगी और इसके बाद मोहनिया होते हुए यूपी के चंदौली में प्रवेश कर जाएंगे।

कनाडा में फिर हुआ हिंदू मंदिरों पर हमला

टोरंटो । इंडो-कनाडाई समुदाय ने ओंटारियो प्रांत में हिंदू मंदिरों को निशाना बनाकर लगातार हो रही चोरियों पर निराशा व्यक्त की है। ओकविले शहर के वैष्णो देवी मंदिर में अज्ञात व्यक्तियों ने मंदिर में सेंध लगाई, मूर्तियों के सामने रखे दान बक्सों से पर्याप्त मात्रा में नकदी ले ली और कार्यालयों में भी तोड़फोड़ की और यहां तक कि वीडियो रिकॉर्डिंग के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरण भी चुरा लिए। सुरक्षा उद्देश्यों के लिए बाहरी और आंतरिक क्लोज-सर्किट कैमरे लगाए गए। मंदिर के अध्यक्ष केशव अग्निहोत्री ने कहा कि चोरी से समुदाय स्तब्ध है। उन्होंने कहा कि हर कोई सोच रहा है कि एक धार्मिक स्थल पर ऐसी घटना क्यों होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हॉल्टन क्षेत्रीय पुलिस के अधिकारियों ने मंदिर का दौरा किया और अपराध की जांच कर रहे हैं। हालाँकि, इससे समुदाय के भीतर बढ़ती चिंता कम नहीं हुई है। हमारे संस्थान एक आसान लक्ष्य बन रहे हैं। यह विचार नेशनल एलायंस ऑफ इंडो-कैनेडियन्स द्वारा साझा किया गया था, जिसका मानना था कि हिंदू पूजा स्थलों की लक्षित चोरी और बर्बरता की सभी सही सोच वाले कनाडाई लोगों द्वारा निंदा की जानी चाहिए। समुदाय की नेता रुचि वाली ने घुसपैठ के बारे में पोस्ट कर पूछा कि रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस या आरसीएमपी कब इस चल रहे मुद्दे का समाधान करेगी और इसे एक अनोखी घटना के रूप में नहीं मानेगी?

पश्चिम अफ्रीका और साहेल में चरमपंथी समूह इस्लामिक स्टेट का प्रभाव बढ़ता जा रहा

संयुक्त राष्ट्र । संयुक्त राष्ट्र के आतंकवाद रोधी कार्यालय के प्रमुख ने कहा कि पश्चिम अफ्रीका और साहेल में राजनीतिक अस्थिरता के बीच चरमपंथी समूह इस्लामिक स्टेट एक बढ़ता हुआ खतरा बना है। व्लादिमीर वोरोन्कोव ने संयुक्त राष्ट्र के निष्कर्षों को दोहराया कि खतरे का मुकाबला करने में संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद आईएस खासकर संघर्षरत क्षेत्रों में, अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा बना हुआ है। वोरोन्कोव ने कहा कि समूह ने इराक और सीरिया के साथ-साथ दक्षिण पूर्व एशिया में अपने पूर्व गढ़ों में भी अभियान तेज कर दिया है। वोरोन्कोव ने बताया कि अफ्रीका महाद्वीप में स्थित साहेल क्षेत्र और पश्चिमी अफ्रीका की स्थिति खराब हो गई है और यह ''अधिक जटिल होती जा रही है, क्योंकि स्थानीय जातीय व क्षेत्रीय विवाद चरमपंथी समूह के एजेंडे और संचालन के अनुकूल हैं।

नेपाल पुलिस ने 11 भारतीय बंधक मुक्त कराए

काठमांडू । नेपाल पुलिस ने मानव तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ कर अमेरिका भेजने के नाम पर दो सप्ताह से बंधक बनाकर रखे गए 11 भारतीय व्य?क्तियों को मुक्त कराया। मामले में आठ भारतीय माफिया सदस्यों के साथ नेपाली नागरिकों को गिरफ्तार किया गया। नेपाल पुलिस ने इसे ऑपरेशन डंकी नाम दिया क्योंकि यह मामला अभिनेता शाहरुख खान की 2023 की फिल्म डंकी में दिखाई गई स्थिति के समान था। बचाए गए व्यक्ति और माफिया सदस्य ज्यादातर भारतीय राज्यों पंजाब और हरियाणा से आए थे। पुलिस ने बताया कि 11 लोगों को काठमांडू के बाहरी इलाके में दो सप्ताह से अधिक समय तक किराए के एक घर में बंधक बनाकर रखा गया था। गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए धोबीखोला कॉरिडोर, रातोपुल में एक नेपाली नागरिक के निजी आवास पर छापा मारा और 11 भारतीय नागरिकों को मुक्त कराया, जिन्हें मेक्सिको के रास्ते अमेरिका भेजने के बहाने बंधक बना लिया गया था।

एसपीएफ इजराइल-हमास संघर्ष पर विरोध प्रदर्शनों को नहीं देगा अनुमति

सिंगापुर सिटी । सिंगापुर बोटेनिक गार्डन में सप्ताहांत पर मार्च निकालने के ऑनलाइन आह्वान के बीच सिंगापुर पुलिस बल (एसपीएफ) इजराइल-हमास युद्ध से संबंधित विरोध-प्रदर्शनों को अनुमति नहीं देने के अपने रुख पर बरकरार है। सिंगापुर बोटेनिक गार्डन, ब्रिटेन और अमेरिका दूतावास के निकट एक विशाल पार्क है, जहां अधिकतर राजनयिक सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। पुलिस ने बताया कि वह इजराइल-हमास संघर्ष पर वॉक-आउट सिंगापुर नाम के एक कार्यक्रम के लिए सोशल मीडिया पर चलाए जा रहे अभियान से भली भांति वाकिफ है। एसपीएफ ने बताया कि पुलिस ने आयोजक से संपर्क किया और इस मामले पर उसे नसीहत दी गई है। एक खबर में बताया गया है ?कि इस तरह के आयोजनों के लिए पुलिस की मंजूरी की आवश्यकता होती है। पुलिस ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन एक अपराध है। इस सप्ताह की शुरुआत में अधिकारियों ने बताया था कि उन्हें सिंगापुर एयरशो में इजराइल के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के आह्वान के बारे में जानकारी है और उन्होंने चेतावनी जारी कर कहा कि बिना मंजूरी के इस तरह की सार्वजनिक सभा या जुलूस का आयोजन या उसमें भाग लेना गैरकानूनी है। सिंगापुर में अगले मंगलवार से होने वाले छह दिवसीय एयर शो में इजराइली रक्षा दल हिस्सा ले रहा है।

रूस का उपग्रह रोधी परमाणु क्षमता विकसित करना चिंताजनक : व्हाइट हाउस

मास्को । रूस द्वारा उपग्रह रोधी परमाणु क्षमता विकसित करना परेशान करने वाला हो सकता है लेकिन यह किसी की भी सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है क्योंकि इसे अभी अमल में नहीं लाया गया है। व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। यहां व्हाइट हाउस में संवाददाताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में रणनीतिक संचार के समन्वयक जॉन किर्बी ने बताया कि यह क्षमता सक्रिय नहीं है। उन्होंने कहा कि हम किसी एक हथियार के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, जिसे इंसानों पर हमले या फिर पृथ्वी पर तबाही मचाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। हम रूसी गतिविधियों पर करीब से नजर रखे हुए हैं और हम इसे गंभीरता से लेते रहेंगे। किर्बी ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन इस बात से भलीभांति वाकिफ हैं और उनके राष्ट्रीय सुरक्षा दल को नियमित रूप से जानकारी दी जा रही है। किर्बी ने कहा कि उन्होंने शुरुआत में ही कई निर्देश दिये हैं, जिसमें सांसदों को जानकारी देना, हमारे सहयोगियों और हमारे साझेदारों के साथ-साथ रूस से सीधे राजनयिक जुड़ाव जैसी चीजें शामिल हैं। एक दिन पहले हाउस इंटेलिजेंस कमेटी के अध्यक्ष माइक टर्नर ने बाइडन प्रशासन से खतरे का विवरण सार्वजनिक करने का आग्रह किया था।

ब्राजील पुलिस ने पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो के छोटे बेटे को आरोपी बनाया

ब्राजीलिया । ब्राजील पुलिस ने कथित धोखाधड़ी के मामले में पूर्व राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो के बेटे छोटे बेटे को आरोपी बनाया है। ब्राजील के संघीय जिला क्षेत्र की पुलिस ने एक बयान में कहा कि जायर रेनन बोल्सोनारो और उनके एक मित्र कपटपूर्ण गलतबयानी, बैंक ऋण अनुरोध के संबंध में फर्जी दस्तावेजों के उपयोग और धनशोधन के संदिग्ध हैं। पुलिस ने विस्तृत विवरण देने से इनकार कर दिया। अगस्त 2023 में पुलिस द्वारा कुछ दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब्त किए जाने के बाद से जायर रेनन कोई भी गलत काम से इनकार करते रहे हैं। ब्राजील पुलिस ने इस महीने की शुरुआत में पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो के शीर्ष सहयोगियों के घरों और कार्यालयों पर छापा मारा था और एक मामले की जांच के तहत बोल्सोनारो का पासपोर्ट जब्त कर लिया था। इस मामले में आरोप लगाया गया कि बोल्सोनारो ने आठ जनवरी 2023 को नए राष्ट्रपति के तौर पर शपथ लेने वाले लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा को हटाने के लिए तख्तापलट की साजिश रची थी।

कैंसर का टीका बनने के करीब पहुंचे रुसी वैज्ञानिक, पुतिन ने किया दावा

मास्को । रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कैंसर के इलाज को लेकर एक बड़ा दावा किया। पुतिन ने दावा किया कि उनके देश के वैज्ञानिक कैंसर मरीजों के लिए वैक्सीन बनाने के बेहद करीब पहुंच गए हैं। रूसी राष्ट्रपति ने कैंसर वैक्सीन के जल्द मरीजों के लिए उपलब्ध होने का दावा किया। मॉस्को फोरम में रूसी राष्ट्रपति ने कहा, हम तथाकथित कैंसर के टीके और नई पीढ़ी की इम्यूनोमॉड्यूलेटरी दवाओं के निर्माण के बहुत करीब आ गए हैं। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही इन्हें व्यक्तिगत चिकित्सा के तरीकों के रूप में प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जाएगा। हालाँकि, पुतिन का बयान अपने आप में काफी मायने रखता है क्योंकि दुनियाभर के देश कैंसर का इलाज ढूंढ़ने में लगे हुए हैं।

अमेरिका में केडेनी स्पेस सेंटर से एक फाल्कन 9 रॉकेट नोवा सी मून लैंडर के साथ मून मिशन पर निकला।

अमेरिका में लगातार बढ़ रहे भारतीय छात्रों पर हमले, बाइडेन सरकार चिंतित

वाशिंगटन। अमेरिका में राष्ट्रपति जो बाइडेन के आधिकारिक आवास व्हाइट हाउस ने बयान जारी कहा, अमेरिकी सरकार रंग या लिंग के आधार पर होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा को स्वीकार नहीं करेगी। भारतीय व भारतीय मूल के छात्रों पर हमलों को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गौर करने वाली बात है कि भारतीय मूल के विधार्थियों अनेक बार हमले हुए, जिस पर रोक लगाने के लिए अमेरिकी सरकार ने अब कठोर कदम उठाने का फैसला किया है। इस साल अमेरिका में हिंसा के शिकार हुए चार भारतीयों को अपनी जान गंवा दी। वहीं, व्हाइट हाउस ने कहा, रंग, लिंग या धर्म के आधार पर होने वाली हिंसा को किसी भी कीमत पर स्वीकारा नहीं जा सकता। बाइडेन सरकार भारत और अमेरिका में रह रहे भारतीय माता-पिता के जेहन में अपने बच्चों को लेकर पैदा हुए भय को दूर करने की दिशा में कड़ी मेहनत कर रही है। इसके साथ ही किर्बी ने कहा, बाइडेन सरकार मौजूदा स्थिति को दुरूस्त करने और भारतीय मूल के विधार्थियों पर हो रहे हमलों को रोकने के लिए पूरा खाका तैयार कर चुकी है, जिस जमीन पर उतारा जाएगा। गौरतलब है कि साल की शुरुआत में हिंसा का शिकार होकर भारतीय मूल के पांच विधार्थी अपनी जान गंवा चुके हैं। वहीं, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी इस बात पर विशेष जोर दिया कि उनकी सरकार विदेश में रह रहे भारतीय विधार्थियों की सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले भारतीय विधार्थियों की संख्या में 35 फीसद की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

जापान के बाद अब ब्रिटेन भी मंदी का शिकार, ये आम लोगों की जिंदगी पर क्या डालेगा प्रभाव

इस्लामाबाद (एजेंसी)। जापान की अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित रूप से मंदी की चपेट में आ गई और देश ने दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का अपना स्थान खो दिया है। अब ये खिलाब जर्मनी को मिल गया है। जापान तीसरी अर्थव्यवस्था के पायदान से फिलकर चौथे पर आ गया है। चालू वित्त वर्ष की तिसरी तिमाही में जापान की अर्थव्यवस्था में गिरावट देखने को मिली थी। इस गिरावट की वजह से जापान में मंदी के आसार बने हुए हैं। जापान और ब्रिटेन में क्या हुआ? इसका आम आदमी पर क्या असर हो सकता है इस रिपोर्ट से आपको बताते हैं।

जापान में क्या हुआ

कमजोर घरेलू मांग ने जापान की अर्थव्यवस्था पर असर डाला है और लगातार दूसरी तिमाही में इसमें अप्रत्याशित गिरावट आई है, जिससे इस साल किसी समय अपनी अति-आसान नीति से बाहर निकलने की केंद्रीय बैंक की योजना के बारे में अनिश्चितता बढ़ गई है। जर्मनी अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गया है। परिवारों और व्यवसायों द्वारा लगातार तीसरी तिमाही में खर्च में कटौती के कारण जापान की अर्थव्यवस्था पिछले साल अमेरिकी डॉलर के मामले में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने पिछले साल अक्टूबर में अनुमान लगाया था कि अमेरिकी डॉलर में मापने पर जर्मनी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जापान से आगे निकलने की संभावना है। हालाँकि, रैंकिंग में बदलाव की घोषणा आईएमएफ द्वारा तभी की जाएगी जब दोनों देश अपने आर्थिक विकास के आंकड़ों के अंतिम संस्करण प्रकाशित कर देंगे। इसने 1980 में अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करते हुए डेटा प्रकाशित करना शुरू किया।

ब्रिटेन का क्या हाल है?

ब्रिटेन 2023 की दूसरी छमाही में हल्की मंदी की चपेट में आ गया, जिससे पता चलता है कि प्रधान मंत्री ऋषि सुनक अब तक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के अपने वादे को पूरा करने में विफल रहे हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के गुरुवार को जारी आंकड़े बताते हैं कि चौथी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद 0.3त्न गिर गया, जो अर्थशास्त्रियों के पूर्वानुमान से 0.1त्न की गिरावट से अधिक है। इसके बाद पिछले तीन महीनों में अपरिवर्तित 0.1त्न की गिरावट आई, जो अर्थशास्त्रियों की मंदी की तकनीकी परिभाषा, या संकुचन की लगातार दो तिमाहियों को पूरा करती है। पूरे वर्ष अर्थव्यवस्था में अभी भी 0.1त्न की वृद्धि हुई है, यह महामारी के पहले वर्ष को छोड़कर, 2009 के बाद से यूके में देखा गया सबसे धीमा वार्षिक विस्तार था। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था ने पिछली बार पिछले साल के पहले तीन महीनों में एक चौथाई वृद्धि दर्ज की थी।

आम आदमी के लिए इसके क्या मायने हैं?

मंदी आम आदमी के लिए बुरी है। बीबीसी के मुताबिक, कंपनियों द्वारा कर्मचारियों की छंटनी करने से बेरोजगारी बढ़ सकती है। दूसरों को पदोन्नति पाने या मूल्य वृद्धि के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए पर्याप्त वेतन वृद्धि प्राप्त करना कठिन हो सकता है। हालाँकि, मंदी का दर्द आम तौर पर पूरे समाज में समान रूप से महसूस नहीं किया जाता है, और असमानता बढ़ सकती है। लेख में कहा गया है कि निश्चित आय पर जीवन यापन करने वालों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, खासकर अगर सरकारें सार्वजनिक उपयोगिताओं पर खर्च कम कर दें।

हट गया पुतिन के रास्ते का कांटा... नेता नवलनी की मौत

-जेल में सजा के दौरान हुई मौत

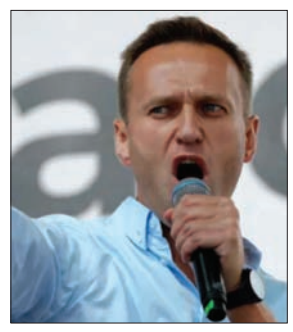

मॉस्को (एजेंसी)। जेल में बंद राष्ट्रपति पुतिन के धुरविरोधी नेता एलेक्सी नवलनी की मौत हो गई है। यमालो-नेनेट्स इलाके की जेल सेवा ने इसकी जानकारी दी। जेल में नवलनी अपनी सजा काट रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार यमालो-नेनेट्स स्वायत्त जिले की संघीय प्रायद्वीपीय सेवा ने कहा कि नवलनी ने टहलने के बाद अस्वस्थ महसूस किया और लगभग तुरंत होश खो बैठे। रिपोर्ट के मुताबिक मेडिकल स्टाफ को बुलाया गया था, लेकिन वे नवलनी को होश में नहीं ला पा रहे हैं। सरकारी सूत्रों ने कहा कि एलेक्सी नवलनी की मौत के कारण का अभी पता लगाया जा रहा है।

राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के मुखर आलोचक एलेक्सी नवलनी को पिछले साल अगस्त में रूसी अदालत ने 19 साल जेल की सजा सुनाई थी। क्रेमलिन ने दावा किया है कि उस नवलनी की मौत के कारण के बारे में कोई जानकारी नहीं है। पुतिन सरकार ने कहा कि जेल सेवा उसकी मौत के संबंध में सभी जांच कर रही थी। रूस की जांच समिति ने मौत की प्रक्रियात्मक जांच शुरू कर दी है। रिपोर्ट में बताया कि जेल में बंद विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की मौत एक हत्या है। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि जेल की स्थितियों के कारण उनकी मौत हुई।

जिस जेल कॉलोनी में नवलनी अपनी सजा काट रहे थे, वह मास्को से लगभग 1,900 किमी. (1,200 मील) उत्तर-पूर्व में यमालो-नेनेट्स क्षेत्र में गंभीर हालातों के लिए कुख्यात है। एलेक्सी नवलनी जनवरी 2021 से रूस में सलाखों के पीछे हैं। तब वह जर्मनी में नर्व एजेंट जहर के हमले से उबरने के बाद मॉस्को लौटे थे। इस हमले के लिए उन्होंने रूस की सरकार को जिम्मेदार ठहराया था। अपनी गिरफ्तारी से पहले उन्होंने आधिकारिक भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चलाया और क्रेमलिन विरोधी बड़े विरोध प्रदर्शनों का आयोजन किया।

पाकिस्तान में जागा नेता का जमीर, मुझे बईमानी से जिताया गया, मैं सीट छोड़ रहा हूं

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में हाल ही में आम चुनाव कराए गए। लेकिन अभी तक सरकार का गठन नहीं हुआ है। इमरान खान के समर्थकों ने चुनाव में बड़ी धांधली के आरोप लगाए हैं। ये महज आरोप नहीं हैं बल्कि कई वीडियो भी सामने आए हैं जिसमें खुल्लमखुल्ला धांधली का खेल दिखाई दे रहा है। इस बीच पाकिस्तान के ही एक राजनेता ने मिसाल पेश कर अपनी सीट ही छोड़ दी। नेता का कहना है कि मुझे बेईमानी से जिताया गया इसलिए वह जनता के साथ धोखा नहीं करना चाहता। नेता कहा कि उस सीट पर इमरान खान के समर्थक को ज्यादा वोट मिले थे, फिर भी हेरफेर करके मुझे विजयी घोषित करवा दिया गया। रिपोर्ट के मुताबिक जमीयत-ए-इस्लामी के हाफिज नईम ने प्रांतीय विधानसभा की सीट पीएस-129 अपने विरोधी के लिए छोड़ दी। बता दें कि कराची शहर में यह सीट है। नईम का कहना है कि इस सीट पर इमरान समर्थक उम्मीदवार ने 31 हजार वोट हासिल किए थे वहीं उन्हें 26 हजार वोट ही मिले थे। हालांकि गड़बड़ी करके विरोधी को केवल 11 हजार वोटों पर समेट दिया गया। अब हाफिज नईम के आरोपों से पाकिस्तानी चुनाव आयोग भी सकते में आ गया। पाकिस्तान में सियासी खींचतान के बीच इमरान खान ने अमेरिका से मदद की गुहार लगाई है। उनका कहना है कि निष्पक्ष मतगणना नहीं कराई गई है। इमरान ने कहा कि उनके उम्मीदवारों को जान-बूझकर हरा दिया गया है। इसके बाद अमेरिका को इन चुनावों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। इमरान का कहना है कि उनके उम्मीदवारों को ज्यादा वोट मिले थे जो कि बाद में कम कर दिए गए। अमेरिका ने भी कहा कि पाकिस्तान के हालात को लेकर चिंता जाहिर की है। बता दें कि चुनाव से पहले ही इमरान खान को कई मामलों में सजा सुना दी गई थी। इसके बाद उनकी पार्टी का नाम और निशान भी छीन लिया गया। इमरान के समर्थकों ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा था। पाकिस्तान में इमरान खान के समर्थकों को सबसे ज्यादा सीटें हासिल हुई हैं।

इमरान खान की पत्नी बुशरा को जान का खतरा! जेल में बीमार पड़ने के बाद बहन ने किया दावा

इस्लामाबाद(एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वकील ने जेल अधिकारियों पर उनके भोजन के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। बुशरा बीबी वर्तमान में अपने बानीगाला निवास में कैद हैं, जिसे तोशाखाना मामले में उनके और इमरान खान की सजा और सजा के बाद उप-जेल के रूप में नामित किया गया है। घटना छह दिन पहले की है। बुशरा बीबी के वकील और प्रवक्ता मशाल यूसुफजई ने आरोप लगाया है कि पूर्व प्रथम महिला को असामान्य मसालेदार भोजन खाने के बाद स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हुईं।

यूसुफजई ने एक बयान में कहा कि बुशरा बीबी ने उन्हें बताया कि जेल अधिकारियों ने जानबूझकर भोजन

में एक अम्लीय रासायनिक पदार्थ मिलाया था। यूसुफजई ने कहा कि उस भोजन को खाने के बाद उसके मुंह और गले में छाले हो गए हैं और तब से वह बहुत अस्वस्थ है। उन्होंने आगे कहा कि वह देश को इस दुर्भावनापूर्ण कृत्य और इससे होने वाले नुकसान के बारे में बताना चाहती हैं। इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने एक्स पर एक पोस्ट में फासीवादी शासन पर इमरान खान की पत्नी पर दुर्भावनापूर्ण हमला करने और उन्हें आवश्यक चिकित्सा सहायता देने से इनकार करने का आरोप लगाया।

पोस्ट में आगे कहा गया कि कोई गलती न करें, इन जघन्य कृत्यों के लिए जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। पाकिस्तान मजबूत है। इमरान खान मजबूत हैं। पार्टी ने मामले की तात्कालिकता पर जोर देते हुए उच्च न्यायालयों से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया है।

मिस्र की नई पहल, फिलिस्तीनियों के लिए स्थापित कर रहा गाजा सीमा के पास आश्रय शिविर

गाजा। मिस्र गाजा सीमा पर एक क्षेत्र तैयार कर रहा है, जहां राफा में इजरायली हमले की स्थिति में फिलीस्तीनियों को समायोजित किया जा सकता है। मिस्र ने ऐसी किसी भी तैयारी से इनकार किया है। उसने बार-बार इस संभावना पर चिंता जताई है कि इजरायल के विनाशकारी गाजा हमले से फिलिस्तीनियों को सिनाई में विस्थापित किया जा सकता है। काहिरा का कहना है कि यह पूरी तरह से अस्वीकार्य होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका ने बार-बार कहा है कि वह गाजा से फिलिस्तीनियों के किसी भी विस्थापन का विरोध करेगा। सूत्रों में से एक ने कहा कि मिस्र आशावादी है कि संघर्ष विराम लागू करने के लिए बातचीत से ऐसे किसी भी परिदृश्य से बचा जा सकता है, लेकिन अस्थायी और एहतियाती उपाय के रूप में सीमा पर क्षेत्र स्थापित कर रहा है। तीन सुरक्षा सूत्रों ने कहा कि मिस्र ने कुछ बुनियादी सुविधाओं के साथ एक रेगिस्तानी क्षेत्र तैयार करना शुरू कर दिया है जिसका उपयोग फिलिस्तीनियों को आश्रय देने के लिए किया जा सकता है, उन्होंने जोर देकर कहा कि यह एक आकस्मिक कदम था। इस कहानी के लिए रॉयटर्स ने जिन सूत्रों से बात की, उन्होंने मामले की संवेदनशीलता के कारण नाम बताने से इनकार कर दिया। इज़राइल ने कहा है कि वह राफा में हमास के 'आखिरी गढ़' पर कब्ज़ा करने के लिए आक्रामक हमला करेगा, जहां 1 मिलियन से अधिक फ़िलिस्तीनियों ने उसके विनाशकारी गाजा हमले से शरण मांगी है। इज़राइल ने कहा है कि उसकी सेना रफ़ा से नागरिकों को गाजा पट्टी के अन्य हिस्सों में ले जाने की योजना बना रही है।

पोलैंड सरकार की नीतियों के खिलाफ 5 सौ ट्रैक्टर लेकर पहुंचे किसानों ने दफ्तर पर फेंके अंडे

वारसा(एजेंसी)। पोलैंड के किसान देश की सरकार की नीतियों के खिलाफ लगातार विरोध-प्रदर्शनों कर रहे हैं। वे यूरोपीय यूनियन का भी विरोध कर रहे हैं। बीते दिन विरोध-प्रदर्शन में ईयू के मुख्यालय पर किसानों ने अंडे फेंके। 500 ट्रैक्टर के साथ एक हजार किसान सड़कों पर हैं। 20 फरवरी को देश की सीमाएं सील करने की चेतावनी दी है।पोलैंड के किसानों ने पश्चिमी शहर ब्रोकला में गुरुवार को जमकर विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने यूरोपीय यूनियन की ऑफिस पर अंडे भी फेंके। आगजनी की और ईयू ग्रीन डील के खिलाफ अपना विरोध दर्ज किया।

किसानों ने यूक्रेन के साथ सभी सीमा क्रॉसिंगों की पूर्ण नाकाबंदी और 20 फरवरी को राजधानी वारसॉ में एक बड़े विरोध प्रदर्शन की योजना बनाई है। किसानों ने ना सिर्फ यूक्रेन की सीमाएं बल्कि कम्यूनिकेशन सेंटर से लेकर ट्रांसशिपमेंट्स, रेलवे स्टेशनों और समुद्री बंदरगाहों को भी सील करने की चेतावनी दी है। यूरोपीय किसान उसी दिन पहले से घोषित स्टार मार्च में सभी दिशाओं से वारसॉ पहुंचेंगे। वहीं 22 फरवरी को चेक गणराज्य के किसान भी मध्य और पूर्वी यूरोप के किसानों के साथ विरोध-प्रदर्शन में शामिल होंगे और अपने देश की सीमाओं को सील करेंगे।

यूरोपीय देश में किसान ट्रैक्टर के साथ पिछले कई दिनों से सड़कों पर हैं। पूरे यूरोप में किसान जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए यूरोपीय यूनियन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का विरोध कर रहे हैं। किसानों का कहना है कि पाबंदियों की वजह से किसानी की लागत बढ़ रही है, मुनाफा कम है। पड़ोस के यूक्रेन युद्ध का भी पोलैंड के किसानों पर गंभीर असर पड़ा है। गुरुवार के विरोध-प्रदर्शन में लगभग एक हजार की संख्या में किसान 500 ट्रैक्टर और अन्य कृषि में इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों के साथ सड़क पर उतरे। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स में किसानों को पोलिश झंडे, बैनर और कुछ मामलों में फ्लेयर लिए हुए सड़कों पर मार्च करते देखा गया। किसान क्षेत्रीय सरकारी मुख्यालय के सामने इकट्ठा हुए जहां उन्होंने टायरों में आग लगा दी, जिससे पूरा इलाका धुआं-धुआं हो गया। पोलैंड के किसान यूक्रेन से सस्ते खाद्य आयात का विशेष रूप से विरोध कर रहे हैं। मसलन, स्थानीय किसानों का अनाज खरीदे जाने के बजाय सरकार पड़ोसी यूक्रेन से सस्ते में इंपोर्ट करती हैं। यही वजह है कि पिछले शुक्रवार से किसान 30-दिवसीय हड़ताल पर हैं। इस बीच यूक्रेन के साथ लगने वाली कुछ सड़कों को किसान ने ब्लॉक भी कर दिया है।

विलियमसन ने टेस्ट में सबसे तेजी से 32 शतक का रिकार्ड बनाया

नई दिल्ली ।

केन विलियमसन ने बनाया महारिकॉर्ड

न्यूजीलैंड के अनुभवी बल्लेबाज केन विलियमसन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में शतक लगाने के साथ ही महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का एक रिकार्ड तोड़ दिया है। विलियमसन ने हेमिल्टन टेस्ट की दूसरी पारी में शानदार शतक लगाया। विलियमसन अब टेस्ट शतकों की तादाद 32 हो गयी है। पिछली 12 पारियों में इस खिलाड़ी ने 7 शतक लगाये हैं। इस प्रकार टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 32 शतक तक पहुंचने के मामले में उन्होंने सभी को पीछे छोड़ दिया है। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ ने सबसे तेजी से 174 पारियों में ये आंकड़ा हासिल किया था और वह दूसरे नंबर पर हैं जबकि विलियमसन ने 172 पारियों में ही यह रिकार्ड बना दिया। वहीं ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग इस मामले में तीसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 176 पारियों में ये उपलब्धि हासिल की थी जबकि तेंदुलकर ने 179 पारी खेलने के बाद 32वां टेस्ट शतक जमाया था। विलियम्सन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में 118, 109, 43 और 105 रन बनाये।

डकेट के तेज शतक से इंग्लैंड का ठोस जवाब, दो विकेट पर 207 रन बनाये

राजकोट।

ओपनर बेन डकेट के तेज शतक से इंग्लैंड ने तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के दूसरे दिन अच्छी बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 207 रन बनाये। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय डकेट नाबाद 133 रन जबकि जो रूट नौ रन बनाकर खेल रहे थे।

वहीं इससे पहले भारतीय टीम अपनी पहली पारी में 445 रनों पर आउट हो गयी थी। इस प्रकार मेहमान टीम अभी भारतीय टीम से 238 रन पीछे है। तीसरे दिन के खेल में डकेट ने अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से सबको प्रभावित किया। उन्होंने 88 गेंदों पर ही शतक लगा दिया और भारतीय गेंदबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। डकेट दिन का खेल समाप्त होने के समय 118 गेंद में 21 चौकों और दो छक्कों की मदद से नाबाद 133 रन बनाकर खेल रहे थे। उन्होंने जैक क्राउली 15 के साथ पहले विकेट के लिए 89 और ओली पोप 39 रनों के साथ दूसरे विकेट के लिए 93 रन बनाये।

इससे पहले भारतीय टीम ने अपना पहला टेस्ट खेल रहे ध्रुव जुरेल 46 रन और अश्विन 37 रन के बीच आठवें विकेट की 77 रन की साझेदारी से पहली पारी में 445 रन बनाए। वहीं पहले दिन कप्तान रोहित शर्मा ने 131 जबकि रविंद्र जडेजा ने 112 रन बनाये थे। इसके अलावा जसप्रीत बुमराह ने नाबाद 26 और मोहम्मद सिराज ने नाबाद 03 रन बनाये।

वहीं इस मैच में भारतीय टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने अपने 500 विकेट पूरे किये। इस प्रकार वह पूर्व कप्तान अनिल कुंबले के बाद 500 टेस्ट विकेट हासिल करने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बने।

अश्विन को यह उपलब्धि हासिल करने के लिए सिर्फ एक विकेट चाहिये थे। उन्होंने जैफ क्राउली को आउट कर अपने 500 विकेट पूरे किये। डकेट ने इंग्लैंड की ओर से तेज शुरुआत करते हुए बुमराह पर चौका लगा दिये। उन्होंने अगले ओवर में दो और चौके लगाये। डकेट ने कुलदीप यादव की गेंदों पर चौके लगार अपना अर्धशतक बनाया। अश्विन ने अपने दूसरे ही ओवर में क्राउली को आउट करके भारत को पहला विकेट दिलाया।

डकेट ने इसके बाद ओली पोप के साथ पारी को आगे बढ़ाना शुरु किया। डकेट ने सिराज पर लगातार दो चौकों के साथ शतक पूरा किया। वह 86 गेंद में सबसे तेज शतक के क्राउली के रिकॉर्ड को तोड़ नहीं पाये। सिराज ने पोप को का विकेट लेकर ये साझेदारी तोड़ी।

इस मैच में आर अश्विन के मैदानी अंपायर से उलझने ओर पिच पर दौड़ने के लिए भारतीय टीम पर जुर्माना लगाया। इससे इंग्लैंड को पांच रन बिना खेले ही मिल गये।

संक्षिप्त समाचार

अश्विन ने पूरे किये 500

राजकोट । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ जारी तीसरे टेस्ट मैच में अपने 500वें विकेट पूरे करने के साथ ही एक अहम उपलब्धि हासिल की है। अश्विन ने खेल के तीसरे सत्र में जैक क्रॉली का विकेट लेने के साथ ही 500 विकेट का आंकड़ा हासिल किया। अश्विन ने 500 विकेट लेने के लिए 25715 गेंदें फेंकीं जबकि पूर्व तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्राथ ने इसके लिए सबसे कम 25528 गेंदें लीं थीं। इसके अलावा अश्विन ने अपने 98वें टेस्ट में ही ये विकेट लिए हैं। कुंबले ने ये रिकार्ड 105 मैचों में बनाया था। अश्विन टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे तेज 500 विकेट लेने वाले दूसरे और कुल नौवें गेंदबाज हैं। वहीं कुंबले ने 132 टेस्ट मैचों में 619 विकेट हासिल लिए थे और वह इस सूची में दूसरे नंबर पर हैं जबकि 133 खेलों में 800 विकेट के साथ श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन टेस्ट में सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं।

पीसीबी ने निदेशक हफीज को हटाया , तेज गेंदबाज राऊफ को भी नहीं दिया केन्द्रीय अनुबंध

लाहौर । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने तेज गेंदबाज हारिस राऊफ के खिलाफ कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए उन्हें केन्द्रीय अनुबंध से ही बाहर कर दिया है। इसके अलावा पूर्व कप्तान मो हफीज को भी क्रिकेट निदेशक पद से हटा दिया है। राऊफ के खिलाफ ये कदम इसलिए उठाया गया है क्योंकि वह ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज से हट गये थे। पीसीबी ने साथ ही कहा कि हारिस को 20 जून 2024 तक किसी भी विदेशी लीग में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) नहीं दिया जाएगा। पीसीबी ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के 2023-24 दौरे के लिए पाकिस्तान की टेस्ट टीम के साथ जुड़ने से मना करने के मामले की जांच के बाद ही राउफ को सजा दी गयी है जिससे अन्य खिलाड़ियों को भी सबक मिले। पीसीबी ने कहा , इस मामले से जुड़े सभी हितधारकों के नजरिए पर विचार करने के बाद हारिस के केंद्रीय अनुबंध को एक दिसंबर 2023 से रद्द किया जाता है और 30 जून 2024 तक उसे किसी विदेशी लीग में खेलने के लिए एनओसी भी नहीं दी जाएगी। पीसीबी ने कहा कि उसके प्रबंधन ने 30 जनवरी को हारिस को व्यक्तिगत सुनवाई में अपा पक्ष रखने का मौका दिया था पर उनका जवाब असंतोषजनक रहा। इसके अलावा पीसीबी ने क्रिकेट निदेशक हफीज को भी पद से हटा दिया। पीसीबी ने सोशल मीडिया पर लिखा, पीसीबी हफीज के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता है। खेल के प्रति हफीज के जुनून ने खिलाड़ियों को प्रेरित किया है। टीम का स्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का दौरा बेहद अहम रहा है। पीसीबी हफीज को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं और सफलता देता है।आईसीसी विश्व कप 2023 में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद हफीज को पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम का निदेशक नियुक्त किया गया गया था पर उनका कार्यकाल बेहद छोटा रहा।

हम वही करना चाहते हैं जो हमने पिछले साल किया था: हरमनप्रीत कौर

मुंबई,

'दबाव न लें', 'चीजों को सरल रखें', और 'अपनी और एक-दूसरे की सफलता का आनंद लें', सरल कीवर्ड, अक्सर विशिष्ट खेलों में उछाले जाते हैं, लेकिन ये वे स्तंभ थे जिन्होंने मुंबई इंडियंस का निर्माण किया। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के उद्घाटन सत्र में खिताब जीतने का अभियान। बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में दूसरे सीज़न का पहला मैच (23 फरवरी) शुरू होने में ठीक एक हफ्ते का समय बचा है और मुंबई इंडियंस की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने शुक्रवार को मुंबई में प्री-सीज़न प्रेस कॉन्फ्रेंस में यही बात दोहराई। हरमनप्रीत ने कहा, हम बस वही करना चाहते हैं जो हमने पिछले साल किया था, चीजों को सरल रखें और अपने क्रिकेट का आनंद लें। हम उम्मीद करते हैं कि सभी खिलाड़ियों को स्पष्ट भूमिकाएँ दी जाएँ ताकि वे वहाँ जाकर प्रदर्शन कर सकें। मुझे पता है कि इस बार बहुत सारी निगाहें हम पर होंगी क्योंकि हमने पिछले साल जीत हासिल की थी, लेकिन पिछले साल भी हमने खुद पर कोई दबाव नहीं डाला था। हम एक समान माहौल बनाने की कोशिश करेंगे, एक-दूसरे की सफलता का आनंद लेंगे और एक-दूसरे का समर्थन करेंगे। यह हमारे कोचों के बारे में सबसे अच्छी बात है। उनका समर्थन बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। चार्लोट एडवर्ड्स, एमआई की मुख्य कोच, और झूलन गोस्वामी, एमआई की मेंटर और बॉलिंग कोच, महिलाओं के खेल के दो प्रमाणित दिग्गजों ने समान रूप से मजबूत कोचिंग माहौल बनाने के लिए हाथ मिलाया है।चार्लोट ने कहा, हमने 12 महीने पहले टीम चुनी थी, और खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के समूह के लिए यह कितना अद्भुत अनुभव था। उस ट्रॉफी को उठाना, जैसा कि हरमन ने उस रात ब्रेबॉर्न स्टेडियम में किया था, मेरे करियर के मुख्य आकर्षणों में से एक होगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन लोगों के साथ हमने यह किया, सभी युवाओं के साथ। यह एक अविश्वसनीय समय था।

झूलन के साथ काम करने के लिए। उसने मुझे कई बार आउट किया और वह मुझे इसकी बहुत याद भी दिलाती है। आखिरकार उनके साथ काम करना और एक ही टीम में रहना बहुत अच्छा था। गोस्वामी ने एडवर्ड्स के साथ मिलकर काम करने के बारे में कहा, चार्लोट और मैं बहुत सी चीजों पर चर्चा करने की कोशिश करते हैं। यहां तक कि जब हम दोनों व्यस्त होते हैं, तब भी हम संपर्क में रहने की कोशिश करते हैं। वह पूरी तरह से पेशेवर रही है, मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है और उसके साथ हर पल का आनंद लेती हूं। ईमानदारी से कहूं तो, एक गेंदबाजी कोच के रूप में यह मेरा पहला काम है और मैंने उनसे मैदान के अंदर और बाहर बहुत कुछ सीखा है। मैं एमआई

में स्काउटिंग प्रणाली से चकित हो गई हूं। इस भूमिका में आकर मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। मैं बस इतना जानती थी कि एमआई वास्तव में इसमें अच्छा था। नीलामी से ठीक पहले स्काउट्स को एक्शन में देखना कड़ी मेहनत का प्रमाण था। हमने इसी वजह से चार खिलाड़ियों को अनुबंधित किया है। उम्मीद है, हम अगले भविष्य के सितारे का पता लगा सकते हैं, जो बहुत रोमांचक है। ऐसे दो युवा खिलाड़ी, यास्तिका भाटिया, 2023 की उभरती खिलाड़ी, और इस्सी वोंग, डब्ल्यूपीएल में हैट्रिक लेने वाले पहली खिलाड़ी, पिछले साल एमआई के खिताब की दौड़ में महत्वपूर्ण थीं। यास्तिका ने किरण मोरे के उनके करियर पर प्रभाव के बारे में भावुकता से बात की और कैसे उनके साथ प्रशिक्षण से बदलाव आया। मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स 23 फरवरी को 2023 फाइनल के रीप्ले में डब्ल्यूपीएल के दूसरे सीज़न की शुरुआत करेंगे।

जडेजा ने कपिल , अश्विन के साथ विशेष क्लब में जगह बनायी

राजकोट ।

भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर रवींद्र जड़ेजा ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में एक अहम उपलब्धि हासिल की है। इस मैच में अपने शानदार प्रदर्शन के बल पर जडेजा ने एक विशेष सूची में अपनी जगह बना ली है। अब वह टेस्ट में 3000 से अधिक रन और 250 से अधिक विकेट लेने वाले तीसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। वहीं भारतीय टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव के 131 मैचों में 5,248 रन और 434 विकेट हैं और वह इस सूची में शीर्ष पर हैं। अश्विन ने अब तक 98 मैचों में 3,271 रन बनाने के साथ ही 499 विकेट भी लिए हैं और वह दूसरे नंबर पर है जबकि जडेजा ने अब तक 70 मैचों में 3003 रन बनाए हैं और 280 विकेट लिए हैं और वह तीसरे नंबर पर हैं। जडेजा ने तीसरे टेस्ट में शतकीय पारी खेलकर भारतीय टीम को बेहतर स्कोर बनाने में भी सहायता की। उनकी कप्तान रोहित शर्मा के साथ शतकीय साझेदारी हुई।

अश्विन की गलती से भारतीय टीम पर लगा जुर्माना

राजकोट ।

भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन यहां इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के दूसरे दिन अंपायर से उलझ गये। इस कारण भारतीय टीम पर जुर्माना लगा है। अश्विन इस मैच में बल्लेबाजी करते समय मैदानी इंपायर से उलझ गए और इससे पूरी टीम को नुकसान उठाना पड़ा। भारतीय टीम पर इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट के दौरान उसके बल्लेबाजों के पिच के बीच में दौड़ने की दूसरी गलती के लिए पांच रन का जुर्माना लगाया गया। ऐसे में अब इंग्लैंड को अपनी पारी की शुरुआत से पहले ही पांच रन मिल जाएंगे। अश्विन के पिच के बीच में दौड़ने के कारण भारत पर ये जुर्माना लगाया गया है। इस मामले में मैदानी अंपायर जोएल विल्सन ने अश्विन को फटकार भी लगाई। दूसरे दिन के खेल के दौरान भारतीय पारी के 102वें ओवर की तीसरी गेंद के बाद अंपायन ने पिच के बीच में दौड़ने के लिए अश्विन को चेतावनी भी दी थी। इससे पहले रविंद्र जडेजा ने भी पहले दिन के खेल के दौरान ऐसा किया था। अश्विन ने रेहान अहमद की गेंद को खेला और बिना यह समझे कि वह कहां दौड़ रहे हैं तुरंत एक रन लेने के लिए दौड़ पड़े। अश्विन से पहले अंपायरों ने टेस्ट के पहले दिन जडेजा को भी पिच के बीच में दौड़ने के को लेकर फटकार लगायी थी। . एमसीसी के नियम के अनुसार 'पिच को जानबूझकर या जिससे बचा जा सकता है वह नुकसान पहुंचाना गलत है। यदि स्ट्राइकर गेंद को खेलते हुए सुरक्षित क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसे इसके तुरंत बाद वहां से हटना होता है।'' नियम के अनुसार 'यदि कोई अंपायर मानता है कि पिच पर उसकी उपस्थिति कारणों के बिना है तो बल्लेबाज को जिस क्षति से बचा जा सकता था उसे पहुंचाने वाला माना जाएगा।'

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म कंपनी ड्रीम 11 मुश्किल में फंसी

7.6 करोड़ रुपये किराया नहीं देने के आरोप

नई दिल्ली । ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म कंपनी ड्रीम 11 मुश्किल में फंस गयी है। उसके खिलाफ 7.6 करोड़ रुपये किराया न देने का आरोप लगा है। इस मामले में नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने ड्रीम 11 की मूल कंपनी स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ दिवालिया याचिका को स्वीकार भी कर लिया है। इस कंपनी पर 9 फरवरी को 7.6 करोड़ रुपये किराया नहीं देने के कारण ये कार्रवाई हुई हालांकि इसके बाद एनसीएलटी ने स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के खिलाफ दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू करने के आदेश पर रोक भी लगा दी। वहीं अपीलीय न्यायाधिकरण ने ड्रीम11 का बोर्ड ऑफ डायरेक्टर भंग किए जाने के बाद नियुक्त अंतरिम समाधान पेशेवर (आईआरपी) को अगली सुनवाई तक कोई कदम न उठाने के भी निर्देश दिये हैं। इस इसकी सुनवाई 23 फरवरी को होगी। गौरतलब है कि ड्रीम11 आईपीएल टी20 क्रिकेट लीग की मुख्य प्रायोजक है। वहीं इससे पहले स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज ने एनसीएलटी की मुंबई पीठ के फैसले को चुनौती दी थी। कंपनी के सह-संस्थापक एवं मुख्य परिचालन अधिकारी भावित सेठ ने यह याचिका दायर की थी। इस याचिका की सुनवाई करते हुए अपीलीय न्यायाधिकरण की 3 सदस्यीय पीठ ने स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के आईआरपी और रिवॉर्ड बिजनेस सॉल्यूशन के समाधान पेशेवर को नोटिस जारी किया और उन्हें एक सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। इस कार्यवाही के दौरान स्पोर्टा टेक्नोलॉजीज के वकील ने एनसीएलटी के नौ फरवरी को पारित आदेश पर रोक लगाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि आईपीएल टूर्नामेंट नजदीक आ रहा है और इस आदेश का असर आने वाले सत्र की तैयारियों पर पड़ेगा। वहीं एनसीएलटी ने परिचालन कर्जदाता रिवॉर्ड सॉल्यूशंस की तरफ से दायर 7.61 करोड़ रुपये के बकाया के दावे की याचिका पर ड्रीम 11 के खिलाफ दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया था।

एफआईएच प्रो लीग में भारतीय पुरुष हॉकी टीम को ऑस्ट्रेलिया ने 4-6 से हराया

भुवनेश्वर।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम को एफआईएच प्रो लीग में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 4-6 से हार का सामना करना पड़ा है। इस मैच में भारतीय टीम की ओर से कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने दो गोल किये पर वह भारतीय टीम को हार से नहीं बचा पाये। भारतीय टीम इस मैच में अंतिम क्वार्टर में गोल करने में अवसरों को गोल में बदलने में असफल रही जिससे भी उसे नुकसान हुआ। भारतीय टीम की ओर से हरमनप्रीत ने 12वें और 20वें मिनट में दो गोल पेनल्टी कॉर्नर से किये। वहीं सुखजीत सिंह ने 18वें और मंदीप सिंह ने 29वें मिनट में एक-एक मैदानी गोल किया। ऑस्ट्रेलियाई टीम की ओर से ब्लेक गोवर्स ने दूसरे मिनट में ही दो गोल दाग कर अपनी टीम को बढ़त दिलायी। इसके बाद अरान जालेवस्की ने 40वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से जबकि लाचलान शार्प ने 52वें मिनट में एक गोल किया। जैकब एंडरसन ने 55वें और जैक वेल्च ने 58वें मिनट में एक-एक मैदानी गोल दागकर अपनी टीम को जीत दिलाई। 12वें मिनट में भारत को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला जिसे हरमनप्रीत ने गोल में बदल दिया। इस गोल से भारतीय खिलाड़ियों का मनोबल तेजी से बढ़ गया और वे खेल पर हावी हो गये। इसके बाद भारतीय टीम की ओर से सुखजीत ने 18वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से गोल किया। दो मिनट बाद हरमनप्रीत ने एक और पेनल्टी कॉर्नर पर गोल कर भारत को आगे कर दिया और हाफ टाइम से एक मिनट पहले मंदीप ने एक मैदानी गोल कर टीम को 4-2 से बढ़त दिला दी। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया टीम ने आक्रामक खेल दिखाकर चार गोल दागकर मैच जीता लिया।

फिक्सिंग मामले में क्लब क्रिकेटर रिजवान जावेद पर 17 साल का प्रतिबंध

दुबई ।

इंग्लैंड के क्लब क्रिकेटर रिजवान जावेद पर मैच फिक्सिंग मामले में दोषी पाये जाने पर 17 साल का प्रतिबंध लगा दिया गया है। इससे एक प्रकार से रिजवान का करियर ही समाप्त हो गया है। रिजवान को साल 2021 में अबुधाबी टी10 लीग के दौरान मैच फिक्स करने के कई प्रयासों के कारण साढ़े 17 साल के लिए सभी तरह के क्रिकेट से बाहर कर दिया गया गया था। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के 'इंटीग्रिटी' महाप्रबंधक एलेक्स मार्शल ने कहा, 'रिजवान पर पेशेवर क्रिकेटरों को भ्रष्टाचार में शामिल करने के गंभीर प्रयासों के लिए इतना लंबा प्रतिबंध लगाया गया है।' इसके साथ ही बयान में कहा गया, 'इस प्रतिबंध से किसी भी स्तर पर क्रिकेट में फिक्सिंग का प्रयास कर रहे लोगों को एक कड़ा संदेश जाएगा कि खेल को भ्रष्ट करने के किसी भी प्रयास को सहन नहीं किया जाएगा।' अबुधाबी टी10 लीग साल 2017 में शुरू की गई थी। गौरतलब है कि रिजवान उन 8 खिलाड़ियों और अधिकारियों में से एक हैं जिनपर पिछले साल सितंबर में आरोप लगे थे। वहीं इससे पहले बांग्लादेश के ऑराउंडर नासिर हुसैन पर भी ऐसे ही आरोप लगे थे और उनपर भी दो साल का प्रतिबंध लगाया गया था। रिजवान 2021 अबुधाबी टी10 क्रिकेट लीग में फिक्सिंग को लेकर आरोपों का जवाब देने में असफल रहे थे जिसके बाद उन पर प्रतिबंध लगाया गया जो 19 सितंबर 2023 से शुरू होगा। रिजवान पर भ्रष्टाचार रोधी संहिता के विभिन्न अनुच्छेदों के अंतर्गत प्रतिबंध लगाया गया है जिसमें अनुच्छेद 2.1.1 , अनुच्छेद 2.1.3, अनुच्छेद 2.4.4 और अनुच्छेद 2.4.6 शामिल है। रिजवान अपने ऊपर लगे आरोपों का जवाब देने में विफल रहे।

एक जुलाई से शुरू होगा लंका प्रीमियर लीग का पांचवां संस्करण

कोलंबो। बहुप्रतीक्षित लंका प्रीमियर लीग (एलपीएल) का पांचवां संस्करण इस साल 1 जुलाई से 31 जुलाई तक आयोजित किया जाएगा। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) बोर्ड ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की।मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) और द हंड्रेड के साथ ओवरलैप एलपीएल 2024 के लिए एक संभावित चुनौती है। एमएलसी का दूसरा सीजन 4 जुलाई से शुरू हो रहा है और द हंड्रेड 23 जुलाई से 18 अगस्त खेला जाएगा। इसलिए, एलपीएल को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। खिलाड़ियों की भागीदारी के लिए प्रतिद्वंद्वी लीगों की होड़ के बीच शीर्ष स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभा को आकर्षित करने का कार्य। पिछले साल इसी तरह के शेड्यूलिंग टकराव का सामना करने के बावजूद, जिसने विदेशी खिलाड़ियों को सुरक्षित करने की इसकी क्षमता को प्रभावित किया था। एलपीएल अपने रोमांचक क्रिकेट एक्शन से स्थानीय दर्शकों को लुभाने में कामयाब रहा है। एलपीएल का समृद्ध इतिहास एक अलग नाम वाली एक ही टीम के प्रभुत्व से रेखांकित होता है। जाफना स्टालोंस ने पहला सीज़न जीता और जाफना किंग्स ने थिसारा परेरा के नेतृत्व में दूसरे और तीसरे संस्करण में जीत हासिल की। हालांकि, 2023 सीज़न में बी-लव कैंडी के रूप में एक नया चैंपियन उभरा, जिसकी कप्तानी वानिंदु हसरंगा ने की, जो लीग के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में बदलाव का प्रतीक है। 2024 सीजन एक और रोमांचक तमाशा पेश करने का वादा करता है, जिसमें महीने भर चलने वाले टूर्नामेंट में 24 मैचों में पांच टीमें प्रतिस्पर्धा करेंगी। 20 मैचों वाले लीग चरण के बाद प्लेऑफ का फॉर्मेट आईपीएल से मेल खाता है, जिसमें क्वालीफायर, एलिमिनेटर, दूसरा एलिमिनेटर और फाइनल मैच शामिल है।

अफवाह फैलाने वाले शख्स पर भड़कीं रश्मिका मंदाना

रश्मिका मंदाना इन दिनों अपनी फिल्म एनिमल की ब्लॉकबस्टर सफलता का जश्न मना रही हैं। इस फिल्म में उनके किरदार को काफी पसंद किया गया था। अभिनय के अलावा वे सोशल मीडिया पर भी काफी ज्यादा एक्टिव रहती हैं और अक्सर बेबाकी से अपनी बात रखती हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने अफवाह फैलाने वाली एक पोस्ट पर अपनी कड़ी प्रतिक्रिया दी है। एक्स पर किए गए पोस्ट में एक शख्स ने रश्मिका को क्रोट करते हुए लिखा था, मुझे अदावल्लु मीकू जोहरलु की स्क्रिप्ट पसंद नहीं आई, लेकिन मैंने केवल किशोर तिरुमाला और शारवा की वजह से फिल्म साइन की। इस पोस्ट को देखने के बाद अभिनेत्री भड़क उठीं और शख्स को करारा जवाब दे डाला। यूजर को जवाब देते हुए रश्मिका ने लिखा, किसने कहा? मैं फिल्में सिर्फ इसलिए करती हूं, क्योंकि मुझे स्क्रिप्ट पर भरोसा होता है। कलाकारों और क्रू के साथ काम करना एक सम्मान की बात होती है। मुझे बात पर आश्चर्य हो रहा है। ये सभी आधारहीन खबरें कहां से शुरू होती हैं? इस जवाब के बाद रश्मिका को नेटिजंस का समर्थन मिल रहा है। कई लोगों ने खुद के लिए खड़े होने पर अभिनेत्री की प्रशंसा की है। अदावल्लु मीकू जोहरलू की बात करें तो यह फिल्म साल 2022 की तेलुगु भाषा में रिलीज हुई थी। यह एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, जिसमें शारवानंद, रश्मिका मंदाना, खुशबू, उर्वशी समेत कई शानदार कलाकारों ने अभिनय किया। फिल्म का लेखन और निर्देशन किशोर तिरुमाला ने किया था। रिलीज होने के बाद इस फिल्म को दर्शकों से मिश्रित प्रतिक्रिया मिली थी। रश्मिका जल्द ही पुष्पा 2 में नजर आने वाली हैं। फिल्म में वे एक बार फिर अल्लू अर्जुन के साथ नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन सुकुमार कर रहे हैं। इस फिल्म को स्वतंत्रता दिवस के आस पास रिलीज करने की तैयार है। बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की टक्कर सिंघम अगेन से होने की चर्चा जोरों पर है।

हॉरर फिल्म में काम करने ही योजना बना रही हैं काजोल

काजोल हिंदी सिनेमा की मशहूर अदाकारा हैं। अभिनेत्री सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और उनकी फैन फॉलोइंग भी काफी तगड़ी है। अभिनेत्री फैंस से जुड़े रहने के लिए सोशल मीडिया पर आस्क मी सेशन रखती हैं। काजोल के चाहने वालों को भी उनसे सवाल पूछने का बेसब्री से इंतजार रहता है। हाल ही में काजोल ने सोशल मीडिया पर यह सेशन रखा, जिसमें फैंस ने उनसे दिलचस्प सवाल पूछे। उनसे पूछा गया कि अब आप किस तरह की फिल्मों में काम करना चाहेंगी?

हॉरर फिल्म में काम करने की बना रही हैं योजना

काजोल से पूछा गया कि वे किस तरह की फिल्मों में काम करना पसंद करेंगी? इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा, मैं एक कॉमेडी फिल्म करना पसंद करूंगी। मैंने फिल्म इश्क की थी, लेकिन उस फिल्म को काफी समय हो चूका है। इसके आलावा मैं एक मर्डर मिस्ट्री फिल्म में भी काम करना चाहती हूं। मैंने इस तरह की फिल्में नहीं की है। मैं काफी समय से हॉरर फिल्म में काम करने ही योजना बना रही हूं।

काजोल को नहीं है सुपरपावर कि आवश्यकता

काजोल पिछले कुछ वर्षों में कई फिल्मों और वेब सीरीज का हिस्सा रही हैं। अभिनेत्री के नाम कुछ बेहद यादगार किरदार हैं, जब उनसे पूछा गया कि उनका पसंदीदा किरदार कौन सा है? काजोल ने कहा, मुझे मेरे द्वारा निभाए गए सभी किरदार पसंद हैं। मुझे त्रिभंगा में अपना किरदार बहुत पसंद है। मुझे लगता है कि यह फिल्म अद्भुत थी। काजोल से आगे पूछा गया कि अगर आपको कोई सुपरपावर दी जाए, तो आप क्या करेंगी? इस पर काजोल ने जवाब दिया, मुझे किसी सुपरपावर की जरूरत नहीं है। मेरे पास वे सभी सुपरपावर हैं, जिनकी मुझे जरूरत है।

इस फिल्म में नजर आएंगी अभिनेत्री

काजोल के वर्क फ्रंट की बात करें, तो अभिनेत्री दो पत्ती फिल्म में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में काजोल के आलावा कृति सेनन, शाहीर शेख मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म दो पत्ती कृति सेनन, कनिका ढिल्लों और नेटफ्लिक्स द्वारा निर्मित है। यह एक मिस्ट्री थ्रिलर फिल्म है। वहीं, इस फिल्म का निर्देशन बीओबी के नाम से मशहूर शशांक चतुर्वेदी ने किया है।

बॉलीवुड में कदम रखने जा रहीं भाग्यश्री की बेटी अवंतिका दसानी

अभिनेत्री भाग्यश्री की बेटी अवंतिका दसानी आखिरी बार वेब सीरीज मिथ्या में नजर आई थीं। इस सीरीज में उनके अभिनय की दर्शकों ने खूब सराहना की। ओटीटी की दुनिया में पहचान बनाने के बाद अवंतिका बॉलीवुड में कदम रखने को तैयार हैं। अवंतिका की पहली फिल्म का नाम यू शेप की गली है। इस बीच अब हाल ही में अवंतिका ने एक बातचीत के दौरान खुलासा किया कि उनकी मां भाग्यश्री उन्हें और उनके भाई अभिमन्यु दसानी को क्या सलाह देती हैं। साथ ही, उन्होंने स्टार किड होने के फायदे और नुकसान के बारे में भी खुलकर बात की।

भाग्यश्री अपने बच्चों को देती हैं यह सलाह

अवंतिका ने कहा, मेरे और मेरे भाई दोनों के लिए, वे हमेशा कहती थीं कि चाहे आप कितने भी अच्छे हों या आपको कितनी भी सफलता क्यों न मिल जाए, लेकिन यहां स्थिरता नहीं है। यहां बहुत सारे उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, अवंतिका ने बताया कि उनकी मां भाग्यश्री उन्हें क्या सलाह देती हैं। अभिनेत्री ने कहा, उनकी मां कहती हैं कि चाहे अच्छा या बुरा, आपको उससे संतुष्ट रहना चाहिए और खुद पर गर्व करना चाहिए।

अवंतिका दसानी ने स्टार किड होने के फायदे और नुकसान के बारे में बात करते हुए कहा, आप लगता है कि आप अकेले नहीं हैं, आपके साथ इंडस्ट्री में कोई तो आपका है। हालांकि, मेरी मां ने कई साल पहले इंडस्ट्री को छोड़ दिया था, इसलिए यह पहले जैसा नहीं है। अभी भी कुछ फायदे हैं, क्योंकि मेरी मां और भाई को इंडस्ट्री में बहुत सम्मान मिला है इसलिए मुझे भी वही सम्मान मिलता है। मुझे एक चाय मिल सकती है, लेकिन मुझे किसी फिल्म का ऑफर नहीं मिलेगा।

तलाक के बाद भी आमिर के साथ सहज हैं किरण राव

किरण ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान आमिर खान के साथ अपने रिश्ते को लेकर खुलकर बात की। उन्होंने बताया की वे तलाक के बाद भी एक-दूसरे के अच्छे दोस्त हैं और साथ में काम के लिए सहयोग भी करते हैं। किरण राव इन दिनों अपनी आगामी निर्देशित फिल्म लापता लेडीज की रिलीज के लिए तैयार हैं। किरण का इस फिल्म में उनके पूर्व पति आमिर खान भी सहयोग कर रहे हैं। निर्देशक अपनी इस फिल्म का आमिर खान और क्रू के साथ फिल्म प्रमोशन जोरों शोरों से कर रही हैं। इस फिल्म के ट्रेलर और पोस्टर को दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। किरण ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान आमिर खान के साथ अपने रिश्ते को लेकर खुलकर बात की। उन्होंने बताया की वे तलाक के बाद भी एक-दूसरे के अच्छे दोस्त हैं और साथ में काम के लिए सहयोग भी करते हैं।

आमिर के साथ अपने रिश्ते पर कही यह बात

किरण ने कहा, हम दोनों के लिए तलाक के बाद भी साथ काम करना बहुत स्वाभाविक था। आमिर और मैं एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह से समझते है। अभी हम एक ही हाउसिंग सोसाइटी में रहते हैं। मेरी सास ऊपरी मंजिल पर रहती हैं, रीना भी पास में रहती है। ऐसा नहीं है की हम दोनों का तलाक हो गया है, तो हम लोगों के बीच में दूरी आ जाएगी।

उन्होंने आगे कहा, वास्तव में हम सभी में लोग एक-दूसरे को पसंद करते हैं। मैं रीना के साथ घूमती हूं, हम लोग साथ में खूब एन्जॉय करते हैं और इससे आमिर को कोई परेशानी नहीं है। किरण ने आगे कहा कि अगर आपका तलाक हो जाता है, तो ये ऐसे रिश्ते हैं जिन्हें आपको नहीं खोना चाहिए। हालांकि, ये लोगों के लिए हैरान करता है कि दो तलाकशुदा व्यक्ति एक साथ काम कैसे कर सकते हैं? उन्होंने आगे बताया, अगर हमारी शादी टूटने के कारण हमारा रिश्ता खत्म हो जाता, तो मुझे दुख होता।

भूल भुलैया-3 विद्या बालन के साथ होंगे कार्तिक

फिल्ममेकर अनीस बज्मी भूल भुलैया 3 लेकर आ रहे हैं जिसको लेकर फैंस काफी एक्साइटेड हैं। अब तक यह तो पता चल गया है कि तीसरे पार्ट में कार्तिक आर्यन और विद्या बालन साथ हैं, लेकिन भुल भुलैया के प्रशंसक यह जानना चाहते थे कि क्या अक्षय कुमार भी इस फिल्म का हिस्सा होंगे। अनीस ने अब इस बात को भी क्लीयर कर दिया है। अनीस ने जूम टीवी से बात करते हुए कहा, अक्षय इस फिल्म का हिस्सा नहीं होंगे। मैं तो उनके साथ काम करने के लिए मर रहा हूं, लेकिन मुझे ऐसी स्क्रिप्ट मिल ही नहीं रही जहां हम दोनों साथ काम कर सकें। भविष्य में शायद ऐसा हो। फिल्म के तीसरे इंस्टॉलमेंट में विद्या बालन, कार्तिक आर्यन ही हैं। अनीस ने आगे बताया कि फिल्म के पहले दिन का शूट 10 मार्च को होगा। हालांकि उन्होंने अभी बिल्कुल पक्का यह डेट फिक्स नहीं की है। विद्या बालन को लेकर अनीस ने कहा, 'देखिए विद्या ने मेरी फिल्म थैंक्यू में 3 दिन का रोल किया था। मुझे याद है मैंने उन्हें कॉल किया था और उन्होंने बिना टाइम लिए हां कहा था। मैं आज तक उनकी वो बात नहीं भूल पाया हूं तो वहां से सब शुरू हुआ और आज मैं इस स्टेज पर हूं कि सेट पर जाने के लिए तैयार हूं।' बता दें कि भूल भुलैया के पहले पार्ट में अक्षय कुमार और विद्या बालन लीड रोल में थे। फिल्म में विद्या ने मंजुलिका का किरदार निभाया था। यह फिल्म सुपरहिट थी। इसके बाद दूसरे पार्ट में कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी और तब्बू लीड रोल में थे। इस फिल्म ने भी दर्शकों का दिल जीता और बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की यानी यह पार्ट भी सुपरहिट था। अब तीसरे पार्ट में कार्तिक और विद्या मिलकर क्या कमाल करते हैं, यह देखेंगे।

कभी फ्रॉक वाली सपना, तो कभी बात-बात में बहकने वाले जग्गू दादा, कृष्णा अभिषेक और कॉमेडी का रिश्ता किसी से छिपा नहीं है लेकिन सिर्फ कॉमेडी ही कृष्णा की पहचान नहीं है। कृष्णा एक अनूठे शो ओएमजी ये मेरा इंडिया के होस्ट भी हैं, जिसका वो दसवां सीजन होस्ट करने जा रहे हैं। यह शो देश के कोने-कोने से हैरतअंगेज जगहों से लोगों को रूबरू कराता है।

लकीर के फकीर होते हैं फिल्मवाले, जो चल गया, वही कराएंगे

ये शो दिखाता है कि मैं ऑलराउंडर हूं

शो के साथ अपने लंबे रिश्ते के बारे में कृष्णा बताते हैं, मैं स्लैपस्टिक कॉमिडी और अलग-अलग करैक्टर तो करता ही रहता हूं पर यह शो मुझे एक अलग तरह की इज्जत देता है। एक कद देता है कि कृष्णा यह भी करता है। हर ऐक्टर बस यही चाहता है कि उसे ऑलराउंडर समझा जाए। जैसे मैं कॉमिडी करता हूं, डांस करता हूं, मगर ये शो दिखाता है कि मैं ऑलराउंडर हूं। मैं ऐसा सीरियस काम भी कर सकता हूं। दूसरे, मैंने स्कूल में इतनी पढ़ाई नहीं की जितना 8 साल में इस शो से सीखा है। कई प्रेरक कहानियां मुझे इस शो से जानने को मिली हैं।

लकीर के फकीर होते हैं फिल्मवाले

कृष्णा फिल्मों से दूर क्यों हैं? इस पर वह कहते हैं, ये फिल्मवाले न लकीर के फकीर होते हैं। जो चल रहा है बार बार वही कराएंगे। मैं खुशकिस्मत हूं कि अभी उम्र मेरे साथ है। ऐसा नहीं है कि बुड्ढे हो रहे हैं तो जल्दी जो मिल रहा कर लो, लेकिन मुझे ये साबित करना है कि जो आदमी सबसे ज्यादा हंसाता है, वो सबसे ज्यादा रुला भी सकता है। इसलिए, मैं ऐसे अलग-अलग रोल करना चाहूंगा।

रिस्क लेने में ही तो मजा है

कृष्णा कपिल शर्मा शो का अहम हिस्सा बन चुके हैं। लेकिन अब ये शो टीवी से ओटीटी पर आ रहा है। साथ ही पहली बार कपिल, कृष्णा, सुनील ग्रोवर सब साथ दिखेंगे? इस बदलाव पर कृष्णा कहते हैं, ओटीटी पर थोड़ी तो ऑडियंस बदलेगी पर जिंदगी में थोड़ा रिस्क लेकर काम नहीं किया तो क्या किया। टीवी पर वही करते-करते इतने साल बीत गए थे तो ये अच्छी बात है कि वो नई कोशिश कर रहे हैं कि ओटीटी पर शहरी ऑडियंस भी शो देखे, जो कि पहले भी देखती ही है। रही बात, सुनील के साथ आने की तो मैं सुनील को देखकर बहुत खुश हुआ। वह बहुत अच्छा ऐक्टर, बहुत अच्छा इंसान है। हम सब मिलजुल कर इंजॉय कर रहे हैं। किसी का कोई ईगो क्लैश नहीं है। कोई कॉम्पिटिशन नहीं है।

मामा जी साथ रिश्ता सुलझाना चाहता हूं

कृष्णा का मामा गोविंदा के साथ अनबन की खबरें भी हमेशा चर्चा में रही हैं। हालांकि कृष्णा चाहते हैं कि यह मनमुटाव खत्म हो जाए। वह कहते हैं, मैं चाहता हूं कि मामा जी के साथ रिश्ता सुलझ जाए। मैं उनकी बहुत इज्जत करता हूं, सम्मान करता हूं। मैं चाहता हूं कि हम फिर से एक परिवार बन जाए। आप सोचो, मैंने टीवी पर कॉमिडी में इतना नाम कमा लिया। वो कॉमिडी फिल्मों में लीजेंड, हम दोनों साथ में आ जाएं तो क्या हो जाएगा। हम दोनों साथ में खड़े होकर कोई गैग कर दे या डांस कर दे तो लोगों को तो मजा आ जाएगा, वो मैं चाहता हूं कि हम साथ में आएं।

पत्नी कश्मीरा के साथ बॉन्ड पर कृष्णा

वहीं, पत्नी कश्मीरा के साथ अपने रिश्ते की मजबूती का श्रेय वे अपनी दोस्ती को देते हैं। कृष्णा के मुताबिक, मैं और कश्मीरा दोस्त बहुत अच्छे हैं। कश्मीरा कभी कोई नुक्ताचीनी या चिकचिक नहीं करती। उसने जिंदगी में आज तक मेरा फोन चेक नहीं किया, ना वो मुझे टॉर्चर करती है, न मैं उसको करता हूं। हम पति पत्नी की तरह रहते ही नहीं है। हम हाउसमेट्स की तरह रहते हैं कि वो भी भाड़ा देकर रह रही है, मैं भी रह रहा हूं। मगर जहां बतौर पत्नी खड़े रहना है, वो हमेशा मेरे लिए खड़ी रहती है और जब उसे कोई तकलीफ हो तो मेरे अंदर का पति जाग जाता है।